सेतुषाम সেতুষাম

VIBRANT MAITHILI

स्वर्गच्छ ज्योतिर्गच्छ

(५७.१) ॥ स्वर्ग्यम्, सेतुषाम पुरुषगतिर्वा, विशोकं वा । प्रजापतिस्त्रिष्टुबात्मा ॥

हाउहाउहाउ । सेतूᳪस्तर । (त्रिः) । दुस्त । रान् । (द्वे त्रिः) । दानेनादानम् । (त्रिः) ।
हाउहाउहाउ । अहमस्मिप्रथमजाऋताऽ२३स्याऽ३४५ ॥ हाउहाउहाउ ।
सेतूᳪस्तर । (त्रिः) दुस्त । रान् । (द्वे त्रिः) । अक्रोधेनक्रोधम् । (त्रिः) ।
अक्रोधेनक्रोधम् । हाउहाउहाउ । पूर्वंदेवेभ्योअमृतस्यनाऽ२३माऽ३४५ ॥
हाउहाउहाउ । सेतूᳪस्तर । (त्रिः) । दुस्त । रान् । (द्वे त्रिः) । श्रद्धयाश्रद्धाम् । (त्रिः) ।
हाउहाउहाउ । योमाददातिसइदेवमाऽ२३वाऽ३४५त् ॥ हाउहाउहाउ । सेतूᳪस्तर । (त्रिः) ।
दुस्त । रान् । (द्वे त्रिः) । सत्येनानृतम् । (त्रिः) । हाउहाउहाउ ।
अहमन्नमन्नमदन्तमाऽ२३म्रीऽ३४५ । हाउहाउहाउवा ॥ एषागतिः । (त्रिः) ।
एतदमृतम् । (त्रिः) । स्वर्गच्छ । (त्रिः) । ज्योतिर्गच्छ । (त्रिः) ।
सेतूᳪस्तीर्त्वाचतुरा२३४५ः ॥ (दी० १०६ । प० ७४ । मा० ६२) ३४ (घा । ८९)

HEAVEN. I CROSS THE BRIDGES (OR DAMS). THE MOVEMENTS (OR DESTINIES) OF MEN ARE TRULY PRAJĀPATI (THE LORD OF CREATION). BṚHATĪ AND TRIṢṬUP ARE THE SOUL (OF THE CHANT/METER).
I AM THE FIRST-BORN OF THE TRUTH/COSMIC ORDER ((ṚTA)), THE NAVEL (SOURCE) OF IMMORTALITY FOR THE ANCIENTS.
(I ATTAIN) FAITH THROUGH FAITH.
HE WHO GIVES (THIS OFFERING/KNOWLEDGE) TRULY PROTECTS (OR ATTENDS TO) THE DIVINE.
(I OVERCOME) UNTRUTH BY TRUTH.
I HAVE CHEWED (OR CONSUMED) THE MOVABLE AND THE IMMOVABLE.
THIS IS IMMORTALITY.
I DESIRE HEAVEN.
I DESIRE TO GO TO THE LIGHT.
HAVING CROSSED THE FOUR BRIDGES(OR DAMS)

Pothi.com
9 789357 173582

सेतुषाम Vibrant Maithili

সম্পাদক: আশীষ অনচিন্হাৰ
सम्पादक: आशीष अनचिन्हार

सेतुषाम সেতুষাম

VIBRANT MAITHILI

स्वर्गच्छ ज्योतिर्गच्छ

दानेनादानम् अक्रोधेनक्रोधम् सत्येनानृतम् श्रद्धयाश्रद्धाम्

सेतुषाम সেতুষাম

VIBRANT MAITHILI

स्वर्गच्छ ज्योतिर्गच्छ

दानेनादानम्

अक्रोधेनक्रोधम्

सत्येनानृतम्

श्रद्धयाश्रद्धाम्

सेतुषाम: Vibrant Maithili

© Editor: Ashish Anchinhar

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 𑒑𑓂𑒫𑓀𑒑 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱:

ISBN: 978-93-5717-358-2
COVER DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR
“SETU-SĀMA-Vibrant Maithili” A Critical Appreciation of the Works of Gajendra Thakur & Preeti Thakur (2026, Language: Maithili)

समानान्तर परम्पराक विद्यापति**-** *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान**-** मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा)*

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (26.2)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च॥हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

<u>Videha: Maithili Literature Movement</u>

ꣻ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ᳵंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিবন্তবিক্ষ ᳵং শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিবাপ: শান্তিবোষধয: শান্তি রনস্পতয: শান্তির্বিশ্বে দেরা: শান্তির্ব্রহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্রহ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতবিক্ষমে, পৃথ্বীপব, জলমে, ঔষধমে, রনস্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্রহ্মমে শাঁতি হুঅয।

ওঁ-ব্রহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তবেগণ, অংতবিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যূলোকক বীচ, আপ:-জল, রিশ্বেদেরা- সভ দেরতা, ব্রহ্ম- সর্জক।

ꣻ

ॐ, स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

ওঁ, স॒হস্র॑ শীর্ষা॒ পুরু॑ষঃ স॒হ॒স্রা॒ক্ষঃ স॒হস্র॑ পাত্।

स भूमिं ᳵंग वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा। अत्य॑तिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিঁ॑ ᳵং রি॒ শ্বতো॑ রৃ॒ ত্বা। অত্য॑ তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু॒ লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक

वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्वा त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्याग्ँ॒ शू॒द्रो अ॑जायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भू॒मिर्दिशः॒ श्रोत्रा□त्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ত্।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐(Swastik)

ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিরস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

৲ (Bengali Anji, Siddham)

𑒀 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑒀

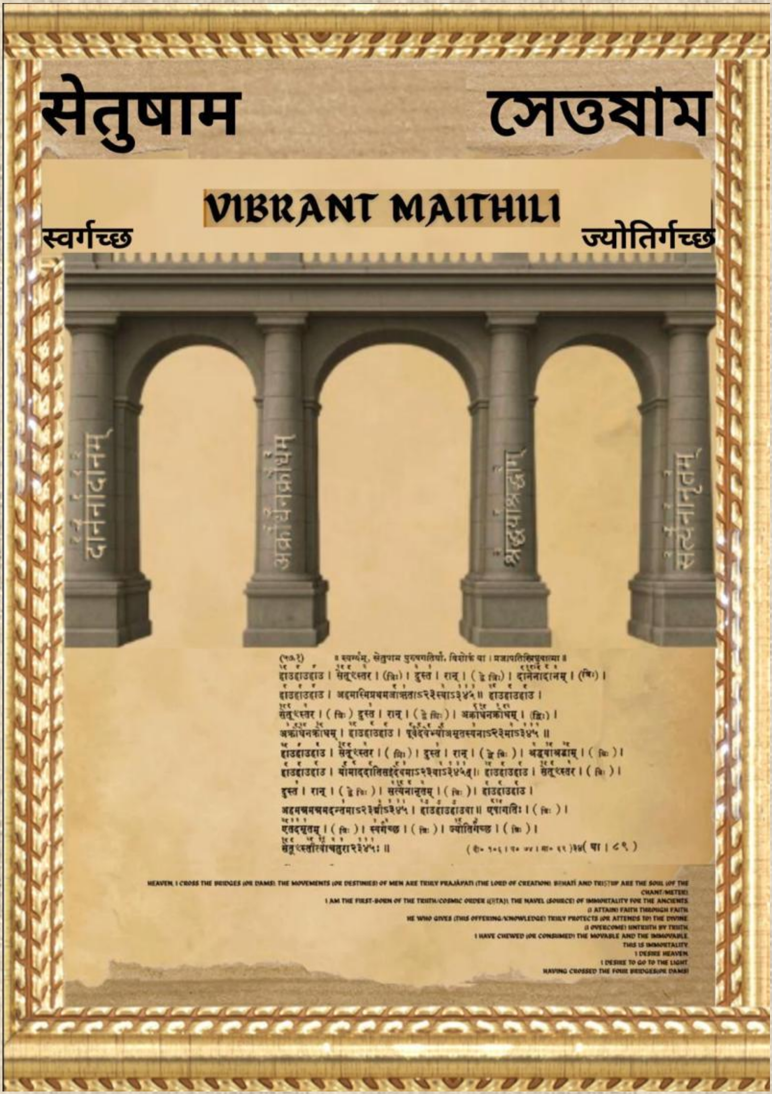
सेतुषाम
সেতুষাম
VIBRANT MAITHILI
स्वर्गच्छ
ज्योतिर्गच्छ
दानेनादानम्
अक्रोधेनक्रोधम्
श्रद्धयाश्रद्धाम्
सत्येनानृतम्
HEAVEN, I CROSS THE BRIDGES (OR DAMS). THE MOVEMENTS (OR DESTINIES) OF MEN ARE TRULY PRAJĀPATI (THE LORD OF CREATION). BṚHATĪ AND TRIṢṬUP ARE THE SOUL (OF THE CHANT/METER)
I AM THE FIRST-BORN OF THE TRUTH/COSMIC ORDER ((ṚTA)). THE NAVEL (SOURCE) OF IMMORTALITY FOR THE ANCIENTS
(I ATTAIN) FAITH THROUGH FAITH
HE WHO GIVES (THIS OFFERING/KNOWLEDGE) TRULY PROTECTS (OR ATTENDS TO) THE DIVINE
(I OVERCOME) UNTRUTH BY TRUTH
I HAVE CHEWED (OR CONSUMED) THE MOVABLE AND THE IMMOVABLE
THIS IS IMMORTALITY
I DESIRE HEAVEN
I DESIRE TO GO TO THE LIGHT
HAVING CROSSED THE FOUR BRIDGES(OR DAMS)

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ।।1।।

अनुक्रम

समर्पण (पृष्ठ 2-2)

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे...- आशीष अनचिन्हार (पृष्ठ 3-16)

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो...- प्रस्तुति-आशीष अनचिन्हार (पृष्ठ 17-25)

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना। धियो विश्वा वि राजति

खण्ड-1: प्रीति ठाकुर (पृष्ठ 26-34)

1. बाल मनक सिद्धहस्त लेखिका-श्रीमती प्रीति ठाकुर- मुन्नी कामत (पृष्ठ 27-30)

2. मैथिली चित्रकथा मे प्रीति ठाकुरक योगदान- इरा मल्लिक (पृष्ठ 31-34)

पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा । पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥

खण्ड-2: गजेन्द्र ठाकुर (पृष्ठ 35-166)

(इंटरनेट, भाषा, पञ्जी, लिपि, शब्दकोश, संपादन, अनुसंधान, साहित्य एवं अन्य)

1. मैथिलीक डिजिटल युगक निर्माता: गजेन्द्र ठाकुर- कैलाश कुमार ठाकुर (पृष्ठ 36-59)

2. डिजिटल युगमे मैथिली: विदेह आ गजेंद्र ठाकुर-विकास वत्सनाभ (पृष्ठ 60-70)

3. मिथिलाक पंजी संरक्षणमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान- भैरव लाल दास (पृष्ठ 71-80)

४. डायभर्सिटी आ विदेह: आधुनिक मैथिली साहित्यक चेतनामूलक पुनर्जागरण- पूनम झा 'सुधा' (पृष्ठ 81-86)

5. डायवर्सिटी आ विदेह- डा. शिव कुमार प्रसाद (पृष्ठ 87-109)

6. विदेह आ नव लेखक- कल्पना झा (पृष्ठ 110-125)

7. मैथिलीमे गैर सवर्ण लेखक कमी एवं श्री गजेन्द्र ठाकुर- मुन्नाजी (पृष्ठ 126-128)

8. विदेह पत्रिकाक जनपक्षधरता- डॉ. धनाकर ठाकुर (पृष्ठ 129-133)

9. गजेन्द्र ठाकुर आ मैथिली समीक्षाशास्त्र- हितनाथ झा (पृष्ठ 134-140)

10. गजेन्द्र ठाकुरः लेखक, इतिहासकार आ आधुनिक मैथिली अध्ययनक शिल्पकार- प्रवीण कुमार झा (पृष्ठ 141-146)

11. अनुपम अतुल्य योगदान- कुन्दन कर्ण (पृष्ठ 147-148)

12. मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुर जीक योगदान- जगदानंद झा 'मनु' (पृष्ठ 149-152)

13. गजेन्द्र ठाकुरः मैथिली भाषा-साहित्यक नवजागरणक सेतु-पुरुष-उज्ज्वल कुमार झा (पृष्ठ 153-160)

14. मिथिला-मैथिलीक मंच सँ गजेंद्र ठाकुरक अनुपस्थिति: कारण एवं प्रभाव- मुकेश आनंद (पृष्ठ 161-166)

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च-सहयोगी लेखक परिचय (पृष्ठ 167-170)

सम्पादक-परिचय (पृष्ठ 171-171)

मधुमतीशेषधीर्घाव- समस्त पाठल लेल (पृष्ठ 172-172)

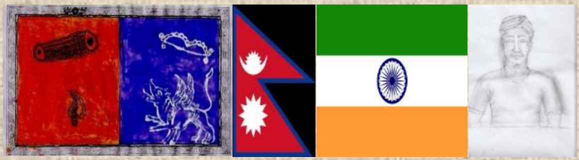

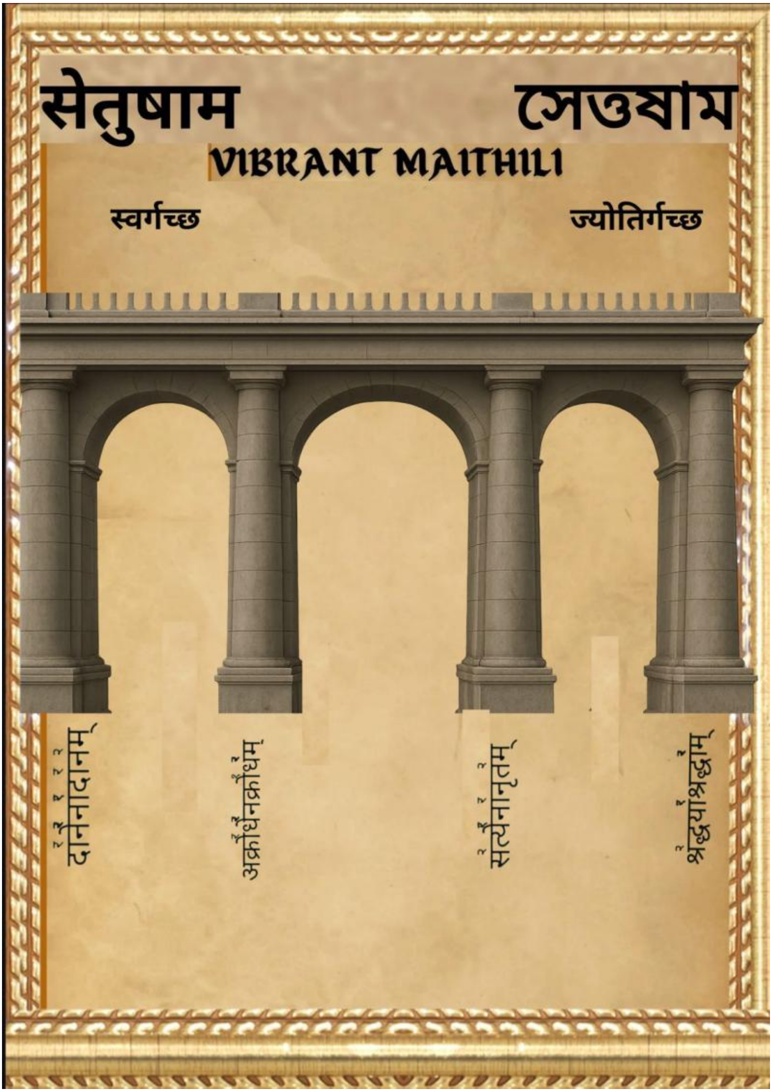
सेतुषाम
সেতুষাম
VIBRANT MAITHILI
स्वर्गच्छ
ज्योतिर्गच्छ
दानेनादानम्
अक्रोधेनक्रोधम्
सत्येनानृतम्
श्रद्धयाश्रद्धाम्

समर्पण

सिरजनहारकेँ

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे, कविनामुपमश्रवस्तम्।

ज्येष्ठराजं ब्राह्मणं ब्राह्मणस्पत्, आ नः शृण्व बलोतिभिः सीद सदनम्।।

सामवेद केर अर्थ भेलै "गानवेद" अर्थात एहन वेद जकरा गाएल जा सकै। ऋगवेद संहिता छै माने ओकर पाठ होइत छै गायन नहि। ऋगवेदक पाठ तीन स्वर उदात, अनुदात ओ स्वरित (एहि तीनूक आरो उपभेद सभ सेहो अछि) आधारित छै। बादमे ऋगवेदक ओहन ऋचा सभहक संकलन भेलै जकरा गाओल जा सकैए आ ओहिमे आरो किछु ऋचा जोड़ि कऽ नव वेद बनलै 'सामवेद'। गीतामे कृष्ण वेदमे सामवेदकेँ सभसँ प्रमुख मानै छथि तऽ ओकर पाछूक कारण गायन छै। चूँकि कृष्ण अपने कलाकार (बाँसुरी वादक) तँइ स्वाभाविक रूपें ओ सामवेदक महत्व देलाह, ई स्वाभाविक आ सिंपल बात छै।

प्रवाद छै जे सामवेदक गायन लेल सोहर गीतक स्वर आधार बनलै। जँ एहि प्रवादपर विश्वास करी तऽ कहल जा सकैए जे संस्कृत गायनक आधार जनभाषाक गीत सोहर छलै। सोहरक तीन स्वर (षडज्-सा, ऋषभ-रे, गांधार-गा) सामवेदक प्रारंभिक गायनक आधार बनलै। बादमे आर शेष स्वरक सेहो विस्तार भेलै। प्रायः

संगीतक सभ विद्वान मानै छथि जे भारतीय शास्त्रीय संगीतक आधार सामवेद छै, अर्थात जँ प्रवादकेँ सही मानल जा तऽ भारतीय शास्त्रीय संगीतक मूल आधार जनभाषाक सोहर भेलै। सामवेद गायनक 1000 सँ ऊपर शाखा (गायनक पद्धित वा तरीका) छलै से पाणिनि अपन महाभाष्यमे सूचित करैत छथि। मुदा वर्तमानमे एकर तीने टा शाखा अछि- कौथुमीय शाखा, राणायनीय शाखा एवं जैमिनीय शाखा। मिथिला सहित अधिकांश उत्तर भारतमे कौथुमीय शाखा प्रचलित अछि, मुदा आनो शाखा केर पाठ होइते अछि।
चूँकि सामवेदक गायन लोकभाषासँ प्रेरित छल तँइ ओकर बहुत रास चीज लेबऽ पड़लै जाहि कारणे तात्कालीन ऋगवैदिक सभ ओकर विरोधो केलखिन। ऋगवेदमे मूल मंत्रमे जे शब्द छै तकरे पाठ होइत छै मुदा गायन लेल श्वासक अनुरूप पाँति सभ चाही। तँइ सामवेदक गायनमे मूल मंत्रक अतिरिक्त आनो सार्थक पाँति सभ गाओल जाइत छै जाहिसँ लयपूर्ण हो आ लोककेँ नीक लागै। कौथुमीय शाखा, राणायनीय शाखा एवं जैमिनीय शाखा तीनू शाखामे मूल मंत्रक संगे से सार्थक शब्द देबाक प्रचलन छै से अलग-अलग छै। हरेक शाखाक अनुरूपे मंत्रक संख्या सेहो अलग-अलग छै। कोनो शब्दक कोन अक्षरपर कतेक देर ठहरल जाए तकरो विधान छै आ ओकरा अपन-अपन तरीकासँ इंगित कएल जाइत छै। हरेक शाखाक अनुरूपे मंत्रक शब्द आ मंत्रसँ अलग लेल शब्दकेँ कतेक बेर गायन हो तकर निश्चित नियम छै। लोकभाषाक गीतमे जकरा टेक कहल जाइत छै (जेना सोहरमे ' ललना रे' बिसहरि गीतमे राम.. आदि) सेहो लेल गेलै। टेक केर अपन कोनो अर्थ नहि होइत छै मुदा ओ गायनकेँ पूर्ण करैत छै। सामवेदमे एहि टेक केर नाम देल गेलै "स्तोभ"। सामवेदक कौथुमीय शाखा

केर स्तोभ भेल 'हा उहा'। आन शाखा केर स्तोभमे सेहो परिवर्तन छै। सामवेदक कौथुम शाखामे आरण्य गानमे एकटा मंत्र छै जकरा "सेतुषाम (सेतुसाम) कहल जाइत छै। एहि मंत्रक मूल स्वरूप एना अछि-

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम।
यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्नमन्नमदन्तमद्मि॥

एहि मंत्रक अर्थ भेलै- "हम ऋत (ब्रह्मांडीय व्यवस्था)मे सभसँ पहिने जन्म लेबऽ बला छी, हम देव-देवतासँ सेहो पहिने भेल छी आ हमर नाम अमृत अछि, जे हमरा दैए सएह हमर रक्षा करैए, हमहीं अन्न छी आ अन्नकेँ खाए बलाकेँ सेहो हमहीं खाइत छी"। संक्षेप रूपमे बुझबाक हो तऽ ई बूझी जे ई मंत्र ब्रह्मांडक ओहि स्वरूपक वर्णन छै जे सभमे समाहित छै आ जकरामे सभ समाहित छै। मुदा जखन अही मंत्रक साम-गायन होइत छै तखन एकर स्वरूप केहन होइत छै से देखू-

हाउहाउहाउ। सेतूंश्स्तर। (त्रिः) ।दुस्ता।रान्। (द्वे त्रिः) ।दानेनादानम्। (त्रिः) ।हाउहाउहाउ। अहमस्मिप्रथमजाऋताऽस्याऽ॥ हाउहाउहाउ ।सेतूंश्स्तर। (त्रिः) ।दुस्त। रान्। (द्वे त्रिः)। अक्रोधेनक्रोधम्। (द्विः) ।अक्रोधेनक्रोधम्। हाउहाउहाउ। पूर्वंदेवेभ्योअमृतस्यनाऽमाऽ॥ हाउहाउहाउ ।सेतूंश्स्तर। (त्रिः) । दुस्त। रान्। (द्वे त्रिः) ।श्रद्धयाश्रद्धाम्। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। योमाददातिसइदेवमाऽवाऽत्॥ हाउहाउहाउ ।सेतूंश्स्तर। (त्रिः) ।दुस्त। रान्। (द्वे त्रिः) ।सत्येनानृतम्। (त्रिः)। हाउहाउाउ। अहमन्नमन्नमदन्तमाऽद्मीऽ। हाउहाउहाउवा॥

एषागतिः। (त्रिः)। एतदमृतम् । (त्रिः)। स्वर्गच्छ। (त्रिः)।ज्योतिर्गच्छ। (त्रिः) ।सेतूंःस्तीर्त्वाचतुरा।

(सामवेदः/कौथुमीया/संहिता/आरण्यकगेयः/प्रपाठकः 2.।/ अर्कपर्व/ स्वर्ग्यम् सेतुषाम)

मूल पाठक अतिरिक्त एहि गायनमे सेतूंःस्तर, दुस्ता।रान्।, दानेनादानम्, अक्रोधेनक्रोधम्, श्रद्धयाश्रद्धाम्, सत्येनानृतम्, एषागतिः। (त्रिः)। एतदमृतम् । (त्रिः)। स्वर्गच्छ। (त्रिः)।ज्योतिर्गच्छ। (त्रिः) ।सेतूंःस्तीर्त्वाचतुरा। आदि सभ जोड़ल गेलै। संगहि एहिमे कोन शब्दकेँ कतेक बेर गाएल जाए तकर निर्देश लीखल गेल छै जेना उदाहरण लेल- सेतूंःस्तर। (त्रिः) एहिमे कोष्ठकमे त्रिः लीखल गेल छै तकर मतलब भेलै जे करा एहि ठाम तीन बेर गाएल जेतै। आन संपादक सभ 3 अंक लीखि सेहो एकर संकेत दैत छथि। आन संकेत सभकेँ कोनो विज्ञ वेदपाठीसँ सीखल जा सकैए।

ऊपरक एहि मंत्रमे जे आन पाठ जोड़ल गेलै, तकर सरल भाव जे हमरा बुझाइए ओ छै- "चारि टा सेतु बनाउ, चारि टा बाधा पार करू"। कोन बाधा अछि आ कोना पार करू तऽ ई बाधा भेल क्रोध, लोभ, अश्रद्धा एवं असत्य (फूसि)। एहि चारूकेँ कोना पार करब तऽ क्रोध नामक बाधाकेँ अक्रोध माने शांतिक सेतुसँ पार करू। लोभ नामक बाधाकेँ दानक सेतुसँ पार करू। अश्रद्धा नामक बाधाकेँ श्रद्धा सेतुसँ पार करू। असत्य (फूसि) नामक बाधाकेँ सत्यक सेतुसँ पार करू। स्वर्ग दिस जाउ, इजोत दिस जाउ। आब मूल मंत्र आ जोड़ल पाठ दूनू अर्थ मिला कऽ देखबै तऽ अपने बुझा

जाएत जे एहिमे चारि बाधाकेँ जे पार कऽ लेताह से ब्रह्मांडक ओहने स्वरूप बनि जेताह जे सभमे समाहित छथि आ जकरामे सभ समाहित छै। बादमे अही वाक्य सभकेँ आन-आन ग्रंथमे समयानुकूल प्रयोग सेहो भेलै जेना महाभारतक एक श्लोक देखू-

अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्। असाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन। जयेत् सत्येन चानृतम्।।

(महाभारतम्/उद्योग/39/73) क्रोधपर शांतिसँ, दुष्ट-दुर्जन (असाधु) पर सदाचारसँ, कंजूसपर दानसँ एवं झूठ-फूसिपर सत्यसँ विजय प्राप्त कएल जा सकैए। बौद्ध धर्मक ग्रंथ सभमे तात्कालीन भाषामे इएह बात सभ लीखल गेलै।

एहि संसारमे किछु लोक एहन होइत छै जिनकर नैतिकता जीवनक हरेक परिस्थितिमे नैतिक बंधनमे रहि अपन काज करैत छै, आ जँ दोसर शब्दमे कही तऽ कहल जा सकैए जे ओहन लोक अपन निजी जीवन आ सामाजिक जीवनकेँ यथासंभव एक समान रखैत छथि। जँ एहन लोक लेखन कार्यसँ जुड़ल होइथ तऽ हुनकर लेखन एवं आचरण एक समान रहैत छनि। एहने किछु लोकमेसँ एक छथि- गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुर अपन जीवनमे सामवेदक सेतुषाम मंत्रक चारि सेतु बना चारू बाधा पार कऽ लेने छथि आ अपना भरि आनो लोककेँ एहि लेल प्रेरित करैत छथि।

मात्र व्यक्तिगत जीवनेमे नहि गजेन्द्र ठाकुर साहित्योमे सेतु सभ बना बाधासँ पार केने छथि। मैथिलीमे साहित्यमे मुख्यतः चारि बाधा

अछि। पहिल-मंच-माला-माइक, दोसर-पुरस्कार, तेसर-साहित्यिक चोरी, आ चारिम-दोसरकेँ आगू नै बढ़ऽ देब, सहायता नै करब। गजेन्द्र ठाकुर साहित्यिक मंच-माला-माइकसँ दूर छथि, पुरस्कारक फेरमे नहि छथि, साहित्यिक चोर सभकेँ नाम सहित उजागर केने छथि आ गजेन्द्र ठाकुर जतेक लेखककेँ आगू अनलाह से पछिला ५0-६0 बर्खमे नहि भेल छल। जाहि भाषाक साहित्यमे उपरोक्त चारू बाधाकेँ पार कऽ लेल जाए से भाषा जीवंत भऽ जाएत।

मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुरक योगदानक ऊपर हमरा द्वारा संपादित ई दोसर पोथी अछि। जँ दोसर शब्दमे एहुना लीखी जे "मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुरक योगदानक ऊपर किनको द्वारा संपादित ई दोसर पोथी अछि" तैयो बात बराबरे हेतै। हमर संपादित पहिल पोथी "प्रीति कारण सेतु बान्हल-Redefining Maithili" छल जे अपन नाम, प्रस्तुतिकरण एवं आलेखक गुणवत्ता लेल सराहल गेल। आ ई सूचना येन-केन-प्रकारेण, एकटप्पी-दूटप्पी आदिसँ हमरा प्राप्त भेल। हमर ओहि पोथीपर कोनो खास समीक्षा, आलोचना नहि आएल आ से हमरा लेल कोनो नव वस्तु नहि। ई मैथिली साहित्यक पहिचान छै। तैयो चारि टा समीक्षा तऽ हमरा नजरिमे आएल जकरा एकै संगे विदेहक अंक ३१४, १५ जुलाई २०२५ मे प्रकाशित कएल गेल।

मुदा बाधा सभ रहितो गजेन्द्र ठाकुर-प्रीति ठाकुरक योगदानपर हम दोसरो पोथी संपादित कऽ सकलहुँ ताहि लेल असल धन्यवादक पात्र छथि मैथिलीक लेखक एवं पाठक जिनकर रचनात्मक सहयोगसँ हम एहि ठाम धरि आबि सकलहुँ। एहि दोसर पोथीक

संपादन करैत काल किछु सावधानी हम रखलहुँ अछि जकरा पाठक लग देब उचित बुझाइए जेना-

1) "प्रीति कारण सेतु बान्हल-Redefining Maithili" पाठक लेल पोथी मूल पोथी भेलनि। माने ओहिमे जतेक सूचना छै से संपूर्ण सूचना आब दोसर-तेसर पोथीमे आबि सकत से संभवो नहि छै आ जरूरियो नहि। मुदा तकर बादो अनेक अर्थमे ई दूनू पोथी एक-दोसरक पूरक अछि। कारण एहि पोथीमे ओहि विषयक लेख सभ अछि जे कि पहिल संपादित पोथी "प्रीति कारण सेतु बान्हल-Redefining Maithili" नै छल। मुदा एकर बादो किछु विषयपर आलेख एखनो नै आबि सकल अछि जेना "विदेहमे प्रकाशित शोध आलेख' आदि। गजेन्द्र ठाकुर भाषाक लेल जे काज केलाह ताहि लेल अहू पोथीमे हम कोनो आलेख एकट्ठा नहि कऽ सकलहुँ। कारण वएह जे पहिल पोथीक भूमिकामे हम लिखने छी। एखन धरि गजेन्द्र ठाकुरक लीखल साहित्य सभपर कोनो खास आलोचना नहि भेल अछि खास कऽ हुनक बाल साहित्य सभहक। भविष्यमे गजेन्द्र ठाकुर एवं विदेहक विभिन्न विषयपर मूल्यांकन हएत से उम्मेद अछि।

2) पहिल संपादित पोथी "प्रीति कारण सेतु बान्हल-Redefining Maithili" मे जे-जे लेखक लिखने छलाह तिनकासँ एहि पोथीमे नहि लिखेबाक मोन बनेलहुँ मुदा ई कोनो कठोर नियम नहि छल, तँइ पहिल पोथीक लेखक सभ जँ आन विषयपर लिखलाह तकरा एहि पोथीमे सम्मिलित केलहुँ अछि। तथापि ई संख्या कम (मात्र दू) अछि जाहिसँ एहि पोथीमे नवीवनता आएल अछि।

3) पहिल संपादित पोथीमे नव-पुरान दूनू आलेख संकलित भेल छल आ एहि पोथीमे मात्र नव।

4) जेना हम हरेक विशेषांक, हरेक संपादित पोथी लेल नियम बनेने छी ताही अनुरूपें एहि पोथीमे सेहो एहनो लेखकसँ लेख लिखबेने छी जे या तऽ अपनाकेँ लेखक नहि मानै छथि वा जिनका मैथिली साहित्यक मुख्यधारा लेखक नहि मानैत छनि। मुदा तकर बादो ई सभ विदेह लेल लिखैत छथि आ तकर परिणाम ई जे पोथीमे बहुआयामी स्तर भेटत। मुख्यधारामे जेना संपादित पोथी फ्रेममे बान्हल सन लागै छै से एहिमे नहि भेटत।

5) लोक-वेद मिथिलाक महानतम उक्ति अछि जाहिमे लोक पहिने आ वेद बादमे अछि। तँइ पहिल संपादित पोथी "प्रीति कारण सेतु बान्हल-Redefining Maithili"क प्रस्तुतिकरण मैथिली लोकगीतपर आधारित छल तऽ ई दोसर पोथीक प्रस्तुतिकरण वेदक आभासँ युक्त अछि। विदेहक जे किछु अंक आ पोथीमे संस्कृतक मंत्र सभ देल जाइत अछि ईहो एक कारण भऽ सकैए। मिथिलामे वेदक पठन-पाठनक बहुत पुरान परंपरा अछि। बहुत विद्वान मानै छथि जे वर्तमान सीतामढ़ीक रीगा ऋगवेद लेल प्रसिद्ध छल तऽ वर्तमान मुज्जफरपुरक जजुआर यजुर्वेद लेल प्रसिद्ध छल आ ताही दुआरे एहि गामक नाम यजुआर पड़लै जे जजुआर उच्चरित होइत अछि। जजुआर हमर मामा गाम सेहो अछि। अही पोथीमे देखबै जे अनुक्रमक संगे-संग विदेहक सूचना सहित मंत्र, आँजी आदिक विवरण भेटत। सामान्य पाठक लेल ई एक तरहें खजाना बुझू। पाठक जखन हमर दूनू संपादित पोथीकेँ पढ़ताह तखन हुनका दूनू

पोथीक प्रस्तुतिकरण एकै रंगक लगतनि मुदा सुआद अलग। आ से हम जानि-बूझि कऽ केने छी। एहि पोथीक शुरूसँ अंत धरि बीच-बीचमे वेदक ऋचाक प्रयोग कएल गेल अछि जे कि एक भागकेँ दोसर भागसँ जोड़बाक लेल अछि। जेना अनुक्रम लेल ऋचाक प्रयोग अछि, भूमिका लेल ऋचाक प्रयोग अछि, गजेन्द्र ठाकुर-प्रीति ठाकुरक काजक लिस्ट लेल ऋचाक प्रयोग अछि, प्रीति ठाकुर खंड लेल ऋचाक प्रयोग अछि, गजेन्द्र ठाकुर खंड लेल ऋचाक प्रयोग अछि, सहयोगी लेखक परिचय लेल ऋचाक प्रयोग अछि, आ अंतमे समस्त पाठक लेल ऋचाक प्रयोग अछि मने कुल 7 ऋचाक प्रयोग अछि।

6) एहि पोथीमे गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुरक योगदानक सूची दोबारा देल जा रहल अछि। ई सूची "प्रीति कारण सेतु बान्हल-Redefining Maithili" मे सेहो छल। ई काज हम मात्र साधारण पाठकक सुविधा लेल केने छी। हमर सोचब अछि जे जाहि कारणसँ आलोच्य लेखकक नीक वा खराप कहल जा रहल छै तकर एक सामान्य आधार साधारण पाठक लग हेबाक चाही। एक अतिरिक्त शेष सूचना जेना गजेन्द्र-प्रीति ठाकुरक परिचय, हुनकर प्रकाशित पोथी आदि लेल पाठककेँ "प्रीति कारण सेतु बान्हल-Redefining Maithili" पढ़ऽ पड़तनि।

7) पहिल संपादित पोथी "प्रीति कारण सेतु बान्हल-Redefining Maithili"मे गजेन्द्र ठाकुरक ऊपर हमर कोनो आलेख नहि छल, अहू पोथीमे हमर कोनो आलेख नहि भेटत हुनकापर। हमर किछु आलेख हुनका पर छनि आ निश्चिते ओहिमे आर आलेख

जोड़ि एकटा अलग पोथी अहाँ सभ लग प्रस्तुत करब। गजेन्द्र ठाकुर-प्रीति ठाकुरक जे काज छनि, जते काज छनि तकरा मात्र दू टा संपादित पोथीसँ नहि जानल जा सकैए।

8) विदेहक विशेषांक सभ लेल हम ओहनो लोक सभ लग आलेख लेल जाइत छी, हुनको सूचना दैत छी जे कि हमर, विदेह या गजेन्द्र ठाकुरक धुर विरोधी छथि। आ एहू पोथी लेल हम सएह केने छी। दू-चारि लोक कहि सकै छथि जे हमरा सूचना नहि भेटल, तऽ हुनकासँ हमर आग्रह जे कमसँ कम ओ अपन ह्वाटसएप आ फेसबुक वा ई-मेल केर मैसेज बॉक्स (इनबॉक्स) देखथि। हमर एहि प्रयासक प्रतिफल विदेहक विशेषांक सहित एहि पोथीमे देखाइ पड़त से उम्मेद अछि।

9) हम जतेक जनैत छी ताहिमे ई पोथी मैथिलीक एहन दोसर पोथी अछि जाहिमे एकै संग रचनाकार पति-पत्नीक मूल्यांकन कएल गेल अछि। पहिल पोथी हमरे द्वारा संपादित "प्रीति कारण सेतु बान्हल- Redefining Maithili"अछि। एहि विषयपर विशद् चर्चा पहिल संपादित पोथीमे अछि। जँ पत्रिकाक अंकक बात करी तैयो संपूर्ण मैथिलीमे विदेहे पत्रिकामे प्रकाशित लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांक (2022 मे प्रकाशित) एहन अंक अछि जाहिमे पहिल बेर एकै अंकमे पति (लक्ष्मण जी) आ पत्नी (शैल झा)क एकै संग मूल्यांकन कएल जेबाक प्रयास केलक। एकर बाद विदेह इएह काज नरेन्द्र झा विशेषांक एवं शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे केलक। आ अहाँ सभकेँ कहबाक आवश्यकता नहि जे विदेह पत्रिकाक संपादक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

10) जँ अहाँ अइ पोथी केर PDF पढ़ि रहल छी तँ कोनो शब्द वा पाँति अंडरलाइनमे नीला वा कोनो अलग रंगक देखाए तँ बुझि लिअ जे ओहिमे लिंक देल गेल छै रेफरेंस लेल आ तकरा क्लिक करबै तँ ओ लिंक खुजि जाएत। कोनो-कोनो फोटोमे सेहो लिंक देल गेल छै। पाठक एहि माध्यमसँ कम समयमे रेफरेंस सभहक अध्ययन कऽ सकै छथि। मुदा प्रिंटमे प्रकाशित पोथीमे ई सुविधा नै रहत।

11) जखन अहाँ एहि पोथीक शुरूमे देल गजेन्द्र ठाकुर-प्रीति ठाकुरक मैथिलीमे योगदानपर आलेख सभ पढ़ि अंतमे मुकेश आनंदजीक आलेख पढ़ब तखन बुझाएत जे ई मैथिलीक दुनियाँ केहन छै। से मैथिलीक दुनियाँ जेहन हो, गजेन्द्र ठाकुर-प्रीति ठाकुर मैथिली लेल अपन योगदान जारी रखताह ताहिमे संदेह नै।

12) जँ पाठककेँ वर्तनीसँ लऽ कऽ आन कोनो विषयपर समस्या होइन तऽ एकर बेर पहिने ओ "प्रीति कारण सेतु बान्हल-Redefining Maithili" केर भूमिका पढ़ि लेथि। अहू पोथीमे हम अपन ओहने विचार रखने छी।

एहि पोथीमे प्रयुक्त सातो ऋचाक सामान्य जानकारी निच्चा देल गेल अछि मुदा ओहि ऋचाक देवता, छंद ओ ऋषिक जानकारी हम जानि-बूझि नै देलहुँ। हमर उद्येश्य जे पाठक अही पोथीक बहन्ने वेदक अध्ययन करथि।

अनुक्रम लेल-

सुरूपकृत्नुमूतये- गाए दूहऽ बला जेना हरेक दिन मधुर ओ पौष्टिक दूध देबऽ बाली गाएकेँ जेना बजाएल जाइत छै, ठीक ओहिना हम अपन संरक्षण लेल सौन्दर्यपूर्ण यज्ञकर्म सम्पन्न करऽ बला इन्द्रदेवक आवाहन करैत छी। ई मूल अर्थ अछि, साहित्यमे कोनो संपादित पोथी रूपी यज्ञक संरक्षक ओहिमे सहभागी भेल लेखक होइत छथि। एक संपादकक तौरपर हम सहभागी लेखक सभकेँ ओहिना आह्वान करैत छियनि जेना ऋषि इन्द्रकेँ आह्वान कऽ रहलाह ऋगवेदमे। (ऋगवेद संहिता, मंडल-१, सूक्त-४ केर १ल मंत्र)।

भूमिका लेल-

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे- हे गणपति, गणक स्वामी हम अहाँक आह्वान करैत छी। अहाँ कवि (ज्ञानी)मे श्रेष्ठ आ सर्वोच्च छी। अहाँ ब्रह्मक सेहो ईश्वर (ब्रह्मणस्पति) छी। हमर प्रार्थना सुनि, कृपापूर्वक हमरा सामने आबि विराजमान होइ। (ऋगवेद संहिता, मंडल-2, सूक्त-23 केर १ल मंत्र)

काजक सूची लेल-

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो- ज्ञानी देव मित्र एवं वरुण हमरा सभकेँ सरल नीति पथपर बढ़ाबैत छथि। देवक सहचर अर्यमा हमरा सभकेँ सरल मार्गसँ उन्नतिशील बनाबथि। (ऋगवेद, मंडल-१, सूक्त-९० केर १ल मंत्र)

प्रीति ठाकुर खंड लेल-

महो अर्णः सरस्वती- जे देवी सरस्वती नदी रूप मे प्रभूत जलकेँ

प्रवाहित करैत छथिन। ओ देवी सुमतिकेँ जगाबऽ बाली देवी सरस्वती सभ याजकक प्रज्ञाकँ प्रखर बनाबैत छथिन (ऋृगवेद संहिता, मंडल-1, सूक्त-3 केर 12म मंत्र)

गजेन्द्र ठाकुर खंड लेल-
पुनन्तु मा पितरः- सौम्यतासँ परिपूर्ण, पवित्र भेल पितर-गण सए बर्खक पूर्ण जीवन दऽ हमरा पवित्र करथि। पितामह हमरा पवित्र करथि।। प्रपितामह हमरा पवित्र करथि। पवित्र भेल पितामह सए बर्खक पूर्ण जीवन दऽ हमरा पवित्र करथि। प्रपितामह हमरा पवित्र करथि। एहि तरहें अहाँ सभहक प्रेरणासँ पवित्र जीवनसँ लाभान्वित भऽ हम अपन पूर्ण आयुक उपयोग करी (यजुर्वेद, 19म अध्यायक 37म मंत्र)

सहयोगी लेखक परिचय लेल-
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च- गण (समूह) एवं गणपति (समूहक स्वामी)केँ नमन। व्रत (संघ /शारीरिक संघटन) एवं व्रातपति (संघक स्वामी)केँ नमन। गृत्स (बुद्धिमान /सूक्ष्मज्ञ) एवं गृत्सपति (बुद्धिमानक स्वामी)केँ नमन। विरूप (असामान्य / दिव्य स्वरूप) एवं विश्वरूप (सर्वव्यापी /अनेक रूप बला)केँ नमस्कार। (यजुर्वेद 16 अध्यायक 25म मंत्र)

समस्त पाठक लेल लेल-
मधुमतीरोषधीर्घाव- हमरा सभ लेल आकाश मधुमय हो, अंतरिक्ष मधुमय हो, दवाइ (ओषधि) मधुमती हो एवं क्षेत्रक पति सेहो मधुमय हो. हम सभ अमृतत्वकेँ प्राप्त कऽ, ओकर अनुगामी बनि

कऽ सगरो घूमी (अथर्ववेद, कांड-20, 143म सूक्त केर 8म मंत्र)
आब ई पोथी पाठकक हाथमे छनि, हुनका जे बुझाइन से हमरा कहि सकै छथि। हुनक सुझावकेँ हम सादर एहि पोथीक आन संस्करण एवं भविष्यक आन संपादन लेल जोगा कऽ राखब।
-आशीष अनचिन्हार

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः

एहिठाम गजेन्द्र ठाकुर ओ प्रीति ठाकुर केर विशेषता एवं हुनका द्वारा मैथिली भाषा-साहित्यमे द्वारा किछु एहन काज भेल जे मैथिली लेल पहिल अछि से देल गेल अछि-

1) प्रीति ठाकुर मैथिलीक पूर्णकालिक बाल साहित्यकार छथि। ओ अपन चित्रकथा लेल अपनेसँ चित्र बनबै छथि। मिथिलाक मुख्यधारासँ बारल किछु नायक सभहक काल्पनिक चित्र हिनके बनाएल छनि। पाठक एहि नायक सभहक चित्र हिनक चित्रकथामे देखि सकै छथि।

2) प्रीति ठाकुर मैथिलीक पहिल चित्रकथा केर रचनाकार छथि, 2002 मे पहिने ई "छोट आ पैघ" नामक चित्रकथाक अनुवाद केलीह आ बर्ख 2008 मे हिनक मूल मैथिली चित्रकथा “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रकाशित भेल।

3) मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल उपस्थिति गजेन्द्र ठाकुर द्वारा संचालित ब्लाग "भालसरिक गाछ" छल जे बर्ख 2000 सँ छल।

4) समदिया मैथिलीक पहिल समादपरक ब्लाग अछि जकरा गजेन्द्र ठाकुर 2004 मे बनेने छलाह।

5) पञ्जी कैँ सार्वजनिक रूपैँ साधारण जनता लेल डिजिटल एवं पोथी रूपमे आनए बला गजेन्द्र ठाकुर पहिल लोक छथि। पञ्जी कैँ डिजिटल करबाक काज ओ 2007 केर आस-पासमे समाप्त केलाह।

एहि काज लेल गजेन्द्रजीकेँ जिनका दू आर लोकसँ सहायता भेटलनि से संपादकक तौरपर लेल गेल छथि एहि काजमे। बर्ख 2007हि मे ओ एकर एकटा कॅापी अंशुमान पांडेयकेँ बिना कोनो शर्तकेँ देलाह जाहिसँ पांडेयजी मिशिगन विश्वविद्यालय, अमेरिकासँ अपन शोध पूरा केलाह। शोध केर विषय छलै "Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar" ई शोध 2014 मे प्रकाशित भेलै आ जकर पृष्ठ 22 पर अंशुमानजी गजेन्द्र ठाकुरजीक एहि उपरोक्त काजकेँ acknowledge केने छथिन।

गजेन्द्र ठाकुरसँ पहिने पञ्जीक संरक्षण लेल Genealogical Society of Utah (United States) आगू आएल मुदा ओ समाजक लेल नै अपना लेल आर्काइभ बनेलक। एहि लेल ओ किछु स्थानीय लोकक सहायतासँ पञ्जीकार धरि पहुँचल आ पञ्जीकार सभकेँ किछु पाइ भेटलनि आ बहुत संभव जे स्थानीय गाइड सभ रहथिन हुनको फंड भेटल होइन। Genealogical Society of Utah मे जे पञ्जीक आर्काइभ अछि तकरा साधारण जनता उपयोग नै कऽ सकैए कारण Genealogical Society पाइ दऽ कऽ लेने छै आब ओ डिजिटल रूप ओकर संपति छै जकरा ओ अपन रिसर्च लेल उपयोग करतै। एखन बहुत लोक ई कहैत भेटि जेता जे पञ्जीकार सभ सहयोग नै करै छथि पञ्जी देबामे से शायद Genealogical Society केर काजक उपज भऽ सकै छै। पञ्जीकार सभकेँ होइत हेतनि जे फेर कियो आएत आ पाइ दऽ कऽ जाएत। मुदा एकर विपरीत गजेन्द्र ठाकुर अपन इच्छाशक्ति आ मेहनतिसँ मिथिलाक चीज मिथिला लेल आ संपूर्ण देशक जनता लेल डिजिटल आ प्रिंट

दुनू स्तरपर सुलभ बनेलाह। Genealogical Society बला डिजिटल काज कतेक गोपनीय छै तकर अंदाजा अही बातसँ लागत जे भैरव लाल दास जे एकटा नीक अध्येता छथि से हमर फेसबुकक पोस्टपर अपन एक कमेंटमे गछलाह जे बहुत तकलाक बादो हुनका Genealogical Society बला नै भेटलनि। कमेंट केर स्क्रीन शाट अंतमे देल जा रहल अछि। हमर फेसबुक पोस्ट केर लिंक अछि- https://www.facebook.com/anchinhar/posts/pfbid02Sr82dVYSSAYf8JoFZ22vjcFY8R6WTPPUfxbuuPojC9yQvl3dAJ3S6PjNUNgQBp6nl

6) दूषण पञ्जी कैँ सार्वजनिक करऽ बला पहिल लोक गजेन्द्र ठाकुर छथि। पञ्जीक शुरूआतसँ लऽ कऽ एखन धरिमे एकरा सार्वजनिक करबाक पहिल प्रयास छै। एहि काज लेल गजेन्द्र ठाकुरक मेलमे धमकी आ गारि सभ देल गेल छनि।

7) मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका विदेह अछि, जे बर्ख 2008सँ एखन धरि अछि आ जकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि। http://videha.co.in/ ई भालसरिक गाछ ब्लागक नव नामसँ अछि। एकर माने भेल जे विदेहक पूर्ववर्ती रूप 'भालसरिक गाछ' अछि।

8) विदेह पत्रिका मैथिलीक एहन पहिल पत्रिका अछि जकरा ISSN (International Standard Serial Number) भेटलै। एकर तुरंत बाद जाहि-जाहि पत्रिकाकैँ ISSN भेटलै ताहिमे गजेन्द्र ठाकुर प्रत्यक्ष रूपें सहयोग केने छथिन।

9) विदेह मैथिलीक पहिल एहन पत्रिका अछि जे कि एकसँ बेसी लिपिमे (देवनागरी, तिरहुता, ब्रेल, कैथी, नेवाड़ी, आइ.पी.ए, ब्राह्मी, खरोष्ठी, उर्दू, तिब्बती एवं तिब्बती-उमे) प्रकाशित होइत अछि।

विदेह ई काज Transliteration (एकर मतलब छै लिप्यंतरण) केर तकनीकसँ करैत अछि। पाठक लग एकटा सहज प्रश्न आबि सकैए जे कि विदेहक संपादक या एहिसँ जुड़ल लोक एहि सभ लिपिक ज्ञाता छथि? तँ एकर सहज उत्तर छै ई अनिवार्य तौरपर जरूरी नहि छै। चूँकि Transliteration तकनीकपर आधारित छै मुदा एकरा अभिरुचि आ स्वाध्याय केर प्रतीक तऽ मानले जा सकैए। बहुत संभव जे एहि स्वाध्याय केर बलपर विदेहसँ जुड़ल लोक निष्णात भऽ जाथि।

10) मैथिलीक पहिल डिजिटल पुस्तकालय विदेह द्वारा बर्ख 2008 मे शुरू भेलै।

11) गजेन्द्र ठाकुर मैथिलीक पहिल अरूजी छथि (अरूजी मने गजल छंद शास्त्रक जानकार एवं ओकर प्रणेता)। गजलक माध्यमसँ वैदिक छंदक फेरसँ परिचय कराबए बला लोक छथि गजेन्द्र ठाकुर।

12) Computer पर आधारित मैथिलीक पहिल शब्दकोश केर संपादकत्रयमेसँ एक छथि गजेन्द्र ठाकुर।

13) ब्रेल लिपिमे मैथिलीक पहिल पोथी गजेन्द्र ठाकुरजी केर छनि। ई पोथी "सहस्रबाढ़नि" नामक उपन्यास अछि।

14) तिरहुतता लिपिमे सभसँ बेसी पोथी गजेन्द्र ठाकुरजीक छनि।

15) मैथिलीक पहिल संपादक गजेन्द्र ठाकुर छथि जे एकसँ बेसी लिपिमे पत्रिकाक अंक प्रकाशित करै छथि।

16) इंटरनेटपर साहित्यिक अनुवाद लेल पहिल ब्लाग http://Madhubani-art.blogspot.com
अछि जे गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा बनाएल गेल अछि।

17) इंटरनेटपर बाल साहित्य लेल "नेना-भुटका" नामसँ ब्लाग आएल अछि जे कि 2009 सँ अछि आ जकरा गजेन्द्र ठाकुर बनेने

छथि।

18) मैथिली विकीपीडिया लेल पहिल प्रयास गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बर्ख 2008 मे भेल, 2013 धरि विभिन्न अनुवादक काज भेलै आ 2014 मे मैथिली विकीपीडियाकेँ मंजूरी भेटलै। विकीपीडिया एकटा Community project छै जाहिमे सभ काज बिना पाइकेँ समाज लेल कएल जाइत छै।

19) विदेह मैथिलीक पहिल एग्रीगेटर छै जाहिठाम मैथिलीक आन-आन इंटरनेटक साइट केर सूची भेटत।

20) गूगल ट्रांसलेशन लेल पहिल प्रयास 2011 मे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेलै आ मइ 2022 मे गूगल एकरा मंजूरी देलकै। गूगल ट्रांशलेशन एकटा Community project छै।

21) मैथिली नाटकपर केंद्रित पहिल ब्लाग "विदेह मैथिली नाट्य उत्सव" अछि जे अगस्त 2011सँ अछि आ जकरा गजेन्द्र ठाकुर बनेने छथि।

22) विदेहः सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग) जकर लिंक अछि http://videha-sadeha.blogspot.com/एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

23) विदेहःब्रेलः ब्रेल लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लाग अछि, जकर लिंक अछि http://videha-braille.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

24) विदेह रेडियोःमैथिलीक पहिल पोडकास्ट साइट जकर लिंक अछि http://videha123radio.wordpress.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

25) विदेह मैथिली संकेत लिपि-पहिल मैथिली संकेत लिपि ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-sign-

language.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

26) विदेह ब्राह्मी- ब्राह्मी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-brahmi.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

27) विदेह खरोष्ठी- खरोष्ठी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-kharoshthi.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

28) विदेह कैथी लिपिमे- मैथिलीक कैथी लिपिमे पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-kaithi.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

29) विदेह नेवाड़ी लिपिमे- मैथिलीक नेवाड़ी लिपिमे पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-newari.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

30) विदेह आइ.पी.ए. लिपिमे- मैथिलीक आइ.पी.ए.मे पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-ipa.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

31) विदेह- उर्दू नस्तालिक लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-urdu.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

32) विदेह- तिब्बती लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-tibetan.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

33) मैथिलीमे जापानी काव्य विधा टंका/ शेनर्यू/ हैबून अनबाक श्रेय गजेन्द्र ठाकुरजीकेँ छनि। एहिसँ पहिने मैथिलीमे मात्र हाइकू छल। 2008सँ मैथिली हाइकू/ टंका/ शेनर्यू/ हैबून केर ब्लाग सेहो

अछि जाहि ठाम विदेहक फेसबुक भर्सनसँ हाइकू केर संग्रह कएल गेल अछि। ई ब्लाग एहि पतापर देखल जा सकैए http://maithili-haiku.blogspot.com/
34) गजेन्द्र ठाकुर (क्रियेटिभ आइडिया) एवं नागेन्द्र कुमार झा (संसाधन+टेक्निकल एप्रोच) केर संयुक्त प्रयास केर प्रतिफल अछि "श्रुति प्रकाशन"। श्रुति प्रकाशन (Shruti Publication) मैथिलीक पहिल मानक प्रकाशक अछि। मानक प्रकाशक माने जे कि बिना पाइ लेने पोथी प्रकाशित करैं छै आ ओइ के बाबजूद कापीराइट लेखके लग रहैत छनि। ई प्रकाशन एखन धरि 100 सँ बेसी पोथीक प्रकाशन केने अछि जाहि हमर पोथी "अनचिन्हार आखर" (2011) सेहो अछि।

ऊपरक ई लिस्ट हमर पोथी "मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास" नामक पोथीसँ लेल गेल अछि। पाठक विस्तृत जानकारी ओहि पोथीकेँ पढ़ि कऽ लऽ सकै छथि। ई अंतिम लिस्ट नै अछि। बहुत रास 'पहिल' काज हमरा नजरिसँ छूटि गेल हएत, जकरा भविष्यमे हम देब। संगहि किछु एहन पहिल चीज सभ अछि जकर वर्णन पोथीक भीतर विभिन्न आलेख सभमे अछि। प्रसंगवश एहिठाम हम पाठककेँ ईहो सूचना देब जे विदेह केर काजकेँ देखैत, मैथिली गजलमे प्रयुक्त एक बहर (छंद) केर नाम बहरे विदेह राखल गेल अछि। एकर विस्तृत विवेचन हमर गजल संग्रह "कुमारि इच्छा"मे भेटत। आग्रह ईहो जे जँ कोनो पाठककेँ हमर भूमिका, हमरा द्वारा देल लिस्ट वा एहि पोथीक लेख सभमे देल कोनो तथ्यसँ असहमति होइन वा कि एहि पोथीमे देल पहिल काजसँ पहिनेहो ओ काज भेल हो तऽ संदर्भ सहित ओ सभ आबथि हम अपनामे तात्काल सुधार

कऽ लेबा।

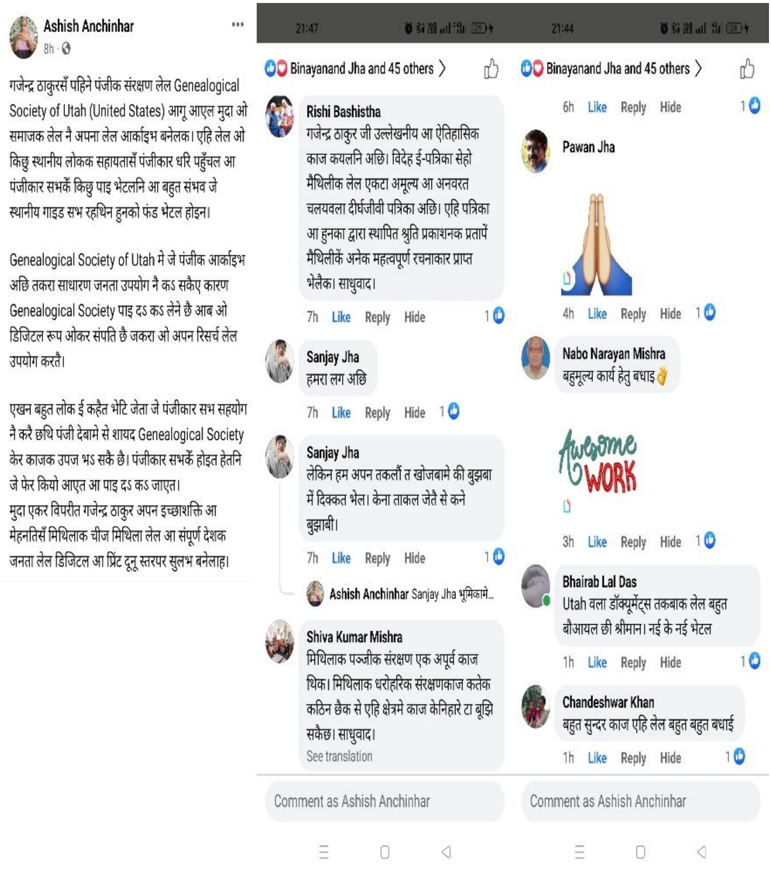
Ashish Anchinhar
8h

गजेन्द्र ठाकुरसँ पहिने पंजीक संरक्षण लेल Genealogical Society of Utah (United States) आगू आएल मुदा ओ समाजक लेल नै अपना लेल आर्काइभ बनेलक। एहि लेल ओ किछु स्थानीय लोकक सहायतासँ पंजीकार धरि पहुँचल आ पंजीकार सभकेँ किछु पाइ भेटलनि आ बहुत संभव जे स्थानीय गाइड सभ रहथिन हुनको फंड भेटल होइन।

Genealogical Society of Utah मे जे पंजीक आर्काइभ अछि तकरा साधारण जनता उपयोग नै कऽ सकैए कारण Genealogical Society पाइ दऽ कऽ लेने छै आब ओ डिजिटल रूप ओकर संपति छै जकरा ओ अपन रिसर्च लेल उपयोग करतै।

एखन बहुत लोक ई कहैत भेटि जेता जे पंजीकार सभ सहयोग नै करै छथि पंजी देबामे से शायद Genealogical Society केर काजक उपज भऽ सकै छै। पंजीकार सभकेँ होइत हेतनि जे फेर कियो आएत आ पाइ दऽ कऽ जाएत।
मुदा एकर विपरीत गजेन्द्र ठाकुर अपन इच्छाशक्ति आ मेहनतिसँ मिथिलाक चीज मिथिला लेल आ संपूर्ण देशक जनता लेल डिजिटल आ प्रिंट दूनू स्तरपर सुलभ बनेलाह।

21:47
Binayanand Jha and 45 others

Rishi Bashistha
गजेन्द्र ठाकुर जी उल्लेखनीय आ ऐतिहासिक काज कयलनि अछि। विदेह ई-पत्रिका सेहो मैथिलीक लेल एकटा अमूल्य आ अनवरत चलयवला दीर्घजीवी पत्रिका अछि। एहि पत्रिका आ हुनका द्वारा स्थापित श्रुति प्रकाशनक प्रतापें मैथिलीकें अनेक महत्वपूर्ण रचनाकार प्राप्त भेलैक। साधुवाद।
7h Like Reply Hide 1

Sanjay Jha
हमरा लग अछि
7h Like Reply Hide 1

Sanjay Jha
लेकिन हम अपन तकलौं त खोजबामे की बुझबा में दिक्कत भेल। केना ताकल जेतै से कने बुझाबी।
7h Like Reply Hide 1

Ashish Anchinhar Sanjay Jha भूमिकामे...

Shiva Kumar Mishra
मिथिलाक पञ्जीक संरक्षण एक अपूर्व काज थिक। मिथिलाक धरोहरिक संरक्षणकाज कतेक कठिन छैक से एहि क्षेत्रमे काज केनिहारे टा बूझि सकैछ। साधुवाद।
See translation

Comment as Ashish Anchinhar

21:44
Binayanand Jha and 45 others
6h Like Reply Hide 1

Pawan Jha
4h Like Reply Hide 1

Nabo Narayan Mishra
बहुमूल्य कार्य हेतु बधाइ

Awesome WORK
3h Like Reply Hide 1

Bhairab Lal Das
Utah वला डॉक्यूमेंट्स तकबाक लेल बहुत बौआयल छी श्रीमान। नई के नई भेटल
1h Like Reply Hide 1

Chandeshwar Khan
बहुत सुन्दर काज एहि लेल बहुत बहुत बधाई
1h Like Reply Hide 1

Comment as Ashish Anchinhar

two centuries.

The largest hinderance to a proper study of *pañjī prabandha* and other aspects of brahminical society in north Bihar during the medieval period is access to sources and the paucity of primary sources on this topic. While the *pañjī* records offer a vast amount of detail on Maithil Brahmins, the records themselves are difficult to access. The difficulty is not one of language or script or completeness of content; rather, it is one of privilege. The *pañjīkara*-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to persue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of *pañjī* records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. I was allow permitted to browse through transcriptions of records that are in the possession of Hetukar Jha of Patna in 2013. The second limitation is the lack of historical records about the general society, culture, and polity of the Karnata period. Several scholars have complained about this.[43] Apart from the genealogical records, there are very few sources directly related to the origins of the records. Although *pañjī prabandha* took place during Karnata rule, the kings of this dynasty left no epigraphic sources, such as copper-plate grants to Brahmins. The absence is quite curious because the *pañjī* records provide ample proof of Brahmin settlements in north Bihar. Equally curious is that there are epigraphical sources from the borderlands of Mithila slightly preceding and during Karnata rule, which show land grants being made to Brahmins in areas of north Bihar. Moreover,

[43]Sircar, *Studies in the Society and Administration of Ancient and Medieval India*, 140; Chaudhary, "Political History of North Bihar," 281.

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति
केतुना। धियो विश्वा वि राजति॥

खण्ड-1: प्रीति ठाकुर

बाल मनक सिद्धहस्त लेखिका-श्रीमती प्रीति ठाकुर

मुन्नी कामत

कोनो सृजन लेल पहिल मंथन पहिल आधार आ ताहिपर ठाढ़ पहिल ईटाक महत्व बेसी होइत अछि। किएक त' तकर बाद बनल कोनो गगनचुंबी इमारत ओकरे अनुकरण करैत अछि। मैथिली बाल साहित्यमे चित्रकथाकेँ पहिल परिकल्पना संगे पोथीक रूप देनिहार श्रीमती प्रीति ठाकुर छथि। सृजन कोनो हो ओकरा कतेको चरण पार कर' पड़ैत छै। ठीक ओहिना जेना खेतमे इम्हर-उम्हर पड़ल माटिसँ कुम्हार सधल आ सुगढ़ बासनक निर्माण करैत अछि। निमार्ण कोनो हो ओ सरल कहाँ! निर्माण सदैव कठिन रहल अछि। साहित्य गढ़ब आ बाल साहित्य गढ़ब दुनू दू भिन्न-भिन्न प्रवाह थिक। एकटा शब्दक ओझराहट त' दोसर भावक सहजता। तैं बाल साहित्य गढ़ब साहित्य गढ़बसँ कनि कठिन भ' जाइत अछि। बाल साहित्य गढ़बाक लेल लेखककेँ पहिने ओहि उम्रक बच्चा बन' पड़ैत छै तखने भावक अदान-प्रदान संभव थिक। चेतन देहमे बालमनकेँ समावेशसँ बाल साहित्यिक उत्कृष्ट सृजन होइत अछि। ठीक अही धारणा पर आदरणीया प्रीति ठाकुरक बाल साहित्य अपन योग्यता सिद्ध क' रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे दिनकर जकाँ अपन आलोकसँ जगाजग भेनिहार आदरणीय श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ के नहि जनैत अछि, हुनके अर्धांगिनी छथिन श्रीमती प्रीति ठाकुर। मैथिली साहित्यमे एहन दम्पति बहुत कम देखायल जे पूर्ण रूपे अपन मातृभाषा प्रति समर्पित छथि। जेना

कोनो इमारतक भविष्य ओकर नेओं पर आधारित अछि, तहिना कोनो भाषाक भविष्य ओकर बाल साहित्य पर आधारित अछि। हमर भाषायी नेओं जतेक मजगूत रहत ओकर भविष्य ओतेक वृहत आ झमठगर रहत। साइत इएह कारण रहल हएत जे लेखिका प्रीति ठाकुरकेँ बाल साहित्य अपना दिस आकर्षित केलक। मिथिला साहित्यिक परिवेशमे रहि रहल प्रीति ठाकुरकेँ साहित्यिक सृजन बहुत परिपक्व अछि। संयुक्त परिवारमे हिनकर बालकाल, दादा-दादीक स्नेहमे बीतल। एहि सृजनसँ पहिने हुनकर रूप एकटा माँ केर अछि जे बुझैत छै बच्चाक भाव ओकर रुचि। ओ देखलीह बच्चाक आकर्षण आ मंथन केलीह अपन बाल कालक जकर परिणाम अछि हिनका द्वारा लिखल विभिन्न बाल साहित्य जे निम्न अछि-

1. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा
2. मैथिली चित्रकथा
3. मिथिलाक लोकदेवता
4. विद्यापतिक पुरुष परीक्षा

'गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा' मैथिली बाल साहित्यक ई पहिल चित्रकथा पोथी थिक जे प्रीति ठाकुर द्वारा रचित आ श्रुति प्रकाशन द्वारा 2008 ई मे प्रकाशित अछि। ई बाल साहित्य मिथिलाक महान पंडित, चतुर आ विद्वान गोनू झाक पौराणिक कथा पर रचल गेल अछि। जकर कथा प्राय: सभ मैथिल अपन बाबा-बाबी सँ जरूरे सुनने हएब। ओहि कथा सभकेँ पोथीक रूप देल गेल अछि संगहि किछु आन-आन पौराणिक कथा सेहो समाहित कएल गेल अछि। एहि पोथीक विशेषता एकर चित्रकला अछि जे बाल मनकेँ अपना दिस आकर्षित करैत अछि। सभटा कथा बहुत रोचक

सरल-सहजता संगे गढ़ल गेल अछि। एकर सहजता बाल मनोवैज्ञानिक स्तर पर एकरा उत्कृष्ट बनबैत अछि।

हिनकर दोसर पोथी थिक 'मैथिली चित्रकथा'। श्रीमती प्रीति ठाकुर द्वारा रचित आ श्रुति प्रकाशन द्वारा 2009 ई मे प्रकाशित एहि पोथीमे कुल 10 टा पौराणिक कथाकेँ चित्रकथा द्वारा सुंदर वर्णन कएल गेल अछि। विद्यापति, राजा साहेब, दीना भदरी आदि पौराणिक कथा सब एहि पोथीमे अपन स्थान पेने छथि।

तेसर ' मिथिलाक लोकदेवता' प्रीति ठाकुर द्वारा रचित श्रुति प्रकाशन द्वारा 2010 ई मे प्रकाशित भेल अछि। ई पोथी अपना भीतर 18 टा चित्रकथा आ 6 टा लोकप्रचलित किस्साकेँ अपना भीतर समेटने अछि। एहि संग्रहमे संग्रहित बगिया बला खिस्सा हमरो अपन नेनपनक स्मरण करा देलक। अहिमे संग्रहित 18 टा चित्रकथा बहुत आकर्षक अछि। प्रीति ठाकुर के लेखनक विशेषता ई अछि जे ओ मिथिलाक परंपरा के सामाहित करैत बच्चा के अपन संस्कृति आ इतिहास दूनूसँ परिचय करबैत अछि।

हिनकर चारिम पोथी अछि 'विद्यापतिक पुरुष परीक्षा'। पुरुष परिक्षा विद्यापति द्वारा रचित छंदयुक्त ग्रंथ अछि। विद्यापतिक एहि पोथीकेँ हिन्दी मे अनुवाद चन्द्रकांत पाठक द्वारा सन् 1927 ई मे भेल। ई पोथी गद्य- पद्य छंद मे रचित अनमोल ग्रंथ अछि। एहिमे वर्णित कथासब अपन समयक ऐतिहासिकता संगे उत्कृष्ट ज्ञान आ प्रेरणा अपना भीतर समेटने अछि। प्रीति ठाकुर अपन चारिम पोथीमे बच्चा सभकेँ कथाक प्रति रूचि जगबै लेल जे नव प्रयोग केने छथि से सराहनीय अछि। एहि पोथीकेँ भूमिका मे लेखिका स्वंय लिखने छथि-

"मूल कथा सभ लेल जाउ चन्द्रकान्त पाठकक 1927 मे प्रकाशित

पुरुष परीक्षा ओपन सोर्सबुक
बौआ-बुच्ची सभ।
ऊपर देल लिंकसँ खिस्सा पढ़ि कऽ अहाँक नीचाँ चित्र बनाओल कथा सभकेँ चिन्हबाक अछि, ऊपर देल कथा सभमेसँ 25 टा कथाक रेखाचित्र नीचाँ देल गेल अछि। एकर सभक शीर्षक दिअ, फोटो सभमे डायलॉग लेल स्थान राखि शेष स्थलमे रङ भरु।"
बच्चा सभकेँ एहि पोथीक माध्यमसँ एक संगे कतेको विकास भ' रहल अछि। मनोरंजन संगे बहुत रास ज्ञान। लेखिका के बहुत नीक आ सुंदर प्रयास कएल गेल अछि अपन नव पीढ़ी लेल अपन विरासत सौंपवाक लेल। हिनका द्वारा कएल अनुवाद काज सेहो सराहनीय अछि। नेनाक पहिल पोथी पर अपन मातृभाषा मे कएल काज ई कहि रहल अछि जे बाल साहित्य लेल हिनकर सोच कतेक गंभीर आ प्रासंगिक अछि। हिनकर एहि साहित्यिक यात्रा लेल हमर शुभकामना।

मैथिली चित्रकथा मे प्रीति ठाकुरक योगदान

इरा मल्लिक

मैथिली साहित्य संसार विद्वान आ विदुषी सँ समृद्ध अछि। विलक्षण साहित्यकार, उपन्यासकार, कथाकार, कवि, आलोचक, समीक्षक मैथिली साहित्य कैँ समृद्ध करैत अपन अमूल्य योगदान दैत एलाह अछि। ओही क्रम मे एकटा आर विधा चित्रकथा लेखन शैली मे पहिल बेर श्रीमति प्रीति ठाकुरजीक द्वारा नव तथा विशिष्ट दिशा प्रदान केलनि अछि। मैथिली लोककथा आदिहु सँ वाचिक या लिखित पढ़ल, लिखल वा सुनल जाइत छल। मुदा चित्रकथाक माध्यमे लोककथा कैँ नेना-भुटका लेल सुरक्षित करबा लेल ई नवप्रयोग अत्यंत सराहनीय एवं स्मरणीय अछि। प्रीति ठाकुर मैथिली साहित्य मे पूर्णकालिक एहन साहित्यकार छथि जे अपन चित्रकथा लेल चित्र गढ़ैत साहित्य मुख्यधारा सँ जोड़लनि। चित्रकथाक महत्व स्वयं प्रभावशाली होइत अछि जतय कोनो बात चित्र मे स्पषट रूपें संप्रेषित होइत अछि। कथा, पिहानी बालमनक सर्वाधिक प्रिय विधा अछि। जखन लिपिक विकास उद्भव नहि भेल छल, भाषा द्वारा कथाक भाव व्यक्त करय लेल श्रवणक उद्भव भेल। कथा सुनैत काल जे श्रोता या कथाकारक मानस पटल पर छवि अंकित भेल, जे बिम्ब उभरि कऽ आएल ओही ठाम सँ चित्रकलाक प्रादुर्भाव भेल। एकर दिग्दर्शन हम गुफा चित्र, शैल चित्र, पट्टचित्र मंदिर सभ मे सहजहि देखैत छी। चित्र सँ कथाक रोचकता वा रंजकता मे

अभिवृद्धि होइत अछि। प्रीति ठाकुरजी सभ सँ पहिने आन भाषाक चित्रकथाक अनुवाद मैथिली मे केलनि आ तकर बाद मौलिक चित्रकथा रचलनि। हिनक बहुत रास रचना सभ मे सँ किछु रचना एना अछि-

1) सन् 2002 मे छोट आ पैंघ" नामक पहिल चित्रकथाक अनुवाद" केलनि।

2) सन् 2008 मे गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा" प्रकाशित" भेल।

3) सन् 2010 मे मिथिलाक लोकदेवता" बाल-साहित्य के" प्रकाशन भेल।

4) सन् 2012 मे विद्यापतिक पुरुष परीक्षा" (बाल-साहित्य) के" निर्माण भेल।

कतेको कथा जे सुनल वा अनसुनल होइ ओ नेना भुटका अपन घरक बुजुर्ग दादी नानी सँ सुनैत छथि आ मित्रमंडली मे सुनबैछ ओहि सब कथा कें मैथिली चित्रकथा मे प्रीति ठाकुर बहुत कुशलता सँ समेटि लेलनि अछि। पाठक कें अपन समाजक सभ वर्ग कें सहजहि चिन्हार करय मे चित्रकथा सफल भेल अछि। "गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा" मे सोलहटा कथाक नायक छथि गोनू झा। आ बाँकी शेष मे रेशमा चुहड़मल, नैका- बनिजारा, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछन महाराज, भगता ज्योति पंजियार, आ कालीदास सभटा पात्र मिथिला संस्कृतिक प्रतिनिधि चरित्र छथि। गोनू झाक कथा मिथिलाक घर घर मे जन जन के कण्ठ मे बास करैछ। नैका बनिजारा, राजा सलहेस, छेछन महाराज, ज्योति पंजियार, अहि सभ चरित्र केर वीरता, पराक्रम आ उदात्त व्यक्तित्व लोकनायक सँ लोकदेवताक रूप मे स्थापित भेलाह। ओहिना

कालीदास अपन विद्वता सँ भारतीय संस्कृति मे महत्वपूर्ण स्थान पर आसीन छथि। महुआ घटवारिन प्रेमकथाक आदर्श अछि। समाज आ संस्कृति मे बड्ड गँहीर संबंध अछि। कहय के तात्पर्य जे संस्कृति निर्माण काल-सापेक्ष होइत अछि। जे कि प्रकृति रूप सँ आगू सांस्कृतिक रूप धारण करैछ। प्रीति ठाकुर जी रेखा आ रंगक माध्यम सँ चित्रकथाक सृजन केने छथिन्ह।

प्रत्येक चित्र वा रेखा तथ्यपरक अछि। कथा के स्पष्ट रूप प्रदान करैत अछि। चित्रकथा मूक अभिव्यक्ति अछि। भाषा, रंग, रेखा, चित्र एकर अभिन्न अंग अछि। प्रीति ठाकुरजीक चित्रकथा परंपराबद्ध जीवनदर्शन रूपें अवलोकित अछि। मिथिला चित्रकला मे लिखियाक विशेष महत्व छैक। लिखियाक विषय-वस्तु तैयार करैत ओकरा आगाँ बढ़बैत मिथिला लोककथा कें चित्रकथाक माध्यमे चित्रित करैत मैथिली साहित्य मे नूतन शैली मे रचनाक आविर्भाव भेल। नव शैली, नव विषय वस्तु, परंपरागत रूप मे आधुनिक रूप प्रदान करैत प्रीति ठाकुरजीक सृजनशैली उत्कृष्ट एवं प्रशंसनीय अछि। नेना जिनका अक्षर ज्ञान के कनिको आभास नहि छल सेहो कथाक चित्रक माध्यम सँ स्पष्ट रूपें बुझि रहल छथि। ई चित्रकथा माध्यम ओहि वर्गक लेल बहुत प्रभावी सिद्ध भेल अछि।

प्रीति ठाकुरक चित्रकथा मे पौराणिक कथा, लोककथा के अलावा सामाजिक मुद्दा, महिला सशक्तिकरण, शिक्षाक महत्व, पर्यावरणक संरक्षण संग संग ग्रामीण जीवनशैलीक चुनौती कें बहुत नीक सँ समावेश केने छथि। हुनकर कथाचित्र मे जे आकृति उकेरल गेल अछि ओहि मे गतिशीलता अछि। संपूर्ण घटनाक्रम कें एक्कहिटा फ्रेम मे बहुत सावधानी सँ प्रदर्शित कएल गेल अछि। विविध रंगक प्रयोग मे प्राकृतिक रंगक संग आधुनिकताक कुशलतापूर्वक प्रयोग

केलनि अछि। प्रीति ठाकुरजी चित्र मे कचनी आ भरनी तकनीक अत्यंत सूक्ष्मता सँ कलात्मकता कें ध्यान मे राखि सृजन केलनि अछि। अतिशयोक्ति नहि अछि जे प्रीति ठाकुरक साहित्यिक विधा मे ई नवसृजन नवपीढ़ी कैँ अपन संस्कृति, अपन जड़ि, माटि-पानि सँ जोड़य के अद्भुत प्रयास अछि। हिनक चित्रकथा शैली अंतरराष्ट्रीय मंच पर विश्वसनीय एवं सराहनीय एकटा निस्सन स्थान बनेलनि जे वास्तव में स्तुत्य अछि।

पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा । पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥

खण्ड-2- गजेन्द्र ठाकुर

मैथिलीक डिजिटल युगक निर्माताः गजेन्द्र ठाकुर

कैलाश कुमार ठाकुर

मैथिली भाषा-साहित्यक इतिहास अपन विशिष्टता आ समृद्धिसँ भरल-पूरल अछि। मैथिलीक ई विशिष्टता ओ समृद्धि बौद्धसिद्ध सहित कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, गोविन्ददास, मल्लराजवंशी विद्वान राजा सभक कृति आन भाषा-भाषी समाजकेँ 12 हजार वर्ष बाद विस्फोट भेल इथियोपियाक 'हेली गुब्बी' नामक ज्वालामुखी सदृश प्रतीत भेल होयतनि। तेँ, तऽ मैथिलीक ओहि साहित्य-सृजन ओ सर्जक सभकेँ देखि चैतन्य महाप्रभु, रवींद्रनाथ टैगोर, रामानंद राय सदृश्य परवर्ती साहित्यकार सभ अपन-अपन स्थानीय लोकभाषामे साहित्य सृजन आरम्भ कऽ स्थानीय लोकजनक भाषा-साहित्यकेँ जगजियार कएलथि। मनबोधक तुरंत

बाद आधुनिक युगमे चंदा झा सहित आनेको लेखक गद्य विधाक माध्यमे मैथिलीकेँ विस्तार देलाह। ई विस्तार भाषाक लेल सेहो भेलै आ साहित्य लेल सेहो।

वर्तमान समयक साहित्यकार आशीष अनचिन्हार "प्रीति कारण सेतु बान्हल- Redefining Maithili" नामक पोथीक भूमिकामे कहैत छथि जे, "भाषाक विकास लेल ई आवश्यक छै जे अहाँ जाहि कालखंडमे छी, ताहि कालखंडमे बाँकी आन विकसित भाषाक जे प्रगति छै, से प्रगति अहाँक भाषामे हो, ताहि लेल अहाँ की केलियै?" अनचिन्हारक उपरोक्त प्रश्न दू देशक सीमामे विभाजित मिथिला-मैथिली भाषासेवी, संरक्षक ओ साहित्यकार लग बहुत बड़का चुनौती रूपेँ ठाढ़ अछि, सदाक लेल। कारण, भारतमे अंग्रेजी आ हिंदी मिथिला पर साकारात्मकताक अपेक्षा नाकारात्मक रूपेँ बहुत हावी भऽ मिथिला-मैथिलीक भूमिकेँ जर्जर कऽ रहल छै, आ नेपालमे अंग्रेजी, हिंदी आ नेपालीसँ एहने अवस्था भेल जा रहल अछि। अर्थात्, दूनू पारमे मैथिलीक व्यापक स्वरूपकेँ सुनियोजित रूपेँ उपेक्षा करैत शिक्षा-शिक्षणमे अंग्रेजी, हिंदी आ नेपालीक प्राथमिकता तथा औपचारिक प्रयोगसँ मिथिलाक संतान सभ अपन मातृभाषासँ कटल-छँटल जा रहल अछि। खास कऽ हिंदी, नेपाली, अंग्रेजी भाषाक फिल्म, इन्टरनेट, सोसल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात् आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) पर सहज पहुँच आ प्रयोगक कारणेँ मिथिला-मैथिलीक कटनी-छँटनी आर बेसी तीव्र रूपेँ बढ़ि रहल अछि। जाहि कारणे, मिथिला-मैथिलीक अपन निजत्व, हजारो सालक गौरवमय ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-संस्कार ओ व्यवहारादि नाश भऽ रहल अछि तथा एहिठामक संतान सभ संस्कारहीन-चेतनाहीन भऽ महेन्द्र मलंगीयाक नाटक 'छुतहा घैल'क एकटा पात्र

'छद्म संन्यासी' जकाँ अपन मातृभाषा मैथिलीकेँ विकृत रूपेँ प्रयोग करैत स्वयं नाश करैत हिंदी अंग्रेजी तथा नेपालीक पिछलग्गू (जकरा अपन मातृभूमि मातृभाषा साहित्य संस्कृति सभ्यताक ज्ञान नै हो वा तिरस्कार ककऽ चलैत हो) बनैत जा रहल अछि कहब अतिशयोक्ति नै होएबाक चाही।

सम्भवतः अंग्रेजी, हिंदी, नेपाली भाषाक क्रेजसँ मिथिलाक भविष्यक दुर्गतिकेँ वर्तमानमे देखि-अकानि साहित्यकार ओ भाषाशास्त्री गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषा साहित्य तथा एकर संरक्षण संवर्धन ओ विकासक क्षेत्रमे इन्टरनेटक माध्यमे बहुत महत्वपूर्ण काज सभ विगत 26 वर्षसँ करैत आबि रहल छथि। साहित्यकार ओ सम्पादक अनचिन्हार महोदय हुनकर काज सभकेँ अपन पुस्तक 'प्रीति कारण सेतु बान्हल- Redefining Maithili' मे बुंदागत रूपेँ उल्लेख कएने छथि। जाहि काज सभमे सँ चारि-पाँच गो काज हमरा बहुत महत्वपूर्ण लागि रहल अछि जे सभक सामर्थसँ पृथक प्रतीत होछि। कारण ओहि काज सभकेँ करबामे गजेन्द्र जीक अपन श्रम, समय, मेहनति ओ अर्थ निश्चिते लागल होएतनि, मुदा ओकर उपलब्धि की भेटलनि, से एखन धरि कोनो जनतब नै भेटल अछि। भऽ सकैए जे भविष्यमे ई बात सभ पता चलत। मिथिला ओ मैथिली भाषा साहित्यकेँ विभिन्न तरहेँ इन्टरनेटसँ जोड़ि विश्वव्यापी तथा सभक पहुँच योग्य बनौलथि, तथा एखनो 26 वर्ष बादो अपन सामर्थकेँ सार्थक रूप दऽ आगा बढ़ाइए रहल छथि। चारि-पाँचटा काज हमरा जे बहुत महत्वपूर्ण आ उपयोगी लागि रहल अछि, ओ ई छै-

(क) इंटरनेटपर मैथिली भाषाकेँ सर्वप्रथम अनलथि।

(ख) मैथिली भाषा साहित्य सृजन ओ अध्ययन लेल विश्वव्यापी

संजाल (www.videha.co.in) क निर्माण केलथि। गजेन्द्र ठाकुर मैथिली ई-पत्रिका 'विदेह'केँ एगारहटा लिपिमे (देवनागरी, तिरहुता, ब्रेल, कैथी, नेवाड़ी, आइ.पी.ए, ब्राह्मी, खरोष्ठी, उर्दू, तिब्बती एवं तिब्बती-उमे) प्रकाशित करैत छथि।
(ग) मैथिली भाषामे विकिपीडियाक निर्माण।
(घ) मैथिलीमे डिजिटल पुस्तकालय, कम्प्यूटर / मोबाइल आधारित शब्दकोश तथा गूगल ट्रांसलेशनक निर्माण।
(ङ) पञ्जीकेँ सार्वजनिक रूपेँ सभक लेल डिजिटलीकरण कएलथि तथा पोथी रूपमे सेहो एकरा प्रकाशन कएलथि।
मैथिली भाषा साहित्यकेँ इन्टरनेटसँ जोड़बाक काजक आरम्भ गजेन्द्र जी 2000 ई. मे मैथिलीमे 'भालसरिक गाछ' नामक ब्लाग लेखनीसँ शुरू कएलथि, एहि ब्लागकेँ 2008 ई. सँ विदेह (www.videha.co.in) रूपमे रूपांतरण कऽ इन्टरनेटक माध्यमसँ ई-जर्नल रूपमे हरेक मासक 1 आ 15 तिथिकेँ नियमित प्रकाशन करैत आबि रहल छथि। एहि पाक्षिक ई-जर्नल पत्रिकाकेँ संयुक्त राष्ट्र संघसँ आईएसएसएन संख्या (ISSN 2229-547X) प्राप्त अछि आ विदेहसँ पहिने कोनो मैथिली पत्रिका लग ISSN नै छलै मने विदेह पहिल अछि ISSN लेल मैथिलीमे। विदेह मात्र मैथिली भाषा साहित्य लेल नै अपितु सम्पूर्ण विद्वान, शोधकर्ता, साहित्यकार ओ आम लोक जनक लेल बहुत-बहुत महत्वपूर्ण, उपयोगी ओ अति आवश्यक सिद्ध भऽ रहल अछि। कारण, विदेहक वैश्विक उपलब्धताक कारण पहिल बेर मैथिलीक लेखक आ पाठक भौगोलिक सीमाक बन्धनसँ मुक्त छथि आ कखनो कोनो समयमे इन्टरनेटक माध्यमसँ उपलब्ध अछि। एखन धरि सांगोपांग, 350-400 सँ बेसी नव आ पुरान लेखक सभकेँ 'विदेह' विश्वव्यापी मंच

प्रदान कएने अछि। मैथिली भाषा-साहित्यक लिखित स्वरूपकेँ संरक्षण सम्वर्द्धन तथा विकासमे गार्जियन रूपी भूमिका विदेह (www.videha.co.in) जाहि तरहेँ निर्वाह कऽ रहल अछि, ओहि स्तरक उच्चस्तरीय अभिभावक रूपी भूमिका वर्तमानमे सम्भवतः आर कोनो प्लेटफोर्म नै निर्वाह कऽ पाबि रहल अछि। निश्चिते एहि उच्चस्तरीय अभिभावक रूपी प्लेटफोर्मक आधारस्तम्भ सम्पादक गजेन्द्र जी, अनचिन्हार जी सभ छथि। जाहि लेल मिथिलाक चेतन-लोकजन सदैव प्रत्यक्ष ओ परोक्ष रूपेँ आभारी छथि।
मैथिली भाषा-साहित्य लेल इन्टरनेटक माध्यमसँ बहुत महत्वपूर्ण ओ अति आवश्यक काज जे गजेन्द्र जीक माध्यमे भेल अछि, ओ अछि मैथिलीमे विकिपीडियाक निर्माण। एहि निर्माणक अंतिम समयमे राजेश रंजनजीक सहयोग सेहो भेटल छै। अक्टूबर 2014 ई. मे मैथिली विकीपीडिया लाइव भऽ औपचारिकता ग्रहण कएलक। जाहि लेल गजेन्द्र जी 2008 सँ आधारभूत काज सभ करैत आबि रहल छलाह। गजेन्द्र जी लग आएल मैथिली विकीपीडियाक एडमिन बनबाक प्रस्तावकेँ समयक अभावक कारणेँ गजेन्द्र जी राजेश जीसँ मंत्रणा कए नेपालक बिप्लव आनंदकेँ एडमिन बनौलथि। जे विप्लव आनन्द आब मैथिली विकिपीडिया लेल गजेन्द्र जी द्वारा कएल गेल सम्पूर्ण काजक श्रेय स्वयं लेबऽ चाहि रहल छथि, जे की दुर्भाग्य अछि मिथिला-मैथिली लेल। कारण एहने-एहने लोकक आगा प्रमाण सहित जखन सत्य-तथ्य राखल जाइछ, तऽ तिलमिला कऽ मिथिला-मैथिलीक विरुद्धमे बहुत रास गलत काज सभ करऽ लगै छथि, जे गलत काज सभ मात्र मिथिला-मैथिली लेल नै अपितु मिथिलाक आम लोकजनकेँ अपने मातृभूमि मिथिला ओ मातृभाषा मैथिली लेल विक्षिप्त-काल बना दैत छै। तेँ, गजेन्द्र ठाकुर ओ 'विदेह'

टीमकेँ एहि विषयमे सावधान रहबाक आवश्यकता छै। गजेन्द्र ठाकुर जी स्वयं आ अपन नेतृत्वमे मैथिली विकिपीडियाक पहिल बीजारोपण कएलथि। ई मात्र एकटा वेबसाइट बनएबाक काज नै छल, बल्कि मैथिली भाषाक अस्मिताकेँ डिजिटल युगमे सुरक्षित करबाक एकटा पैघ संघर्ष छल। कारण कोनो काजकेँ शून्यसँ आरम्भ करब आ ओकरा एकटा उच्चस्तरीय सफल बिन्दु धरि पहुँचायब सहज नै होइछ। 2007-08 ई. क आसपास जखन विश्वक प्रमुख भाषा सभ विकिपीडिया पर अपन स्थान बना कऽ मजबूत भऽ रहल छल, तखन मैथिली अपन अस्तित्वक लेल संघर्ष कऽ रहल छल। गजेन्द्र ठाकुर एहि बातकेँ गम्भीरतासँ अनुभव कएलनि, जे जौँ मैथिलीकेँ भविष्यक पीढ़ीसँ जोड़ब अछि, तऽ एकरा 'इन्टरनेटक ओपन सोर्स (Open Source) ज्ञानक मंच पर आनब अनिवार्य अछि। गजेन्द्र जीक प्रयास सँ मैथिली विकिपीडियाक 'इनक्यूबेटर' (Incubator) चरण शुरू भेल। इनक्यूबेटर एकटा एहन प्रयोगशाला जकाँ होइछ, जतय कोनो भाषाकेँ अपन उपयोगिता सिद्ध करय पड़ैछ। गजेन्द्र जी अपन व्यक्तिगत व्यस्तताक बावजूद प्रतिदिन नवीन लेख लिखब आ पुरान लेख सभकेँ परिमार्जित करब शुरू कएलनि। सम्भवतः हुनका ज्ञात रहनि जे कोनो संस्थाक मादे ई काज करब आर बेसी झंझट-परेशानी हेतै, तैँ मात्र अपन व्यक्तिगत संघर्षसँ एहि काजकेँ आगा बढ़ौलथि।

मैथिलीक लेल विकिपीडिया पर सभसँ पैघ चुनौती छल—लिपि आ मानकीकरण। ओहि समयमे देवनागरी लिपिमे मैथिली टाइप करब आ यूनिकोड (Unicode)क सही प्रयोग करब आम लोक लेल बहुत कठिन छल। गजेन्द्र जी स्वयं टेक्निकल बात सभ सिखलथि आ दोसर दिस अपन साथी सभकेँ सेहो एहि काज प्रति प्रोत्साहित

कएलथि। विकिपीडियाक इन्टरफेस (Interface) अंग्रेजीमे छल। तैँ ओ अथक परिश्रम कऽकऽ विकिपीडियाक 'सिस्टम मैसेज' आ टेक्निकल शब्द सभक मैथिली अनुवाद कएलनि, जाहि सँ एकटा साधारण मैथिली भाषी सेहो साइट खोलए तऽ ओकरा अपन प्रतीत होय। "खोजू", "संपादन करू", "इतिहास देखू" जकाँ शब्द सभकेँ ओ मानक स्वरूप देबाक प्रयास कएलथि। एहि काजमे हिनका द्वारा संचालित 'विदेह' एहि संघर्षक आधारस्तम्भ बनल। 'विदेह'क माध्यमसँ हिनका लग पहिनहिये सँ मैथिलीक कतेको दुर्लभ सामग्री आ लेख सभ उपलब्ध छल। गजेन्द्र जी ओहि सामग्री सभकेँ विकिपीडियाक अनुकूल बना कऽ 2008 ई. सँ लऽ कऽ 2014 धरि अपलोड कएलथि। एहि अवधिमे मैथिली विकीपीडियाकेँ लाइव करबाक लेल ओ एकटा एहन वातावरण तैयार कएलथि, जतए मैथिली भाषाक प्राचीन साहित्य स्वरूप आ आधुनिक साहित्य ओ सूचना सभ एक-दोसरसँ पूर्ण सामञ्जस्य स्थापित कऽ सकए। विकिपीडियाक नीति अनुसार, कोनो भाषाकेँ 'लाइव' (स्वतंत्र डोमेन) देबा लेल किछु अति आवश्यक आ कड़ा शर्त अछि, जेना नियमित संपादन करय वाला संपादक सभक संख्या, लेखक सभक गुणवत्ता आ मात्रा, निरन्तरता। गजेन्द्र जी कतेको वर्ष धरि असगरे आ अपन समर्पित टीमक संग 'एक्टिव एडिटर'क भूमिका निर्वाह कएलथि। कम लेखक कारणे कतेको बेर एहनो समय सेहो अएलै जखन विकिपीडिया प्रशासन द्वारा एहि प्रोजेक्टकेँ बंद करबाक आशंका प्रतीत कराओल गेलनि, मुदा गजेन्द्र जी एहि ठाम राजेश रंजन जीक सहयोग लेलथि संगहि हिनकर टीमक सघन परिश्रम आ यथेष्ट काज सभ मैथिली विकीपीडियाकेँ सफलतापूर्वक लाइव करबाक लेल बाध्य कऽ देलकनि। ओ मिथिला आ विश्वक कोना-

कोना सँ स्वयंसेवक सभकेँ जोड़लथि, कार्यशाला निर्माण कएलथि आ ईमेल/सोशल मीडियाक माध्यमसँ लोक सभकेँ संपादन लेल प्रेरित करैत रहलथि। गजेन्द्र जीक सात-आठ वर्षक निरन्तर परिश्रमक फल 14 अगस्त 2014 केँ भेटलनि, जखन विकिमीडिया फाउंडेशन मैथिली विकिपीडियाकेँ पूर्णतः 'लाइव' घोषित कऽ देलक। जे मैथिली भाषा-साहित्य लेल एकटा ऐतिहासिक दिन छल। आब www.mai.wikipedia.org नाम सँ मैथिलीक अपन एकटा विश्वकोश अछि। एहि सफलताक पाछाँ गजेन्द्र ठाकुरक ओ दृष्टिकोण अछि, जहिमे ओ मैथिलीकेँ मात्र गीत ओ कविताक भाषा नैं, अपितु ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-संस्कार, अन्तरिक्ष, भूगोल, कृषि, अध्यात्म लगायत आओर बहुत रास विषय सभ जे प्रत्यक्ष ओ परोक्ष रूपेँ एहि ठामक जनजीवन ओ जगतसँ जुटल अछि, ताहि दिस निर्दिष्ट करैत छथि।

विकिपीडिया लाइव भेलाक बादो गजेन्द्र जी शान्त नैं छथि। एखनो ओ एहि पर ध्यान दऽ रहल छथि जे लेख सभमे सन्दर्भ (Citations) सही हो। ओ अपन व्यक्तिगत संग्रहसँ हजारो किताबक सन्दर्भ दऽ कऽ लेख सभकेँ प्रमाणिक बनौने छथि। हिनक संघर्षक कारणे आई मैथिली विकिपीडिया पर 15,000 सँ बेसी लेख उपलब्ध अछि, जे इंटरनेट पर मैथिलीक सबसँ पैघ भण्डार अछि। गजेन्द्र जी द्वारा 'मैथिली विकिपीडिया' लेल कएल गेल काज कोनो एकेडेमी द्वारा कएल गेल काजसँ पैघ सिद्ध भऽ रहल अछि कहब सम्भवतः अतिशयोक्ति नैं होइत। जाहिमे ओ अपन समय, धन आ ऊर्जा लगा कऽ मैथिलीकेँ डिजिटल संसारमे ओ स्थान दियौने छथि, जाहि लेल वर्तमान ओ भविष्यक पीढ़ी हिनक ऋणी रहतनि। गजेन्द्र ठाकुर जी सिद्ध कऽ देलनि, जे एकटा व्यक्ति अपन दृष्टिकोण ओ

संकल्पक आधारेँ अपन मातृभाषाकेँ आन विकसित ओ वैश्विक भाषा सभक समक्ष सम्मानपूर्वक स्थापित कऽ सकैछ। एनाहिते मैथिली भाषा साहित्य लेल गजेन्द्र जी द्वारा एकटा आर बहुत महत्वपूर्ण काज जे भेल अछि ओ अछि इन्टरनेट पर मैथिलीमे डिजिटल पुस्तकालय, कम्प्यूटर / मोबाइल लेल शब्दकोश तथा गूगल ट्रांसलेशनक निर्माण।

मैथिली भाषा-साहित्यक इतिहास हजार वर्षसँ बेसी पुरान अछि। मुदा 21म शताब्दीक आरम्भमे जखन सूचना उद्योगमे क्रान्ति भेल, तखन मैथिलीक समक्ष अस्तित्वक रक्षा आ आधुनिकताक संग तालमेल बैसाएब एकटा पैघ चुनौती छल। एहन समयमे गजेन्द्र जी मैथिलीक पारम्परिक सीमासँ बाहर निकालि कऽ एकरा डिजिटल संसारक मुख्यधाराक भाषा बनएबाक संकल्प लेलथि। वर्ष 2008 सँ हुनका द्वारा कएल गेल काज मैथिलीक लेल 'डिजिटल नवजागरण' (Digital Renaissance) साबित भऽ रहल अछि। कारण, वर्ष 2008 मे जखन इंटरनेट पर मैथिलीक उपस्थिति बहुत नगण्य छल, तखन ओ 'विदेह'क माध्यमसँ मैथिली भाषा साहित्य लेल एकटा विशाल डिजिटल मञ्च तैयार कएलथि। ओ मैथिलीक दुर्लभ पोथी, प्राचीन पाण्डुलिपि आ समकालीन साहित्यिक कृति सभकेँ स्कैन कऽ डिजिटल स्वरूप देलथि। एकर मुख्य उद्देश्य ई छल जे विश्वक कोनो कोनामे बैसल मैथिलजन तथा मैथिली भाषा साहित्यक अध्येता ओ अनुसन्धानकर्ता लोकनि मैथिली भाषामे मैथिली साहित्य पढ़ि सकए। जाहि लेल पाक्षिक ई-पत्रिकाः 'विदेह'केँ नियमित प्रकाशन कऽ एकटा ग्लोबल प्लेटफोर्म बनौलथि। तेँ आब ई एकटा पत्रिका मात्र नै, अपितु मैथिलीक पहिल व्यवस्थित 'डिजिटल आर्काइव' (Digital Archive) बनि गेल अछि। अर्थात्

जाहिठाम मैथिली भाषा साहित्यक डिजिटल सामग्री सभ भविष्य लेल व्यवस्थित रूपेँ संग्रहित ओ संरक्षित अछि। भाषाक जीवंतता एकर शब्द भण्डार आ एकर सहज रूपेँ प्रयोग कऽ सकबाक प्रणाली पर सेहो बहुत निर्भर करैछ। तेँ, सम्भवतः गजेन्द्र जी मैथिलीक विकास लेल डिजिटल शब्दकोशक निर्माण कऽ इन्टरनेट पर उपलब्ध करौलथि। जे मैथिली शब्दकोश मैथिली-मैथिली, मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली प्रिंट एवं डिजिटल स्वरूपमे उपलब्ध अछि। ओ बुझैत छथि जे जौँ मैथिलीकेँ कम्प्यूटर आ मोबाइलक सर्च इंजनमे लएबाक अछि, तऽ एकरा युनिकोड आधारित बनाबय पड़त। सम्भवतः ई बहुत जटिल प्रक्रिया आ समय खाय बला काज अछि। तथापि, विदेह टीमक दिन-रातिक मेहनतिक कारणेँ आइ मोबाइल आ कम्प्यूटर पर मैथिली टाइप करब आ अर्थ खोजब सहज रूपेँ उपलब्ध भेल अछि।

वीकीपीडिये जकाँ गूगल ट्रांसलेटमे मैथिलीक शामिल होयब सेहो कोनो सामान्य घटना नै अछि। एकर पाछू गजेन्द्र ठाकुर आ हिनक टीमक दिन-रातिक मेहनति मात्र पर्याप्त नै छल। एकरा लेल कम्प्यूटर सम्बन्धी अध्ययन ओ दक्षता नितान्त आवश्यक अछि। गूगल जेहन विश्वव्यापी आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित सिस्टमकेँ भाषा सिखाबए लेल 'पैरलल कोर्पस' (Parallel Corpus) आवश्यक होइछ। पैरेलेल कोर्पस अन्तर्गत एकटा मूल भाषाक (Source Language) पाठ आ ओकर दोसर भाषामे कएल गेल अनुवाद (Target Language) केँ एक दोसरक समानान्तर (Side-by-side) राखल जाइछ। गजेन्द्र जी 'विदेह' क माध्यमसँ लाखो मैथिली वाक्यक डेटा तैयार कएलनि तथा ओ व्यक्तिगत स्तर पर आ विभिन्न मंचक माध्यमसँ गूगल कम्युनिटीमे मैथिली अनुवादक

शुद्धता जाँचबाक लेल लोक सभकेँ प्रेरित कएलथि। हिनकहि प्रयासक परिणाम थिक जे आइ कोनो विदेशी वा गैर-मैथिल व्यक्ति गूगलक माध्यमसँ मैथिली बुझि सकैछ। गजेन्द्रजीक ई प्रयास सभ आइ मैथिलीकेँ इंटरनेटक दुनियामे एकटा सम्मानित स्थान दियौने अछि। डिजिटल पुस्तकालय, मोबाइल शब्दकोश आ गूगल ट्रांसलेशनमे गजेन्द्र जी द्वारा कएल गेल काज मैथिलीक भविष्य लेल आधारशिला अछि। विदेह टीम ई प्रमाणित कऽ देने अछि जे कोनो भाषा तखने बाँचि सकैछ, जखन ओ अपन गौरवशाली इतिहासकेँ आधुनिक टेक्नोलोजीक संग लयबद्ध कऽ लैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा कएल गेल काज सभक अध्ययनसँ ज्ञात होइछ जे मैथिली भाषा साहित्य आ संस्कृतिक क्षेत्रमे हिनक योगदान बहुआयामी अछि।

मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध (Genealogy)क संरक्षण, संवर्द्धन आ एकरा आधुनिक समयक अनुसार व्याख्या करबामे हिनकर भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण अछि। हिनक अनुसार पञ्जी केवल वंशावलीक विवरण मात्र नैं, बल्कि ई मिथिलाक एकटा विशाल ऐतिहासिक दस्तावेज अछि। ओ ई मानैत छथि जे पञ्जी व्यवस्था मिथिलाक समाजशास्त्रीय संरचनाक आधार अछि, जाहिमे रक्तक शुद्धता आ पारिवारिक इतिहासक सूक्ष्म विवरण सुरक्षित अछि, जकर अध्ययन बिना मिथिलाक मध्यकालीन इतिहासक पूर्ण ज्ञान असम्भव अछि। पञ्जी प्रबन्धक क्षेत्रमे हिनकर सबसँ पैघ योगदान एकर दुर्लभ पाण्डुलिपि सभक संरक्षण अछि। ई पञ्जीकार सभक संग मिलि कऽ प्राचीन ताड़पत्र आ कागज सभ पर लिखल वंशावली सभकें एकत्रित कएलनि। आधुनिक युगमे पञ्जीक प्रासंगिकता बनल रहय, एहि लेल ओ एकरा डिजिटलीकरण (Digitization) कएलथि

तथा भविष्यक पीढ़ी लेल एहि ज्ञानक भण्डारकेँ इंटरनेट आ डेटाबेसक माध्यमसँ सुरक्षित कएलथि। पञ्जी व्यवस्थाकेँ मात्र परम्परावादी दृष्टिकोणसँ नै, अपितु एकरा वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ सेहो देखैत छथि। ओ एहि बात पर जोर दैत छथि जे पञ्जीमे जे "मूल-ग्राम" आ "शाखा"क अवधारणा अछि, ओ आनुवंशिकी (Genetics) आ सामाजिक प्रवासक अध्ययन लेल बहुत उपयोगी अछि। हिनक लेखनमे पञ्जीक माध्यमसँ मिथिलाक विभिन्न जातिक प्रवास आ वैवाहिक सम्बन्धक सूक्ष्म विश्लेषण भेटैत अछि। मुदा ओ एहिमे व्याप्त विसंगति सभ पर सेहो प्रहार करैत छथि। ओ मानैत छथि जे पञ्जी व्यवस्थाकेँ किछु खास वर्ग द्वारा अपना धरि मात्र सीमित राखब गलत अछि। एकरा व्यापक रूप सँ समस्त मिथिलाक समाज लेल समावेशी बनयबाक आवश्यकता छै। ओ पञ्जीकार सभक आर्थिक स्थिति आ एहि विद्याक ह्रास पर सेहो चिंता व्यक्त करैत छथि। गजेन्द्र ठाकुरक पञ्जी सम्बन्धी काज ई सिद्ध करैछ जे पञ्जी केवल विवाहक लेल "अधिकार पत्र" प्राप्त करबाक साधन मात्र नै अछि, बल्कि ई मिथिलाक अस्मिता आ पहिचान (Identity)क प्रतीक अछि। ओ अपन विभिन्न पोथी आ आलेखक माध्यम सँ पञ्जी व्यवस्थाकेँ आधुनिक भाषाविज्ञान आ समाजशास्त्र संग जोड़ि कऽ एकर एकटा नव परिभाषा देने छथि।

गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादन आ परिकल्पनामे संचालित 'विदेह' (पाक्षिक ई-पत्रिका) मैथिली भाषा साहित्यकेँ बहुत फराक विस्तार देने अछि। कोनो भाषाक जीवित रहबाक लेल मात्र ओकर मौखिक प्रयोग पर्याप्त नै होइछ, ओकरा लिखित परम्परा आ आधुनिक टेक्नोलोजी सँ जोड़ब अनिवार्य होइछ। मैथिली भाषाक संदर्भमे गजेन्द्र जी एहने काज कएने छथि। ओ मैथिली भाषा साहित्यकेँ

मात्र मैथिली भाषी लोकक बीच मैथिली पुस्तक सभमे सीमित नै रहऽ देने छथि। बल्कि एहि भाषाक दायराकेँ बहुत फराक आ विस्तार कऽ 'डिजिटल' आ 'बहुलिपि' स्वरूप प्रदान कऽ एकर स्तरीयताकेँ वैश्विक बनौने छथि। हिनक सम्पादनमे प्रकाशित भऽ रहल 'विदेह' पत्रिका आजुक समयमे विश्वक एकमात्र एहन पत्रिका थिक, जे एगारह टा लिपिमे प्रकाशित भऽ रहल अछि जे भाषाक समावेशिताक अद्भुत कीर्तिमान स्थापित कएने अछि। एकर सभ सँ क्रान्तिकारी पक्ष अछि- बहुलिपि प्रकाशन। सम्भवतः गजेन्द्र ठाकुर ई अनुभव कएने हेताह जे मैथिलीक जड़ि बहुत गहींर अछि आ इतिहासमे एकर प्रभाव क्षेत्र मात्र मिथिलाक भौगोलिक सीमा धरि सीमित नै रहए। ओना, एहि सम्बन्धमे स्वयं हुनके सँ हुनक विचार ओ दृष्टिकोण प्रकाशित होयब महत्वपूर्ण हएत। मैथिलीक अपन मौलिक लिपि 'तिरहुता' (मिथिलाक्षर) विलोप भऽ रहल छल। गजेन्द्र ठाकुर अपन पत्रिकामे तिरहुताकेँ अनिवार्य स्थान दऽकऽ एकरा पुनर्जीवित कएने छथि। संगहि देवनागरीमे सेहो प्रकाशन जारी राखि कऽ ओ पाठकक एकटा पैघ वर्गकेँ सहज रुपेँ जोड़ने छथि। ब्राह्मी आ खरोष्ठी जेहन प्राचीन लिपि सभमे मैथिलीक पाठ प्रस्तुत करब कोनो सामान्य काज नै अछि। ई शोधार्थी सभक लेल एकटा अमूल्य उपहार थिक। गजेन्द्र ठाकुरक ई प्रयास सिद्ध करैत अछि जे मैथिलीक सम्बन्ध भारतक प्राचीनतम सभ्यता सँ जुड़ल अछि। मिथिला-मैथिली भाषा साहित्यक सम्बन्ध प्राचीन कालसँ नेपालक काठमाण्डू उपत्यका, नेवार-नेवारी भाषा साहित्य समुदाय संग तथा तिब्बत संग सेहो रहल अछि। नेवारी, तिब्बती आ तिब्बती-उमे लिपिमे 'विदेह'क प्रकाशन कऽ कऽ गजेन्द्र ठाकुर ओहि विस्मृत ऐतिहासिक सम्बन्धकेँ पुनः ताजा कऽ देने छथि। ई मैथिलीक 'ट्रांस-

हिमालयन' पहिचानकेँ उजागर करैत अछि।
भाषा साहित्यक लोकतान्त्रिकरणक क्षेत्रमे 'विदेह'क ब्रेल संस्करण एकटा मीलक पत्थल अछि। दृष्टिबाधित मैथिली भाषी तथा आन उत्साही लोक सेहो मैथिली भाषाक साहित्य पढ़ि सकथि, ई विचार गजेन्द्र ठाकुरक संवेदनशीलताक दृष्टिकोणकेँ दर्शबैत अछि। तेँ ई अपन उपन्यास 'सहस्रबाढ़नि' केँ ब्रेल लिपिमे सेहो प्रकाशित कएलथि। एकरा मात्रे एकटा प्रकाशित साहित्य कृति रूपेँ नै देखल जा सकैछ। मैथिलीक पहिल ई ब्रेल पोथी ई सिद्ध करैछ जे गजेन्द्र जी मैथिली भाषा साहित्य लेल कतेक संवेदनशील छथि। हुनकर काज समावेशी मैथिली साहित्यक निर्माणक दिशामे एकटा महत्वपूर्ण डेग थिक। उर्दू लिपिमे मैथिलीक उपस्थिति ई संदेश स्थापित करैछ जे मैथिली भाषा साहित्य कोनो एकटा जाति-विशेष एवं कोनो एकटा धर्म-सम्प्रदाय विशेषक मात्र नै, अपितु एकटा विशाल भूगोलक अछि। कैथी लिपि, जे कखनो मिथिलाक जनमानस आ कचहरीक मुख्य लिपि छल, ओकरा पुनर्जीवित कऽ कऽ गजेन्द्र ठाकुर विलोप भऽ रहल दस्तावेजीय परम्पराकेँ सेहो सहेजने छथि। गजेन्द्र ठाकुर द्वारा कएल जा रहल ई 'बहुलिपि यज्ञ' मैथिली साहित्यक इतिहासमे स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत। ओ ई प्रमाणित कऽ देलनि जे मैथिली कोनो संकीर्ण मानसिकता बला लोकजनक भाषा नै, बल्कि एहिमे एकटा विशाल वैश्विक भाषाक सामर्थ्य समाहित अछि। 'विदेह' पत्रिका आजुक भाषा-विज्ञानक एकटा प्रयोगशाला बनि गेल अछि। गजेन्द्र ठाकुर आ विदेह टीमक निस्वार्थ आ अथक परिश्रमसँ जे उच्च ओ प्रमाणिक वैश्विक स्थान मैथिलीके इन्टरनेट ओ डिजिटल संसारमे भेटल अछि, ओहि लेल सम्पूर्ण मिथिला जगत हिनका सभक ऋणी रहत। हुनकर ई काज

वर्तमान ओ भविष्यक पीढ़ी धरि मैथिली भाषाक संरक्षण, सम्वर्द्धन ओ विकास लेल प्रकाश-स्तम्भक काज करैत रहत। गजेन्द्र ठाकुर जी आ 'विदेह' (www.videha.co.in) मैथिली भाषा साहित्यक क्षेत्रमे ओ काज कएने छथि, जाहिकेँ अनदेखल करब असम्भव भऽ गेल अछि। जखन मैथिलीक लेल इन्टरनेट पर नाममात्रक सामग्री छल, तखन गजेन्द्र जी अपन दुरदर्शिता ओ दृढ़तासँ 'विदेह'केँ एकटा एहन मंच बनौलथि, जतय आब मैथिली भाषा साहित्यक हजारो साहित्यक डाटा वा आधार सामग्रीक रूपमे इन्टरनेट पर संरक्षित अछि। जाहि साहित्यिक सामग्री सभकेँ डाटाक रूपमे जेमिनी-चैटजीपीटी जेहन कम्प्यूटर-मोबाइल एप्लिकेशन संग साझा कऽ नव-नव लेख/आलेख लिखल जा सकैछ वा नव आलेख लिखबामे बहुत-बहुत हद धरि बहुत सहयोगी भूमिका खेलैछ। जाहि सँ मैथिलीयो भाषा-साहित्यक विकासमे नव आयाम खुलल अछि, जेकरा समान्य नै मानल जा सकैए। एकर पूराक पूरा श्रेय मात्र गजेन्द्र ठाकुर, www.videha.co.in तथा हिनकर टीमकेँ जाइत छनि।

मुदा, हमरा अनुभवमे, मैथिली भाषा साहित्यक संरक्षण सम्वर्द्धन ओ विकासक लेल ई मात्र आधा काज भेल अछि वा एकटा बहुत-बहुत महत्वपूर्ण आयाम सभकेँ एखनो मैथिलीमे नै खोलल गेल छै। गजेन्द्र ठाकुर, विदेह टीम ओहि आयामक भूमिकाकेँ छोट बुझि रहल छथि आ कि ओहि आयामकेँ खोलबाक तैयारीमे छथि; से हमरा नै बुझल। लेकिन हमरा दृष्टिमे बहुत महत्वपूर्ण आ उपयोगी अछि। मैथिली भाषा साहित्यक संरक्षण सम्वर्द्धन ओ विकासक लेल ओ आयाम अछि; सोशल मीडिया सभ पर पोडकास्ट, उच्च स्तरीय अन्तरवार्ता (भीडियो), सोशल मीडिया पर एकेडमिक स्तरक

विचार-विमर्शक रेकार्डिंग वा लाइव भीडियो पोस्ट, आ फिल्म निर्माण ओ प्रदर्शन। (फिल्म निर्माण ओ प्रदर्शनबला विषय विदेह टीम लेल आवश्यक नहियो भऽ सकैछ)। आइ समस्त उत्तर भारतमे साहित्यसँ सम्बन्धित बात-विचार बला भीडियो पोस्ट हो वा नै हो, मुदा समाज-राज्य, देश ओ विदेशसँ सम्बन्धित राजनीति, धर्म, विज्ञान, विवाद, हरेक घटना परिघटना लगायत विभिन्न रास विषय सभ पर हजारो युट्युब चैनल आ फेसबुक पेज सब द्वारा हिन्दीमे भीडियो बनाओल जा रहल छै आ सोशल मीडिया सभ खास कऽ यूट्यूब, फेसबुक जेहन अनेक प्लेटफोर्म सभ पर पोस्ट कएल जा रहल छै। जकर दर्शक सभ सब्सक्राइबरक रूपमे लाखो-करोडो़मे छै, जाहि सँ बहुत चैनल, पेज ओ संचालक सभकेँ लाखो-करोड़ोक आमदनी सेहो भऽ रहल छै। हिंदी छोड़ि उत्तर भारतक आन प्रमुख भाषा सभ कमजोर आ संकुचित होइत विलुप्त होयबाक दिस अग्रसर अछि। भाषाक विकास ओ विनाश सन्दर्भेँ देखल जाय तऽ मैथिलीक लेल सेहो विनाशक भयावह अवस्था उपरोक्त कारणसँ बहुत पहिने आबि गेल अछि। आश्चर्यक बात तऽ ई छै देश ओ विदेशमे रहल मिथिला-मैथिलीक हजारो-लाखो विद्वत वर्ग समेत सोशल मीडिया सभ पर ओहि हिन्दी-अंग्रेजी-नेपालीक भाषाक प्लेटफोर्म सभक सब्सक्राइबर रूपमे छथि, मुदा अपन मातृभाषा मैथिलीमे अपन सम्बन्धित पेशा वा विषय सभ पर निरन्तर भीडियो बना पोस्ट करबामे उदासीनता रखने छथि।

हिंदीक एहन बहुत रास यूट्यूब चैनल आ फेसबुक पेज सभ अछि, जाहि पर समसामयिक तथा हरेक प्रमुख राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय घटना-परिघटना पर भीडियो बनाओल जाइछ, 'लाइव डिस्कसन', सामूहिक चर्चा तथा अन्तरवार्ता सभ कएल जाइछ। जाहि कारण

समस्त उत्तर भारतमे हिंदीक बोलबाला बहुत प्रबल रूपेँ देखल जाइछ। मुदा, एहि मामलामे मैथिली कतऽ? जौँ, गजेन्द्र ठाकुर ओ विदेह टीम मैथिली भाषाक व्यापक आन्तरिक संरचना सभ (तथाकथित अंगिका, बज्जिका, ठेठी, जोलहा, किसानी आदि)केँ तथा एकर साहित्य सभकेँ संरक्षण, सम्वर्द्धन ओ विकास करऽ चाहैं छथि, तऽ उपरोक्त यूट्यूब चैनल आ फेसबुक पेज सदृश काज करबाक नितान्त आवश्यक अछि, ताहि विषय पर शीघ्र मन्थन कऽ आवश्यक डेग उठयबा दिस जोड़ देबहि पड़तनि। कोनो भाषामे समाज-राज्य ओ देश-दुनियाँक सभटा बात-विचार मात्र लिखित साहित्यमे नै समा सकैछ। एहि बातकेँ सम्भवतः बहुत रास मिथिला-मैथिलीक संतति सभ बुझै छथि, मुदा एहि दिस आवश्यक डेग बढयबा लेल कोनो संस्था वा व्यक्ति आगा नै आबि सकल छथि। आश्चर्यक बात ई छै जे 26 वर्ष पहिने मैथिली भाषा साहित्यक 'डिजिटल पुनर्जागरण'क एवं 'डिजिटल क्रान्ति'क आरम्भ करऽ बला गजेन्द्र ठाकुर आ विदेह टीम सेहो एहि महत्वपूर्ण विषयकेँ कोन आधारेँ छोड़ि देने छथि? जखन कि अपन बात रखबाक लेल, अपन इतिहास विश्वक समक्ष रखबाक लेल, सत्य-तथ्य आधारित अपन नैरेटिव गढ़बाक लेल अडियो-विजुअल माध्यम बहुत सशक्त माध्यम छै। आजुक समयमे भाषा-साहित्य-सूचना क्रान्तिक 'टेक्स्ट' (Text) चरण सँ बहुत आगा बढ़ि 'अडियो-विजुअल' (Audio-Visual) आ 'एकेडमिक विमर्श' (Academic Discourse)क युगमे पसरि विस्तार भऽ गेल अछि। मुदा, हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक तुलनामे मैथिलीक उपस्थिति मात्र लिखित रूपमेँ डिजिटल मंच पर कविता, कथा वा समाचार धरि सीमित रहि गेल अछि। जाहि कारण, मैथिली भाषा साहित्यक भूगोल पर दूतर्फी मात्रे नै

चौतर्फी आक्रमण भऽ रहल अछि। एक दिस हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषा लगायत आन भाषाक न्यूज चैनल, पोडकास्ट, विभिन्न प्रकारक अन्तरवार्ता, फिल्म ओ टेली सीरियल सभ मिथिलाक लोकजन आ शिक्षित-सम्पन्न लोक सभकेँ सेहो अपना दिस आकृष्ट करैत समाहित कएने जा रहल अछि, तऽ दोसर दिस मैथिलीक आन्तरिक संरचना सभकेँ विभिन्न छद्म नाम दऽ अपन-अपन स्वार्थ अनुरूप तोड़बामे लागल अछि। मुदा, चारि करोड़ सँ बेसी मैथिली भाषी लोकनिकेँ एहि घातक प्रहारसँ संरक्षण-सम्वर्द्धन करबामे कोनो ठोस डेग कोनो संस्था एवं व्यक्तिक द्वारा नै उठाओल जा रहल अछि। की इएह उदासीनता विदेह टीम सेहो पसारने छथि? श्रव्य-दृश्य (आडियो-भीडियो) माध्यमसँ विश्वकेँ मिथिलाक भूगोल संग जोड़ि कऽ राखए, तेहन प्लेटफोर्मक निर्माण नै विदेह टीम स्वयं कऽ रहल छथि वा नै तऽ कोनो दोसर माध्यमसँ करबा रहल छथि। व्यवस्थित आडियो-भीडियो एवं सोशल मीडियाक माध्यमसँ जीवन-जगतक हरेक विषय पर गम्भीर विमर्श, जतय दर्शन, भाषाशास्त्र, इतिहास आ समाजशास्त्र, ज्ञान-विज्ञान पर 'एकेडमिक' चर्चा हो, ओकर घोर अभाव मैथिलीमे एखनो व्याप्त अछि। जखन धरि मैथिली भाषी विद्वान, वैज्ञानिक सभ, डाक्टर, इंजीनियर, साहित्यकार गीतकार, नेता सभ भीडियोक माध्यमसँ विचार-विमर्श-वार्तालाप नै करताह, तखन धरि ओ मैथिली भाषा साहित्यक संरक्षण सम्वर्द्धन ओ विकासक कोनो खास महत्व आ उपयोगीता नै रहि जायत। हरेक विधाक वैज्ञानिक, हरेक विधाक डाक्टर, इंजीनियर, साहित्यकार, शिक्षक, गीतकार, नेता सभ लगायत जतेक पढ़ल-लिखल एवं प्रबुद्ध वर्ग, एवं मान्यजन लोक सभ होइछ, ओकरे शब्द, बोली, व्यवहार, सोचबाक, बजबाक तरीकाकेँ आम

लोकजन अनुसरण करैछ। जाहि कारण, कोनो राज्यक आम लोकजन सऽ लऽ कऽ विशिष्ट व्यक्ति सभ अपन मातृभाषा, साहित्य, संस्कार, सभ्यता, रोजगार-व्यवहार-व्यापार लगायत हरेक पक्षसँ जुटल रहैछ, आ एहि आधार पर कोनो राज्य सुरक्षित सेहो रहैछ। मुदा, कोनो प्रकाशन सभ पुस्तक छापि घर-घरमे किएक नै पठा दौ, विदेह टीम मैथिलीक ओरिजनल साहित्य लगायत संसारक हरेक साहित्यकेँ मैथिलीमे अनुवाद कऽ इन्टरनेट पर किया ने राखि दौ, मिथिलाक बीसो प्रतिशतो आम लोकजन साहित्यिक पुस्तक, वा इन्टरनेट पर जा कऽ साहित्य नै पढ़तै। सबटा भाषाक लगभग इएह स्थिति छै एहि मामलामे सम्भवतः। तैँ, आजुक समयमे सोशल मीडिया पर पोडकास्ट, उच्च स्तरीय अन्तरवार्ता (भीडियो), सोशल मीडिया पर एकेडमिक स्तरक विचार-विमर्श कएल गेल रेकर्डेड एवं लाइव भीडियो पोस्ट, आ फिल्म निर्माण ओ प्रदर्शन अति आवश्यक अछि।

मैथिली भाषा साहित्यक संरक्षण सम्वर्द्धन ओ विकासक लेल गजेन्द्र ठाकुर ओ विदेह टीम पोडकास्ट, उच्च स्तरीय अन्तरवार्ता (भीडियो), सोसल मीडिया पर एकेडमिक स्तरक विचार-विमर्श कएल गेल रेकार्डेड भीडियो पोस्ट 26 वर्ष बादो किया नै कऽ रहल छथि, से नै जानि। की एहि काजक लेल आवश्यक समय, उचित व्यक्ति वा सहकर्मी वा अर्थक अभाव छै? यदि रूपैया वा सहकर्मीक अभाव छै, तखन विदेह टीम विश्व भरिसँ फण्ड, डोनेशन वा दानक आधार पर उक्त काज किया नै कऽ रहल छथि? एहि द्वारे जे गजेन्द्र ठाकुर, अशीष अनचिन्हार आ विदेह टीम इमान्दार आ पारदर्शी होइतहु हिनका सभ पर पैसा खएबाक टैग लागि जेतनि? यदि ताहि विचार-भावक कारण विदेह टीम उक्त काज नै कऽ रहल छथि, वा

नै करबा रहल छथि, तऽ मिथिला-मैथिली भाषा साहित्य लेल ई बहुत बड़का दुर्भाग्य छै। कारण, सोशल मीडियाक जमाना छै, हरेक दान-डोनेशन आ खर्चक विवरण सोशल मीडिया पर साझा कएल जा सकैछ, जाहि सँ ककरो उपर लाञ्छना नै लगाओल जा सकैछ। बहुत रास एहन उदाहरणीय व्यक्तित्व सब अपन समाज-राज्य, देश-दुनिया, विश्वमे महत्वपूर्ण काज सभ डोनेशनक आधार पर करैत आबि रहल छथि। भारतक डा. सैय्यद रिजवान अहमद (वकील) ओहने व्यक्तित्वमे सँ एक छथि। गजेन्द्र ठाकुर जी आ हिनकर टीमक लग संसाधन, अनुभव आ विद्वान लोकनिक नेटवर्क अछि। हिनका एहि 'विजुअल' क्रान्तिमे सेहो नेतृत्व करबाक लेल किछु महत्वपूर्ण डेग उठाबहे पडतनि, यथा–

1) विदेह पोडकास्ट (The Videha Podcast): वर्तमान समय पोडकास्टक अछि। 'विदेह'कैं अपन एकटा आधिकारिक पोडकास्ट श्रृंखला शुरू करबाक चाही। एहिमे मात्र साहित्यकार नै, बल्कि मैथिलीभाषी समाजशास्त्री, वैज्ञानिक, आ भाषाविद् सभक संग आन-आन प्रतिष्ठित व्यक्ति ओ पेशाकर्मी सभकैं आमंत्रित कएल जा सकैछ। जाहिसँ मैथिलीमे चर्चा अंग्रेजीक 'The Seen and the Unseen' वा हिन्दीक चर्चित पोडकास्ट सभक स्तरक होबाक चाही, जतय सतही गप्पक बदला गम्भीर विमर्श हो।

2) मौखिक इतिहासक संरक्षण (Oral History Project): मैथिलीक हजारो एहन विद्वान छथि, जिनका लग ज्ञानक अथाह भण्डार अछि, मुदा ओ लीखि नै सकलाह वा हुनका पर कियो लिखने नै अछि। विदेहक टीम एहन विद्वान लोकनिक 'वीडियो इंटरव्यू' रेकार्ड कऽ प्रसारण कऽ सकैछ। ई केवल अन्तरवार्ता नै, बल्कि भविष्यक शोधार्थी सभक लेल एकटा 'प्राइमरी सोर्स

(Primary Source) बनत।

3) विजुअल आलेख (Video Essays): अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर 'वीडियो एसे' (Video Essay) क बहुत महत्व अछि। कोनो एकटा कविता वा कोनो ऐतिहासिक स्थल पर 10-15 मिनटक एकटा गवेषणापूर्ण वीडियो बनाओल जाय, जाहिमे गजेन्द्र जीक शोध दृष्टि आ विदेहक अर्काइव (Archive) क प्रयोग हो।

4) बहुभाषिक पहुँच (Cross-Language Communication): मैथिलीक समस्या ई अछि जे ई 'मैथिल सँ मैथिल धरि' सीमित रहि जाइत अछि। 'विदेह'कँ अपन डिजिटल कार्यक्रम सभमे अंग्रेजी आ हिन्दीक 'सबटाइटल' (Subtitles) प्रयोग करबाक चाही। जखन कियो गैर-मैथिल विद्वान मिथिलाक दर्शन वा साहित्यक बारेमे जानय चाहत, तखन हुनका विदेहक मंच पर एहन सामग्री भेटत। गजेन्द्र ठाकुर आ विदेह टीम संग विश्वविद्यालयक शोधार्थी (Research Scholars), डाक्टर, इन्जिनियर, लेखक, साहित्यकार लगायत बहुत रास व्यक्तित्व सभ पहिनेसँ जुटल छथि, आ आरो विश्वक विभिन्न देशमे कार्यरत मैथिल विद्वान लोकनि सभकँ मैथिली भाषा साहित्यक डिजिटल आंदोलनमे जोड़ि कऽ आगा लएबाक आवश्यकता अछि। नव पीढ़ीक छात्र जे टेक्निकली एक्सपर्ट छथि, ओ गजेन्द्र जीक ज्ञान आ 'विदेह'क अर्काइवकँ आधुनिक स्वरूप दऽ सकैत छथि। एकेडमिक विमर्शमे जखन धरि युवा-युवतीक स्वर नै जुडत, तखन धरि ओ जड़ताक शिकार भेल रहत। मैथिलीमे 'विदेह'कँ ओहि स्तरक एकटा 'इंटेलेक्चुअल हब' (Intellectual Hub) बनएबाक चाही। जखन ककरो मिथिलाक संस्कृति पर पीएचडी करबाक हो, तऽ ओकर पहिल गंतव्य www.videha.co.in क वीडियो लाइब्रेरी हो।

गजेन्द्र ठाकुर आ 'विदेह टीम' एकटा 'संस्थाक' पर्याय भऽ गेल अछि। हिनकर टीमक लग ओ क्षमता अछि जे मैथिली लेल इन्टरनेट पर मात्र एकटा 'कोना' नै, अपितु एकटा साम्राज्यक निर्माण कऽ सकैछ, जकर अति आवश्यकता छै। सोशल मीडियाक माध्यमसँ स्थानीयसँ लऽ कऽ वैश्विक विषय सभ पर एकेडमिक स्तरक पोडकास्ट, अन्तरवार्ता, सामूहिक छलफल जेहन अनेक वीडियो श्रृंखला सभसँ मात्र मैथिली भाषा-साहित्य, सभ्यता-संस्कृति समृद्ध नै हेतै, बल्कि मैथिलीक जड़ि देह आ फुंचीक आन्तरिक संरचना सभ आओर प्रगाढ़ ओ विकसित हेतै तथा मिथिला-मैथिली अपन पूर्ण निजत्वमे पुनः ठाढ़ होयत। जाहि सँ एहिठामक लोकजन जन्म-जीवन-मरण तथा जगतक हरेक पक्ष ओ आयाममे स्वयंकेँ प्रतिस्पर्धी बनौताह आ अपन जीवनयापनकेँ देवाधीन सदृश्य अद्भुत ओ रोमाञ्चक बनएबाक चेष्टा करताह। भाषा ओ साहित्य मात्र कथा, कविता आ उपन्यासादि लिखबाक आ पढ़बाक लेल मात्र नै होइछ, वस्तुतः ई जन्म-जीवन-मरण ओ जगतक हरेक आयामक अनुभव ओ प्रमाण सभकेँ विकसित होइत अपन चेतनाक स्तरक आधारेँ पद्यात्मक ओ गद्यात्मक शब्दमे व्यक्त करबाक सहज माध्यम थिक। जाहि भाषिक माध्यमक प्रयोग चौहद्दी मिथिला (उत्तरमे हिमालय दक्षिणमे गंगा तथा पूर्व ओ पश्चिममे क्रमशः कोशी ओ गण्डकी)क लोकजन समानान्तर रूपेँ कऽ सकए, ताहि दिस काज हो, से अति आवश्यक। कारण, भाषा ओ साहित्यक प्रयोग मात्र लिखब, पढ़ब ओ सुनब धरि सीमित नै रहि गेल अछि। एकेडमिक स्तरक भाषा आ साहित्यक प्रयोग आब अडियो आ भीडियो रूपमे सेहो तीव्र रूपेँ भऽ रहल अछि, जाहि मामलामे मिथिला-मैथिली बहुत पाछा अछि। आशा अछि जे गजेन्द्र ठाकुर

ओ 'विदेह' टीम एहि दिस अपन डेग शीघ्र बढ़ाओत।

संपादकीय टिप्पणी-

1) जे काज करैत छै लोक तकरेसँ आशा रखैत छै। आ से आश पूर्ण नहि भेलाक बाद राग-उपराग काजे करऽ बलाकेँ भेटैत छै। कैलाशजीक आलेखमे आएल सभ उपरागकेँ विदेह स्वीकार करैत अछि।

2) विदेह गजेन्द्र ठाकुरक व्यक्तिगत उपक्रम छनि। ने ई सरकार द्वारा, ने कोनो संस्था द्वारा संचालित छै आ ने एकरा लग वैतेनिक स्टाफ छै। विदेह लग फंडक नामपर किछु नै छै, गजेन्द्र ठाकुर अपन मासिक खर्चमेसँ एहि काज सभकेँ कऽ रहल छथि। संगहि हम अपने एहि पत्रिकामे अपन स्वरुचिसँ जुड़ल छी। एहन अवस्थामे बहुत रास सोचलो काज नै भऽ पबैत छै। हँ, प्रयास छै जे गजेन्द्र ठाकुरक मासिक खर्चमेसँ किछु कटौती कऽ विदेहक तकनीकपर खर्च हो आ हमर प्रयास अछि जे विदेहक नीक-नीक काजमे यथासंभव मेहनति करी। बस अतबे पूँजी विदेह लग छै।

3) हरेक कालखंडमे तकनीक बदलि जाइत छै आ जरूरी नहि जे हरेक कालखंडक नवीन तकनीकमे एकै आदमी बेर-बेर काज करै। ई ने उचित छै आ ने व्यावहारिक।

4) विदेह ऑडियो-वीडियो आर्काइभ सेहो छै जाहि ठाम विदेह द्वारा बनाएल किछु ऑडियो-वीडियो छै संगहि-आन-आन लोकक लिंक सेहो देल गेल छै तहिना गजेन्द्र ठाकुरजीक यूट्यूब चैनलपर विश्वविद्यालय एवं बिहार ओ भारतीय प्रशासनिक सेवाक परीक्षा सभ लेल हुनक व्याख्यान सभ सेहो राखल गेल छै।

5) विदेहक विश्वास छै जे एकै आदमी वा एकै टीम सभ काज करतै तऽ ओहि काजमे गुणवत्ता नै आबि सकतै। गुणवत्ता लेल

अलग-अलग आदमी, अलग-अलग टीमक जरूरति छै। हँ, जाहि ठाम किनको कोनो सलाह-सुझाव केर जरूरति छनि तिनका विदेह दिससँ यथासंभव अवश्य देल जेतनि।

6) भारतक पाठक जखन एहि लेखकँ पढ़थि तऽ ई अवश्य ध्यान राखथि जे ई नेपालीय मैथिली अछि आ हुनका सभकेँ कोनो-कोनो शब्दक अर्थ नहि लगतनि वा कोनो शब्दक वर्तनी अजीब लगतनि।। एहि लेल पाठक विदेहपर उपलब्ध बहुत रास नेपालक मैथिली लेखकक पोथी सभ पढ़थि।

7) एहि आलेखमे जे फोटो छै से कैलाश कुमार ठाकुर अपने बनेने छथि।

डिजिटल युगमे मैथिलीः विदेह आ गजेंद्र ठाकुर

विकास वत्सनाभ

भाषाक इतिहास मानव सभ्यताक विकासक संग अविछिन्न रूपसँ सम्बद्ध रहल अछि। मानव सभ्यता जेना-जेना विकसित होइत गेल भाषाक विकास सेहो तहिना क्रमिक रूपसँ निरन्तर होइत रहल। मानव संततिक स्वप्न, संघर्ष आ अन्यान्य भावनात्मक अनुभूति सभक अभिव्यक्तिक लेल भाषाक आधुनिकीकरण सेहो होइत रहलैक अछि। आदिम कालमे मनुष्य अपन अभिव्यक्तिक लेल विभिन्न प्रकारक ध्वनि-संकेत सभक प्रयोग करैत छल। कालान्तरमे एकर स्वरूप आकृति, चिन्ह आ आरेख आदिक माध्यमसँ विकसित होइत रहलैक। सभ्यताक विकासक संग मानव जीवन व्यवस्थित होइत गेल आ ध्वनि-संकेत, आकृति,चिन्ह आ आरेखमे अभिव्यक्त होइत भाषा सेहो अपन विशिष्ट स्वरूप ग्रहण करैत रहल। जहिना जीवनानुशासन आ सामाजिक अनुशासनसँ एक टा व्यवस्थित जीवन शैलीक निर्माण भेलैक तहिना भाषा अपन व्याकरण, व्यवहार आ सरोकारक आधारपर परिमार्जित होइत एकटा व्यवस्थित स्वरूप ग्रहण कयलक। विज्ञान आ प्रविधिक विकाससँ भाषाक स्वरुप आ संप्रेषणमे विविधता अयलैक अछि संगहि सूचना आ प्राद्यौगिकीक विकाससँ भाषाक प्रसारक गति अप्रत्याशित रूपसँ बढ़लैक अछि। तकनीकी अनुकूलताक हेतु भाषा 'बाइनरीक संख्या प्रणाली'क माध्यमसँ रूपांतरित भ' कम्प्यूटर प्रोसेसर'क लेल ग्राह्य बनलैक

अछि।

आइ मानव सभ्यताक विकासक करीब 6 मिलियन वर्षक उपरान्त 7000 सँ बेसी उपलब्ध भाषा सभक मध्य किछुये भाषा सभक एहन स्वरूप विकसित भ' सकलैक अछि जे 'इंटरनेट' तथा अन्य 'डिजिटल स्पेस' आ उपकरण द्वारा प्रमुखतासँ व्यवहृत भ' रहलैक अछि। सूचना प्रद्यौगिकीक एतेक द्रुत विकासक समयमे ई एक टा विचारणीय प्रश्न अछि जे लगभग 7000 सँ बेसी उपलब्ध भाषा सभक मध्य किछुये भाषा किएक सामर्थ्यक संग 'इंटरनेट'पर व्यवहृत भ' रहलैक अछि। 'इंटरनेट सोसाइटी फॉउण्डेशन'क तथ्यांक कहैत अछि जे इंटरनेटपर सर्वाधिक उपस्थिति अंग्रेजी भाषाक (५१.5%) अछि। दोसर स्थानपर अछि स्पेनिश भाषा (6%) आ तेसर स्थानपर अछि रसियन भाषा (6%)। W3TECH (२५ अप्रिल 2025) केर तथ्यांकमे सम्मिलित भाषा सभक मध्य कुल बारह गोट भाषा जे इंटरनेटपर सर्वाधिक प्रयुक्त होइत अछि तकर कुल योगदान ८८.५% अछि। एहि भाषा सभमे अंग्रेजी, स्पैनिश, जर्मन, जापानी, रूसी, फ्रेंच, पुर्तगाली, इटेलियन, टर्किश, परसियन, डच, चाइनीज भाषा सम्मिलित अछि आ इएह भाषा सभ 'इंटरनेट स्पेस'कैँ रूल कय रहलैक अछि।

एहन परिवेशमे एकर तकतिआन करब आवश्यक अछि जे सम्प्रति इंटरनेटपर मैथिली भाषाक अवस्था केहन अछि आ इंटरनेटपर टेक्सटुअल फॉर्ममे मैथिलीक उपस्थिति कोना आ कहिया भेल। ज्ञात अछि जे इंटरनेटक व्यवहारिक प्रयोग १९९१ इसवीमे 'टीम बर्नर्स ली' द्वारा 'वर्ल्ड वाइड वेब'क माध्यमसँ भेल आ तकर ९ वर्षक बाद अर्थात 2000 ईसवीमे इंटरनेटपर मैथिलीक उपस्थितिक प्रमाण भेटैत अछि। विभिन्न तथ्यांक सभ कहैत अछि जे विश्वक जाहि

7000 सँ बेसी भाषाक चर्च कयल गेल अछि ताहिमे मात्र 3 सँ 5% भाषाक इंटरनेटपर फुटप्रिंट उपलब्ध छैक। सम्प्रति एखन 200 सँ 400 भाषा इंटरनेटपर प्रयोगमे अछि। एहिमे लगभग 100 सँ 150 भाषा 10 सँ 20 वर्षमे इंटरनेटपर अपन स्थान बनौलक अछि। एहि तथ्यांक सभसँ एहि प्रवृत्तिक विकासक तीव्रता आ आवश्यकता सहजहि अकानल जाय सकैत अछि। अर्थात विभिन्न भाषा सभक इंटरनेटपर प्रयोग दिनानुदिन बढ़ि रहलैक अछि आ स्थानीय भाषा सभक लेल ई एक गोट सकारात्मक पक्ष मानल जाय सकैत अछि। इंटरनेटपर मैथिलीक प्राथमिक उपस्थितिक सम्बन्धमे 2000 ईसवीक जे चर्चा कयल गेल अछि तकर आधार बनैत अछि 'अंतिका' नामक पत्रिकाक अक्टूबर-दिसम्बर 2009/जनवरी-मार्च 2010 केर संयुक्तांक। एहि संयुक्तांकमे गजेंद्र ठाकुरक 'अंतर्जाल आ मैथिली' शीर्षकसँ एक गोट आलेख प्रकाशित भेल अछि। एहि आलेखमे ओ लिखैत छथि- "हम इंटरनेट पर मैथिलीक काज प्रारम्भ कयने रही 2000 ई. मे याहू जियोसिटीज पर 2000-2001 मे मुदा ओ सभ साइट याहू द्वारा सेवा समाप्तिक बाद डिलीट भ' गेल। 5 जुलाइ, 2004 कैँ बनाओल 'भालसरिक गाछ' http//www.videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html पर एखनो उपलब्ध अछि, मैथिलीक इंटरनेट पर प्रथम उपस्थितिक रूप मे अखनो विद्यमान अछि"। एतय एहि विषयक उल्लेख करब सेहो आवश्यक अछि जे इंटरनेटपर सहज क्रियान्वयनक आ प्रभावकारी उपस्थितिक लेल एक गोट स्थानीय भाषाकैँ कोन-कोन तरहक व्यवहारिक आ तकनीकी समस्या सभक सामाना करय पड़ैत छैक। एहिमे भाषाक स्क्रिप्ट आ ओकर संबंधित डिवाइस'क संगे कम्पैटिबिलिटीक समस्या, यूनिकोड आ रैंडरिंगक समस्या, सर्च

इंजन आ कीवर्डक समस्या सभ आरंभिक स्तरक समस्याक रूपमे दृष्टिगत होइत अछि। एहिसँ संदर्भित विषय वस्तुक परिचर्चा गजेंद्र ठाकुर द्वारा एक गोट महत्वपूर्ण आलेखमे विस्तारसँ कयल गेल अछि। ई आलेख विदेह पत्रिकाक 313हम अंकमे 'भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन कुँजी पटल/ टंकणक तकनीकी) शीर्षकसँ प्रकाशित भेल अछि।

मैथिली भाषा आ साहित्यक सन्दर्भमे जखन-कखनो 'इंटरनेट' शब्दक परिचर्चा होयत तँ 'विदेह'क नाम आयब अपरिहार्य अछि। इंटरनेटपर मैथिलीसँ संबंधित वस्तु सभक उपलब्धताक सन्दर्भमे विदेह द्वारा कयल गेल महत्वपूर्ण काज आ संकलन सभक एक गोट बृहत्तर सूची बनाओल जाय सकैत अछि। वस्तुतः आधुनिक परिदृश्यमे जाहि 'डिजिटल प्रजेंस'क आवश्यकताक परिचर्चा कयल जाइत अछि ताहि महत्ताकें मैथिलीक सन्दर्भमे विदेह कतिपय अर्थमे साकार करैत अछि। एकर प्रामाणिकता एहूसँ सम्पुष्ट होइत अछि जे जँ मैथिली साहित्यसँ संबंधित इंटरनेटपर उपलब्ध विभिन्न सर्च इंजन सभक माध्मसँ किछु खोजबाक प्रयन्न करैत छी आ मैथिली भाषामे जे परिणाम सभ प्राप्त होइत अछि ताहि परिणाम सभक रिफरेंसमे विदेहक सामाग्री सभक उपलब्धता प्रमुखतासँ भेटैत अछि। इंटरनेटपर कोनो भाषाक समृद्धिक एक गोट मापक ईहो अछि जे ओहि भाषामे इंटरनेटपर कतेक कंटेंट उपलब्ध अछि। ताहि दृष्टिये सेहो मैथिलीक सन्दर्भमे विदेह एखन अग्रणी अछि। 'विदेह'क अंक सभ एकाधिक लिपिमे प्रकाशित होइत अछि। एहि काज सभक हेतु ट्रांसलिट्रेशन तकनीकी काज करैत अछि। इंटरनेटपर स्थानीय भाषा सभक लेल ट्रांसलिट्रेशन प्राणवायुक काज करैत अछि।

गजेंद्र ठाकुर द्वारा स्थापित 'विदेह' मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका अछि

जे 2008 इसवीसँ अद्यावधि क्रियाशील अछि। विदेह अपन निरंतरता आ पठनीय सामाग्रीक विपुल उपलब्धताक आलोकमे इंटरनेटपर मैथिली साहित्यक ध्वजवाहक बनल अछि। एतेक सक्रिय आ व्यवस्थित आओर कोनो अन्य साहित्यिक पोर्टल दृष्टिगत नहि होइत अछि। विदेह मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका अछि जकरा ISSN प्राप्त छैक। बितैत समयक संग विदेहक स्वरुप आब मात्र एक गोट ई-पत्रिकासँ पृथक बहुआयामी भ' गेल अछि। विदेह एक गोट डिजिटल पुस्तकालयक रूपमे सेहो क्रियाशील अछि। आरंभिक साहित्यसँ अद्यतन साहित्य धरिक कतेको महत्वपूर्ण कृति सभ एतय 'पीडीएफ' प्रारूपमे डाउनलोडक लेल उपलब्ध अछि। मैथिली साहित्यक पोथी सभक उपलब्धता आ वितरणक समस्याकेँ देखैत विदेहक डिजिटल पुस्तकालयक परिकल्पना एक गोट युगांतकारी उद्योग सिद्ध भेल अछि। एतय मैथिलीक हेतु विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा सभक सामाग्री, कतिपय महत्वपूर्ण पत्रिका सभक अंक आ मैथिलीक क्लासिकल कृति सभक उपलब्धता सेहो अछि। एहिसँ इतर मिथिलाक इतिहास, संस्कृति समाज आ साहित्यसँ सम्बद्ध कतेको महत्वपूर्ण कृति सभ जे अंग्रेजी भाषामे लिखल गेल अछि आ प्रायः अनुपलब्ध अछि तकर उपस्थिति सेहो विदेहक डिजिटल पुस्तकालयमे भेटैत अछि। विदेह मैथिलीक लेल एक गोट 'इंटरनेट एग्रीगेटर'क काज सेहो क' रहल अछि। एतय मैथिलीसँ संबंधित विभिन्न सामाग्री सभ जे इंटरनेटपर अन्यत्र उपलब्ध अछि ताहि सामाग्री सभक स्रोतक लिंक उपलब्ध कराओल गेल अछि। विदेहक ऑडियो-वीडियोक संकलन, मैथिली बाल साहित्यक चित्र श्रृंखला, अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक संग्रह, मिथिलाक महापुरुषक विवरण आ चित्रांकनक संगहि आओर बहुत रास अन्य महत्वपूर्ण जानकारी सभक स्रोतक रूपमे

इंटरनेटपर अपन सार्थक उपस्थितिसँ मैथिलीक हेतु महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कय रहल अछि।

विदेहक अतिरिक्त गजेंद्र ठाकुर द्वारा कयल गेल महत्वपूर्ण कार्य सभक मध्य एक गोट उल्लेखनीय काज अछि तीन गोट शब्दकोशक निर्माण:

1. मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोश
2. अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोश
3. अंग्रेजी-मैथिली कंप्यूटर शब्दकोश।

एहि तीनू शब्दकोश सभक सम्पादन गजेन्द्र ठाकुर, नागेंद्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा द्वारा संयुक्त रूपसँ कयल गेल अछि। एतय तेसर अर्थात अंग्रेजी-मैथिली कंप्यूटर शब्दकोश आ ओकर उपादेयताक सन्दर्भमे परिचिर्चा करब आवश्यक प्रतीत होइत अछि। कोनो स्थानीय भाषाकेँ इंटरनेटपर मजगूत उपस्थितिक लेल ओहि भाषाक अपन शब्दावलीक होयब बहुत महत्वपूर्ण होइत छैक। स्टैटिस्टिका-2012 आ IRD ONLINE केर तथ्यांक सभक अनुसार डिजिटल लिट्रेसी सूचिकांकमे भारतक स्थान 73'रम अछि। डिजिटली मात्र 38% भारतीय लिटरेट अछि। एकर विभिन्न कारक सभक मध्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक अछि अंग्रेजी भाषाक ज्ञानक न्यूनता। तेँ डिजिटल लिट्रेसी के बढ़ेबाक लेल इंटरनेटसँ संबंधित शब्दावली सभक उपलब्धता स्थानीय भाषामे होयब अत्यावश्यक अछि। ध्यातव्य अछि जे एखनहुँ भारतमे 19 सँ 20 प्रतिशत लोक मात्र अंग्रेजी बाजि सकैत अछि। एखन विभिन्न सोशल

मीडिया साइट, ग्लोबल ब्रांड्स आ लोकल मैन्युफैक्चरर सभ अपन उत्पादक विज्ञापनक कन्टेन्ट आ अपन सर्विस सभमे स्थानीय भाषाक उपयोगक प्रयास क' रहल अछि। गूगल आ अन्य वेबसाइट सभ स्थानीय भाषा सभक इंटीग्रेशन अपन विभिन्न डिवाइस सभमे करबाक हेतु प्रयत्नशील अछि। एहनमे ओहि भाषा सभमे गुणात्मक परिणामक लेल सॉफ्टवेयर डेवलपर सभकेँ ओहि भाषाक मानक आ तकनीकी शब्दावलीक आवश्यकता होइत छैक जाहिसँ ओहि भाषासँ सम्बद्ध समाज, संस्कृति, परिवेश आ साहित्यकेँ समुचित रूपसँ बुझबाक अनुकूलता प्राप्त होइत छैक। एकर प्रभाव आम लोकक जीवनपर सेहो प्रत्यक्षतः दृष्टिगत भ' रहलैक अछि। एहि उद्योगक प्रतिफल 'वॉइस-सर्च'मे सहजहि अकानल जाय सकैत अछि जतय मात्र अंग्रेजीये नहि स्थानीय भाषा सभक माध्यमसँ सेहो इंटरनेटक प्रयोग सम्भव भ' सकल अछि।

गजेंद्र ठाकुर द्वारा कयल गेल एक गोट आओर ऐतिहासिक काज अछि पंजी-प्रबंधक डिजिटलाइजेशन आ लिप्यांतरण। पंजी- प्रबंध मूलतः मिथिलाक ब्राम्हण आ कर्ण-कायस्थक लिखित वंशावलीक रूपमे वर्णित अछि जकर आरंभिक समय सातम शताब्दी मानल गेलैक अछि। एकर व्यवस्थित स्वरुप चौदहम शताब्दीमे कर्णाटवंशी राजा हरिसिंह देवक समयमे भेल प्रचरित अछि। मिथिलामे एखनहुँ एकर प्रयोग विवाहक हेतु सिद्दांतक समयमे वंशावली मिलानक हेतु कयल जाइत अछि यद्यपि आधुनिकताक आलोकमे समाजमे एकर व्यावहारिकता क्रमशः न्यून होइत गेलैक अछि आ संरक्षणक अभावमे कतेको पांडुलिपि नष्ट भ' गेलैक आ कतिपय नष्टप्राय छैक। एहन बहुतो लोक होयताह जे पंजीक सन्दर्भमे मात्र सुनने होयताह हुनका पंजीक स्वरुप दृष्टिगत नहि भेल होयतनि। एकर

अभिष्ट, एकर प्रवृत्ति आ एकर सरोकारक सन्दर्भमे प्रश्न सभ उठैत रहल अछि मुदा ताहिसँ इतर ईहो स्वीकार्य अछि जे पंजी-प्रबंध मिथिलाक विशिष्ट ज्ञान परम्पराक संवाहक रहल अछि। गजेंद्र ठाकुर जाहि सारस्वत प्रतिभा आ मनोयोगसँ एहि पंजी-प्रबंधक डिजिटलाइजेशन आ लिप्यांतरणक सत्प्रयास कयलनि से स्तुत्य अछि। वस्तुतः ई अपन भाषा आ संस्कृतिक संरक्षण-संवर्धनक क्षेत्रमे कयल गेल एक गोट भगीरथ प्रयास अछि। गजेंद्र ठाकुर पंजीक पाण्डुलिपि सभ संग्रहित कऽ एकरा तीन गोट पोथीक रूप मे प्रकाशित करबौलनि-

1. जीनोम मैपिंग (450 एडी सँ 2009 एडी) मिथिलाक पंजी-प्रबन्ध,

2. जीनियोलोजिकल मैपिंग (450 एडी सँ 2009 एडी) मिथिलाक पंजी-प्रबन्ध -2,

3. दूषण पंजी।

एहू काजमे हिनक संग रहथिन नागेंद्र कुमार झा आ पंजीकार विद्यानन्द झा। एहि तीनू पोथीक महत्वक सन्दर्भमे भवनाथ झा लिखैत छथि- "एहि तीनू पोथीक अतिरिक्त पाण्डुलिपिक डिजिटल कॉपी सेहो विदेहक वेबसाइट पर सार्वजनिक उपयोगक लेल उपलब्ध करा देलनि। जँ एतय चमत्कारिक भाषाक प्रयोग करी तँ कहल जाय सकैत अछि जे जेना हनुमान जी पूरा संजीवनी पहाड़े उठाए अनलनि तहिना हिनको जे जेना भेटलनि से समाज कैँ अग्रतर शोधक लेल उपलब्ध कराय देलनि"।

इंटरनेटपर मैथिलीकैँ जे महत्वपूर्ण उपलब्धि सभ प्राप्त भेलैक अछि प्रायः ताहि सभ उद्योगमे गजेंद्र ठाकुरक योगदान प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपसँ दृष्टिगत होइत अछि। एतय किछु महत्वपूर्ण उपलब्धि सभक

मात्र परिचर्चा करब जाहिसँ इंटरनेटपर मैथिलीक स्थिति क्रमशः मजगूत होइत गेल अछि। सबसँ पहिने 'यूनिकोड तिरहुता फॉण्ट'क सन्दर्भमे परिचर्चा आवश्यक लगैत अछि। एकर श्रेय मिशिगन यूनिवर्सिटीमे कयल अपन शोधसँ अंशुमन पांडेयकेँ जाइत छनि। अंशुमन पांडेयः "Towards an Encoding for the Maithili Script in ISO/IEC 10646" शीर्षकसँ अपन शोधक स्वीकृति हेतु प्रयास कयने छलाह आ हुनका सफलता सेहो भेटलनि। एतय ई उद्धृत करब आवश्यक अछि जे ताहि शोधक क्रममे स्वीकृतिक हेतु देल गेल अपन दोसर आ तेसर आवेदनमे ओ विदेह आ गजेंद्र ठाकुरक सहयोगक हेतु आभार व्यक्त कयलनि अछि। एहि सन्दर्भमे एक गोट प्रामाणिक आलेख गजेंद्र ठाकुर द्वारा विदेहक 351'म अंकमे लिखल गेल अछि। दोसर विषय अछि मैथिलीमे विकिपीडियाक स्वीकृतिक। विकिपीडिया स्वयंकेँ एक टा वेब आधारित बहुभाषी मुक्त ज्ञानकोष कहैत अछि जे विश्व भरिक योगदानकर्ता सभक द्वारा लिखल आओर सम्पादित कयल जाइत अछि। आशीष अनचिन्हार अपन प्रसिद्ध पोथी 'मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास'मे 'मैथिली विकिपीडिया शुरू सँ एप्रूवल (2008 सँ 2014) धरि' शीर्षक अंतर्गत विकिपीडियापर मैथिलीक उपस्थितिक सन्दर्भमे विस्तार सँ लिखलनि अछि जाहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे विकिपीडियाक हेतु आरंभिक प्रयास गजेंद्र ठाकुर द्वारा कयल गेल अछि आ ओकर अहर्ता पूरा करबाक हेतु अनुवाद संबंधित काज सभ सेहो गजेंद्र ठाकुरक प्रयाससँ पूर्ण भेल अछि। तहिना गूगल ट्रांसलेशनक हेतु मैथिलीक स्वीकृति, विंग माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटरमे मैथिलीक स्वीकृति, एलेक्सामे मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु प्रयास सन अन्य बहुतो महत्वपूर्ण काज सभमे गजेंद्र

ठाकुरक महती भूमिका रहलनि अछि। एहि तथ्य सभक विस्तृत आ व्यवस्थित जानकारीक लेल आशीष अनचिन्हारक पोथी 'मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास' एक गोट प्रामाणिक स्रोत अछि। एतय ई उद्धृत करब महत्वपूर्ण अछि जे गजेंद्र ठाकुर द्वारा कयल गेल काज सभ हुनक व्यक्तिगत प्रयासक प्रतिफल अछि। व्यक्तिगत प्रयाससँ एतेक उपलब्धिमूलक काज सब सम्पादित करब एक गोट विशिष्ट उपलब्धिक रूपमे स्पष्टतः रेखांकित होइत अछि। एखन विश्व 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस'क युगमे प्रवेश क' रहल अछि। ई तकनीकी मुख्यतः उपलब्ध डाटाक आधारपर काज करैत अछि। सबसँ पहिने उपलब्ध डाटा सबकेँ संग्रहित कयल जाइत अछि तखन संग्रहित डाटा सभक प्रोसेसिंग कयल जाइत अछि आ अन्तमे निर्णायिक परिणाम देल जाइत अछि। एखन स्थानीय भाषा सभक लेल बहुत आवश्यक अछि जे बृहत स्तरपर डाटा, टेक्स्ट आ मॉड्यूल सभक उपलब्धता सुनिश्चित कराओल जाय आ ताहि हेतु आवश्यक अछि इंटरनेटपर स्थानीय भाषा सभमे कन्टेन्टक प्रचुर उपलब्धताक। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे अपन स्वर्णिम अतीते सन इंटरनेटपर मैथिलीक भविष्यक सुदृढ़ निर्माणमे विदेह गजेंद्र ठाकुरक सक्षम नेतृत्वमे सदिखन अग्रणी भूमिकाक निर्वाह करैत रहत।

सन्दर्भ:

1. मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास- आशीष अनचिन्हार

2. प्रीति कारण सेतु बान्हल- संपादक: आशीष अनचिन्हार

3. अंतिका- संयुक्तांक: अक्टूबर-दिसम्बर 2009 / जनवरी-मार्च 2010

4. https://www.isocfoundation.org

5. https://www.statista.com

6. https://www.unicode.org
7. https://www.videha.co.in
8. https://w3techs.com
9. https://www.wikipedia.org

मिथिलाक पंजी संरक्षणमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान

भैरव लाल दास

मिथिलाक पंजी व्यवस्थाक अध्ययन पर देशी-विदेशी विद्वतजनक ध्यान रहल अछि। एहिमे कैरोलिन ब्राउन हिंज, राधाकृष्ण चौधरी, आर. इंडेन, आर.डब्ल्यू.निकोलस, यू.एन.झा, रमानाथ झा, प्रो. हेतुकर झा आदि प्रमुख नाम अछि। पंजीक अध्ययन कतोक भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण सँ भेल अछि। मिथिलाक पंजी प्रबंधन मे श्री गजेन्द्र ठाकुरजी योगदान चिरस्मरणीय रहत। एहि क्षेत्रमे हिनक शोध, अध्ययन आ प्रकाशन सँ मिथिलाक अध्येता लोकनि लाभान्वित होइत रहताह।

श्री गजेन्द्र ठाकुरजी मिथिलाक आदि पंजी 'जीनोम मैपिंग' (दु खंड)क प्रकाशन अन्य दु संपादक (नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा) संग करौलन्हि। संगहि हिनक ध्यान दूषण पंजी पर सेहो गेल। ओ दूषण पंजीक प्रकाशन क' एकरा देखार करौलन्हि। एहि क्रममे हिनका अप्रतिभ दिस सँ कतोक तरहक निमर्मताक सहन सेहो कर' पड़लनि। मिथिलाक पंजीक प्रकाशन क' क' श्री गजेन्द्रजी समाजक ध्यान पंजीक संरक्षण आ पंजी प्रबंधनक अनुशासन दिस समाजक ध्यान आकृष्ट करबामे पूर्णतः सफल भेलथि। एहि प्रकाशन सँ समाजके कतेक लाभ भेल छैक अथवा भविष्यमे हेतैक, एकर मूल्यांकन एखन जे भेल हो, मुदा भविष्यमे एकटा सामाजिक मार्गदर्शकक रूपमे एकर गणना होयत।

निकट रक्त संबंधी सँ विवाह केने कतेक तरहक जेनेटिक डिसऑर्डर

होइत छैक, एहि पर दुनिया भरि मे शोध अध्ययन भ' रहल अछि। एडिथ कोवॉन यूनिवर्सिटी आ वेस्टमीड हॉस्पिटल, ऑस्ट्रेलियाक प्रोफेसर एलन बिट्ल्स द्वारा एहने सन अध्ययन कएल गेल आ जकर निष्कर्ष सँ स्पष्ट होइत अछि जे विवाह निकट रक्त संबंधी मे नहि करक चाही। ऑस्ट्रेलिया के विवाह अधिनियम, 1961 मे एहन कोनो तरहक प्रतिबंधक उल्लेख नहि अछि मुदा सामाजिक रूप सँ निकट रक्त संबंधी सँ विवाह नहि करबाक लेल ओत' जनजागरण कएल जाइत अछि। निष्कर्षक तात्पर्य जे निकट रक्त संबंधी सँ विवाह करबाक मनाही सभ संस्कृतिमे कएल जाइत अछि।

इंग्लैंडमे जेनोलॉजिकल रेकड्र्स संधारणक बहुत पुरान रेवाज रहल अछि। इंग्लैंड एकटा औपनिवेशिक शासकक रूपमे विख्यात रहल अछि। 1765 ई.क फोर्ट विलियम (कोलकाता)क रेकर्ड्स सँ स्पष्ट होइत अछि जे तत्कालीन मुख्य न्यायाधीशक पत्नी मैडम इम्पे महोदया भारतक फूल-पत्ती, गाछ-बिरिछक पेंटिंग्स बनबाओल जाइत छल आ ओहि लेल यूरोप आ भारतक विभिन्न कलाक्षेत्रक विशेषज्ञताक सेवा सेहो लेल जाइत छल। इंग्लैंड मे कुक्कुरक जेनोलॉजिकल रेकड्र्स संधारणक सेहो प्रचलन अछि।

मिथिलाक पंजी प्रबंधक अध्ययन क्रममे विद्वान लोकनिक दृष्टिकोण फराक रहल अछि। एहि सामाजिक व्यवस्थाक कारणे बंगालमे भेल जाति-विभाजनक असरि मिथिला पर सेहो पड़ल। ब्राह्मण वर्ग मे पहिने श्रोत्रीय नामक कोनो अलग जाति समूह नहि छल, मुदा शाखा पंजीक पृथक संधारणक देल गेल निर्णय सँ एकटा नव उप समूहक गठन भेल। एतबहि नहि राज दरभंगा द्वारा पंजीकारक संरक्षण कएल गेल। 'अस्वजन' निर्णय पत्र प्रकाशनक पूर्व महाराजक

अनुमति आवश्यक छल। एतहि सँ पंजी प्रबंधनमे त्रुटि आयब आरंभ भेल जाहिमे पंजीकारक भूमिका पर सदैव प्रश्नचिह्न लगाओल गेल। ओना बहुत पंजीकार पहिनो आदरणीय छलाह आ एखनो एकदम शुद्ध आचरणक अनुसरण क' रहल छथि जिनक व्यवहार कहियो पनिसोह नहि भेल।

मुदा पंजी प्रबंधक उद्देश्य मात्र अस्वजनक निर्णय मात्र नहि रहल अछि। मिथिलाक ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक सामाजिक अध्ययन हेतु पंजी एकटा मूल स्त्रोत मानल जाइत अछि। पहिने राजपूतक सेहो पंजी होइत छल, मुदा कालक्रमे एकर उल्लंघन होइत रहला सँ पंजी टूटैत गेल। सूढ़ी जाति मे 'पजियार' एखनो प्रतिष्ठित मानल जाइत छथि। जीनोम मैपिंगक अध्ययन सँ स्पष्ट होइत अछि जे बिना एकर अध्ययन केने मिथिलाक उच्च वर्णक सामाजिक अध्ययन पूर्ण नहि भ' सकैत अछि।

पंजी प्रबन्धनक आलोचकक दृष्टिएं ई व्यवस्था कहियो समाजोपयोगी नहि रहल। 'अस्वजन' शब्दक बहुत-बहुत दुरुपयोग कएल गेल। ब्राह्मण वर्ग एहि सँ सबसँ बेसी प्रभावित भेलाह। बंगालक अनुसरण करैत ब्राह्मण वर्ग चारि वर्गमे विभाजित होइत गेलाह। एकर समर्थन राज दिस सँ भेटैत रहल। किछु एहनो प्रसंगक उल्लेख जीनोम मैपिंग मे भेटैत अछि जे पहिने ब्राह्मण नहि छलाह, तिनका पाँजिक आधार देल गेलैन आ ओ ब्राह्मण वर्गमे मिज्झर भ' गेलाह। एतबहि नहि, ब्राह्मण वर्गमे बहु विवाहक कुप्रथा विकसित भेल। ब्राह्मणक पुरुखाक उल्लेख मिथिलाक पंजी मे रहलाक बादो दोगमिया व्यवस्था शुरू भेल। पहिने ब्राह्मणक उच्चता विद्या सँ जुड़ल छल, त्रिप्रवर आ पंचप्रवरक अपन विशेषता छल मुदा पंजीक दुरुपयोग सँ विद्यार्जनक उपेक्षा होइत गेल आ 'प्रथम श्रेणी'मे ओ

लोकनि स्थान पौलैंन्ह जे विद्या छोड़ि आन-आन चीजक अर्जन करैत रहलाह। प्रो. हेतुकर झाक मतें मिथिलाक ह्रास मे एहि पंजी प्रबंधनक सेहो योगदान अछि।

पंजी प्रबंधनक दुरुपयोगक दोसर उदाहरण कर्ण कायस्थक पंजीमे देखना जाइत अछि। पंजीमे कतौ ऊँच-नीच, छोट-पैघक विचार नहि कएल गेल छैक। एहिमे बीजी पुरुष स' ल'क' अद्यतन धरि, पितृपक्ष आ मातृ पक्षक उल्लेख भेटैत अछि। मुदा कालान्तरमे मूलक गणना ऊंच आ नीचक दृष्टिएँ होम' लागल। पंजी प्रबन्धन पंजीकारक प्रबन्धन बनैत गेल। समाजमे अन्हार पसरैत रहल। विद्या, विज्ञान आ पुरुषार्थक कतौ कोनो स्थान नहि। राज दरभंगाक मार्फत जे केओ अगुआ भेलाह, तिनकर पंजी उच्च कोटिक बनैत गेलैन्ह। समाजमे दहेजक हाहाकर पसरल। जे पंजीक मार्फत ऊँच नहि बनलाह, से दबाव मे अबैत गेलाह आ नाना प्रकारक 'शक्ति प्रदर्शन' करैत गेलाह। समाजक सौहार्द्र खराप होइत गेल।

मैथिलक एकटा नव परिभाषा सेहो सम्मुख आयल। पंजीबद्धक अर्थ निकालल गेल जिनक विवाह पंजीबद्ध सँ भेलैन। अर्थात् जिनकर पुरुखाक उल्लेख पंजी मे पूर्व सँ भेल अछि, तिनका ओहिठाम विवाह करबाक बाध्यता भेल। मुदा एकर सेहो एकटा अपन सीमा छल। किछु प्रभुत्व वर्ग एहि अनुशासनमे अपना के राखब बेसी उचित नहि बुझलनि आ ओ अपन बेटा-बेटीक विवाह आन-आन क्षेत्र मे क'क' एक तरहें पंजीक अनुशासनके तोड़ैत गेलाह। आब हिनका लेल पंजीक कोनो महत्व नहि रहि गेल। पंजीबद्ध आ अपंजीबद्धक बीच शुरू मे घमासान जरूर भेल, मुदा तकरा परिवार आ समाज स्वीकार करैत गेल।

पंजी प्रबंधनक सबसँ पहिल दोष ई भेल जे ई मात्र किछु जाति

अर्थात् ब्राह्मण, राजपूत आ कर्ण कायस्थ धरि चलल। भलहि मिथिलाक आन-आन जातिमे एकर चलनसारिक चर्च होइत हो, मुदा मिथिलाक बेसी जाति एहि टिटिम्हा सँ अपना कैं फराके रखलनि। मुदा एकर अर्थ ई नहि जे हुनक विवाह रक्त संबंध मे भेलैन। जेना राजपूत एहि रक्त संबंध मे विवाह नहि करबाक लेल एकटा साधारण रास्ता चुनलैन जे अपन पितामहक मातृक मे विवाह नहि करब। तहिना आन-आन जाति सेहो, अपना सुविधानुसार, कोनो ने कोनो रास्ता चुनलनि। एकरा सार्वजनिक भाषामे खाड़ी छोड़ब कहल जाइत छैक। ई एकटा सामाजिक अध्ययन विषय अछि जे कोन जाति वा कोन वर्ग एहि दिशामे कोन तरहक काज केलन्हि। मुदा रक्त संबंधक वर्जनाक अनुशासन पर सब केओ ध्यान दैत रहलाह।

एहि प्रसंगमे सरकारक भूमिका पर चर्च करब आवश्यक अछि। मुसलमानी शासनमे सेहो 'मर्दशुमारी'क व्यवस्था छल। कबिलाई संस्कृतिमे सेहो विवाहक निर्णय पर प्रमुखक निर्णय महत्वपूर्ण मानल जाइत छल। राज दरभंगा द्वारा 'अस्वजनक' परमानगीक बादे कोनो पंजीकार सिद्धान्त करा सकैत छलाह। राज दरभंगाक प्रभुत्वक अवसानक बाद एहि पर ककरो कोनो नियंत्रण नहि गेल। पहिने जँ कोनो पंजीकार अस्वजनक गलत निर्णय लेबाक साहस करितथि त' राज दरभंगा हुनका पर शास्ति करैत। मुदा बाद मे पंजीकारक भरण-पोषणक जिम्मेवारी समाज पर आबि गेल। पहिने पंजीकार लोकयात्रा करैत छलाह आ अपन पंजीकैं अद्यतन करैत छलाह। लोकयात्राक क्रममे ओ गाम-गाम घूमि समाजसँ परिचित होइत छलाह आ पंजीकारक अनुभव सँ गृहस्थ सेहो लाभान्वित होइत छलाह। बाद मे ई सब बंद होइत गेल। पंजीकारक कार्यालयक

अवसान होइत गेल। बाद मे घटकक स्थिति सेहो दयनीय होइत गेल आ ओ समाजमे उपहासक पात्र बनि क' रहि गेलाह। समाजमे विवाह पूर्व जे ताना-बाना छल, तकर क्षति होइत गेलै। समाजक लोक अपनहि संपर्क सँ विवाह ठीक करैत गेलाह आ ताहि क्रममे ओ समगोत्रीक वर्जना पर प्रथमतः ध्यान दैत रहलाह। विवाह ठीक भेलाक बाद वर आ कन्या पक्ष पंजीकारक दरवाजा पर आबि सिद्धान्त 'लिखबैत' रहलाह। समाज मे प्रवासनक पैघ समस्या आएल। अपन जीवन यापन आ रोजी-रोटीक लेल समाजक लोक मिथिला छोड़ि आन-आन देश-विदेश मे बस' लगलाह। ओ अपना संगे ने 'जीनोम मैपिंग' ल' गेलाह आ ने पंजीक सब पोथी ल' गेलाह। तखन, पंजी आ सिद्धान्त एकटा आडम्बर मात्र बनि क' रहि गेल। कालान्तर मे बहुत कम लोक सिद्धान्त लिखेबाक प्रथा कायम रखलनि। आन जाति आ धर्ममे विवाहक रास्ता चौड़गर होइत गेल।

श्रोत्रीय ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थमे सिद्धान्त एकटा 'सेलेब्रेशन'क विध होइत छल। वर पक्ष आ कन्या पक्षक सुविधानुसार कोनो सार्वजनिक स्थान पर दून् पक्षक लोक जमा होइत छलाह। ओहिठाम वर आ कन्याक उपस्थिति नहि होइत छल। पंजीकारकेँ पहिनहि सँ पानक भाड़ा द' देल जाइत छल। संक्षिप्त किन्तु गरिमामय ढंग सँ सिद्धान्त सम्पादित होइत छल। पूरा जातिमे सोरहो भ' जाइत छल जे अमुक वरक सिद्धान्त अमुक कन्या सँ भ' गेलैन। राज दरभंगा द्वारा बाल विवाह, बहु विवाह आ दहेज प्रथाक उन्मूलनक उद्देश्य सँ एहि तरहक प्रयास आरंभ कएल गेल छल। मुदा, अपन 'प्रदर्शन'मे बेकल किछु लोक एहि प्रथा पर सेहो अतिक्रमण केलखिन। आब दिनानुदिन एहिमे गरिमाक अभाव देखना जा रहल अछि। फुलपैंट

पर स' लाल धोती पहिरि क' लोटा उठायब, पंजीकार के सेहो लाल धोती पहिरब, पान-मसालाक बदला महग 'गिफ्ट'क आदान-प्रदानक बाद आब 'रिंग सेरेमनी'क लोकप्रियता सिद्धान्तकेँ निरर्थक बना रहल अछि।
एहि सिद्धान्तक प्रक्रियामे जखन पंजीकार कहैत छलखिन जे अमुक वरक सिद्धान्त अमुक लड़की सँ होम' जा रहल अछि त' उपस्थित लोक पंजीकार सँ प्रश्न करैत छलखिन जे अधिकार जाँचल ? आ पंजीकार खूब विश्वास सँ कहैत छलखिन जे पंजी प्रबंधनक अनुसार अधिकार होइत अछि, कहल जाओ शुभ होए, शुभ होए। मुदा भितरिया बात सँ सब गोटे अवगत कहाँ रहैत छथिन, कारण आब विवाह अधिकार मे भ' रहल छैक कि अनाधिकारमे, एहि तथ्य सँ बेसी लोक अनजाने रहैत छथि। स्थिति त' एहन खराब भ' गेल अछि जे पंजीकार लगमे सेहो पंजी नहि छनि। हम त' गजेन्द्रजी सँ नेहोरा करबैन जे ओ जीनोम मैपिंगक लेल एक बेर आर प्रयास करथु आ कर्ण कायस्थक समग्र पंजीकेँ सेहो प्रकाशित क' देथुन।
श्री गजेन्द्रजी प्रयासक हम बेसी प्रशसंक छी। कारण, हमरा प्रत्यक्ष अनुभव अछि जे मिथिलाक पंजी कोन स्थिति मे अछि। एहि क्रम मे हमरा मनीगाछीमे एकटा विद्वान सँ गप्प भेल। हुनका बहुत दुख भ' रहल छलनि जे हुनका गामक पंजीकारक पंजी सब मूस आ चुट्टी-पिपरी खा गेलैन आ अंततः पंजीक पात चिक्कस मे बदलि गेलैन। कारण ई भेल छलैक जे पंजीकारक दोसर आ तेसर पीढ़ीमे केओ नहि भेलखिन जे पंजीकारी करतथि। ओ दिल्ली–मुम्बई जा क' नौकरी कर' लगलाह कारण पंजीकारीमे पेट भरब कठिनाह बुझेलनि। ललका लत्तामे पंजी बान्हि क' धरनि पर राखल गेल। अर्थभावमे मे घर चूब' लगलनि आ पानि ओहि बस्ता पर पड़ैत

रहलैक। अंत मे सबटा नाश भ' गेलै।

एहि घटनाक बाद हमरा स्वयं बहुत दुख भेल। इंटैक, नई दिल्ली सँ हमरा लोकनि पन्द्रह लाख टाकाक एकटा कोषक ओरियाओन केलौं। ताहि समयमे डॉ. शिवकुमार मिश्र दरभंगाक लक्ष्मीश्वर सिंह मेमोरियल म्युजियमक प्रभारी अधिकारी रहथि। हमरा लोकनि ओहि म्युजियम मे एकटा लोकल लैबक स्थापना करौलहुँ आ लखनऊ सँ प्रिजर्वेशन-कंजर्वेशन दरभंगा बजाओल गेलाह। हमरा लोकनिक विचार छल जे मिथिलाक सब जातिक, सब वर्णक पंजीक संग पुरान दस्तावेज सबहक प्रिजर्वेशन करबा दी जाहि सँ दस्तावेज अगिला पांच सौ साल धरि सुरक्षित रहि सकए। पंजीकार वा गिरहथ कैँ ई सुविधा निःशुल्क उपलब्ध कराओल जा रहल छल। ननौरक श्री जियानन्द बाबू मात्र एकटा पंजीकार भेलथि जे अपन संपूर्ण पंजीक प्रिजर्वेशन एहि ठाम करौलनि। दरभंगाक एकटा पंजीकार अपन पुरान पोथीक कंजर्वेशन करौलनि। आर कियो नहि। मधुबनीक एकटा पंजीकार ओहिठाम चारि घंटा रहलहुँ मुदा हुनका एहि बातक लेल राजी नहि क' सकलियनि। मधुबनीक एकटा स्वर्गीय पंजीकार संपूर्ण पंजी एक ठाम राखल भेटल, मुदा एकमत निर्णयक अभावमे किछु नहि भ' सकल। एहि प्रसंगक अनुभवक विस्तार फेर कोनो आन अवसर पर। कोनो पंजीकार ई बुझबाक लेल राजी नहि होइत

छलाह जे हुनक पंजीक डिजिटाईजेशन नहि कराओल जा रहल छनि। पंजीक कंजर्वेशन सँ हुनकहि उपकार कएल जा रहल छनि जाहि सँ पंजी चिरायु भ' जायत। बाद मे पता लागल जे ।१४१ ई. मे मिथिलामे एक बेर पंजीक डिजिटाईजेशनक क्रममे पंजीकार लोकनिकैँ बहुत अर्थाभाव भेल छलनि आ ओ फेर एहि अर्थाभावक

लोभ सँ ग्रसित छलाह।

गजेन्द्रजीक 'जीनोम मैपिंग'क प्रकाशन सँ आर्यभट्टक जनतब भेटैत अछि आ हिनक काल 476-550क निर्धारिणक बात प्रकाश मे अबैत अछि। गोनू झाक मादे जे किछु बुझल से नवीन मानल जेबाक चाही। सौरिया राजवंशक उत्पति आ अंतक जानकारी एहि सँ भेटैत अछि। पंजी त' सामाजिक अध्ययनक जीवंत दस्तावेज अछि। एक बेर दरभंगाक महाराजक इच्छा भेलैन जे सौरिया राजवंशक पुरान महलक अवशेष देखी। ओत' जा'क' ओ बहुत दुखी भ' गेलाह। सौरिया राजमे एकटा स्थान छल जकर नाम छल-दण्डखोर। ओत' अपराधी कैँ सजा देल जाइत छल। अयाची मिश्रक पौत्र कैँ ढाका कविक रूपमे ढाकामे जागीर भेटलनि। आब के मानत जे हमर मिथिलाक विद्या ढाका तक पसरल छल। हल्ली झा तांत्रिक आ शिव कुमार शास्त्रीक बीचमे शास्त्रार्थक वर्णन भेटैत अछि। प्रत्याहार वाक् तंत्र द्वारा हल्ली झा शिवकुमार शास्त्रीक वाक् बन्न क' देलन्हि। श्री गजेन्द्रजी 'जीनोम मैपिंग'क दुनू भाग आ दूषण पंजीक प्रकाशन क'क' मिथिलाक महत्वपूर्ण धरोहरिकैँ नष्ट होम' स' बचा लेलनि। एहि लेल अत्यंत प्रशंसनीय छथि। हमर आग्रह रहत जे शेष पंजीक प्रकाशनक लेल सेहो उद्यमशील रहथि। मिथिलाक सांस्कृतिक संवर्धनक लेल ई बहुत जरूरी काज अछि। आजुक गोलैसी मे गोलबाह सब कल्पनाशील रहता जे पंजी प्रबंधन कैँ कम्प्यूटराईज्ड क' देल जाए। पंजीकारक एकाउंट कैँ एहि सँ जोड़ि क' एकरा ऑन लाईन बना देल जाय। दूर देशमे बसल लोक सब 'अस्वजनक' निर्णयिक लेल अथवा 'अधिकार माला'क लेल फीस जमा क'क' एहि सुविधाक लाभ उठा सकैत छथि। एहि काज मे पंजीकारक सहयोग नहि भेटि रहल अछि, कारण पंजीकारकैँ भय होइत छनि

जे जँ एक बेर संपूर्ण पंजी के डिजिटाईज करा देल जायत त' हुनकर रोजी-रोटी मारल जेतैन। मुदा एखन एहि तरहक कोनो सॉफ्टवेयरक निर्माणक कोनो समाचार हमरा नहि भेटल अछि। दोसर पंजीकारक भय एहि लेल निर्मूल छनि जे आब बहुत कम लोक कँ 'अस्वजन' प्रतिबंधक चिन्ता नहि गेल छनि। जेन जेडक लेल ई एकटा कठविलाप अछि। ओ विवाह अपना मर्जी सँ करैत छथि, एखन एकर पूर्व सूचना ओ अपना माता-पिता के द' दैत छथिन। किछु दिनक बाद समाजमे प्रचलित होयत जे बुरबक वरक विवाह माता-पिता द्वारा कएल जाइत अछि, होशगर बालक अपन विवाहक चिन्ता स्वयं करैत छथि। तखन पंजी की आ प्रबंधन की।

डायभर्सिटी आ विदेहः आधुनिक मैथिली साहित्यक चेतनामूलक पुनर्जागरण

पूनम झा 'सुधा'

डायभर्सिटी केर सामान्य अर्थ भेल कोनो समाज, संस्था, सार्वजनिक काज आदिमे अल्पसंख्य, दलित आ महिलाक निश्चित भागीदारी सुनिश्चित करब।
मैथिली भाषा अपन ऐतिहासिक धरोहर, सांस्कृतिक जीवंतता आ लोक परम्पराक समृद्धि लेल जानल जाइत अछि। मिथिलाक लोकजीवन, लोकगीत, पुराणपरक संदर्भ आ प्राचीन विद्वज्जनक कृति एकर आंतरिक शक्ति कैँ मजबूत करैत रहल अछि। मुदा एकटा सत्य ईहो छै जे आधुनिक समय मे मैथिली साहित्य अपन स्थिरता आ रूढ़िगत मानकक कारण सामाजिक विविधता कैँ पर्याप्त जगह नहि देलक। सामाजिक रूपसँ व्यापक, भाषायी रूपसँ बहुरंगी आ पीढ़ीक रूपसँ मिश्रित मैथिली जे वास्तविक रूपमे जीवित भाषा अछि, ओकर पूरा स्वभाव साहित्यिक मंच पर बड़ दिन धरि प्रतिबिम्बित नहि भेल। एहि अभावपूर्ण अवस्था मे जखन 'विदेह' सन डिजिटल साहित्यिक मंच उदित होइत छै, त' ई सिर्फ एकटा पत्रिका नहि, बल्कि मैथिली भाषाक विविधता-डायभर्सिटी पर आधृत नव चेतना, नव विमर्श आ नव आंदोलनक शुरुआत केलक। गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादन आ नेतृत्व मे 'विदेह' मैथिली साहित्यक आधुनिक

मानस कैँ ओहि मोकाम पर पहुँचौलनि जाहि ठाम भाषाक अनेक रूप, अनेक स्तर, अनेक वर्ग आ अनेक स्वर अपन असल स्थान पाबि सकैत छल। एहि आलेख मे विदेह द्वारा कएल गेल 'डायभर्सिटी' बला काजक विस्तारित, विश्लेषणात्मक आ शोधपरक विवेचना प्रस्तुत कएल जा रहल अछि।

1. भाषायी विविधता एक अनुपस्थित विमर्श- विविधता वा डायभर्सिटी आब दुनिया भरिक भाषायी विमर्शक आधारभूत सिद्धान्त मानल जाइत अछि। कारण भाषा तखने जीवित रहैत अछि जखन ओ समाजक सभ लोकक संग प्रयोग कएल जाइए। मुदा मैथिली साहित्यक मुख्यधारा मे बड़ दिन धरि ई तीन समस्या रहल अछि-

A) बलात् एकरूपता पर जोर- मैथिली लेखन मे एकटा विशेष प्रकारक 'मानक'क आग्रह रहल। जाहि कारणेँ ग्रामीण बोलीक साहित्य कम छपैत अछि, महिला लेखनक स्थान सीमित रहल अछि, युवा लेखनक प्रयोगवादी रूप आलोचनाक शिकार होइत अछि।

B) मैथिलीक आन शैली पर चर्चा नदारद- मैथिली मे दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, सुपौल, झंझारपुर, कोसी, चंपारण, देवघर, गोड्डा आ नेपालक बोली-संस्करण बहुतायत अछि मुदा मैथिली साहित्य मात्र एकटा सीमित क्षेत्रक स्वरमे सिमटि गेल। जाहि कारणे भाषाक स्तरपर मैथिली साहित्य एकरंगाह लगैत अछि।

C) साहित्यिक सत्ता का केन्द्रीकरण- बहुतो शतक धरि किछु खास वर्ग ओ स्थानक लेखक सभ मैथिली लेखनक परिवेश ओ साहित्यक दिशा नियंत्रित करैत रहला। जाहि कारणे सत्ताक समर्थक सभ ओहने परिवेश ओ शैलीक अन्धानुकरण केलाह एवं जे कियो अलग

करबाक प्रयास केलाह तिनका सत्ताशाली सभ मंच, पुरस्कार आदिसँ बारि दंडित करैत रहलाह।

एहि तीनू उपरोक्त कारणक परिणाम भेल जे मैथिली भाषा अपना व्यापक स्वरूपक पहिचान बिसारि देलक। एहन स्थितिमे "डायभर्सिटी" पर विमर्श अनिवार्य छल।

2. 'विदेह' (डिजिटल युगक साहित्यिक क्रांति)- जखन डिजिटल युगक आगमन भेल, त' बहुते भारतीय भाषा जकाँ मैथिलीमे सेहो नव संभावना खुजल। एकरा संगे डर सेहो छल, "डिजिटल मंच पर भाषा बिगड़ि जायत", "अनुशासन खत्म भ' जायत", "साहित्यक स्तर खसि जायत" इत्यादि। एहि सभ डरक बीच 'विदेह' अपन अलग पहचान स्थापित केलक। विदेह कहैत अछि- "भाषाक असल स्वर ओहि ठाम रहैत अछि, जतय ओ बाजल जाइत अछि। साहित्यक दायित्व ई अछि जे ओहि सभ स्वरक मान्यता देल जाए।" ई विचार मैथिली साहित्य मे एकदम नव छल। कारण एतय भाषाक 'पवित्रता' सँ बेसी 'जीवंतता' पर जोर देल गेल। विदेह एक पत्रिका नहि, एक प्रयोगशाला अछि। विदेहक कार्य-शैली सामान्य साहित्यिक पत्रिकासँ बिल्कुल अलग अछि। ई पूर्ण डिजिटल अछि। ई बहुसंख्यक लोक-भागीदारी पर आधारित अछि। ई खुलल मंच अछि, कियो लीखि सकैत अछि। विदेह संपादकीय कठोरता नहि, बल्कि भाषाक स्वातंत्र्यक समर्थक अछि। गजेन्द्र ठाकुरक नेतृत्व मे ई मंच "मैथिली साहित्यक लोकतांत्रिकरणक प्रथम प्रयोग साबित भेल। विदेह जे विविधताकेँ अपन आश्रय देने रहल, ओकरा तीन ठोस भाग मे बूझल जा सकैत अछि-

A) भाषायी विविधता- विदेह कहैत अछि- "मैथिली सिर्फ एकरूप शब्द-संग्रह नहि, बल्कि अनेक बोलीक संग जीवंत भाषा अछि"।

ताहि कारणेः लोकभाषा बोलचालक वाक्य, परंपरागत ग्रामीण मुहावरा, जिला/प्रान्त अनुसार ध्वनि-भेद, तकनीकी शब्द, मिश्रित शब्दावली सभक समान दर्जा देल गेल। ई मैथिली साहित्यक इतिहास मे अद्वितीय छल।

B) लेखकीय विविधता- विदेह पर प्रकाशित रचनाकारक सूची देखल जाए त' स्पष्ट होइत अछि- सभ जातिक वरिष्ठ लेखक, युवा विद्यार्थी, महिला रचनाकार, ग्रामीण लेखक, विदेश मे रहैत मैथिली समुदाय, प्रयोगवादी लेखक सभक लेखन एक समान साज-सम्मानक संग प्रकाशित होइत छथि। मैथिली साहित्य मे ई पहिल बेर छल जतय- "लेखकक उम्र, स्थान, प्रतिष्ठा आ जाति परिचय" बाधा नहि बनल

C) विषयक विविधता- विदेह मात्र कविता-कहानी धरि सीमित नहि रहल। एतय आलोचना, भाषा-शोध, इतिहास, लोक-विमर्श, तकनीक आ समाज संगे आन सभ विषयक प्रवेश भेल। ई मैथिली साहित्यक दायरा कैँ एकदम व्यापक बना देलक।

3. नव पीढ़ी पर विदेहक प्रभाव- विदेह युवा पीढ़ीक बीच सभसँ प्रभावशाली मंच बनल। डिजिटल उपलब्धताक कारणे गाम-घरक पाठक मोबाइल सँ विदेह पढ़ैत आ लिखैत अछि। ई मैथिली साहित्यक लोकतांत्रिकरणक सभसँ पैघ प्रमाण भेल। पहिने युवा पीढ़ी पहिने मानकक अनावश्यक सख्ती सँ डरैत छल। विदेह कहलक- "अहाँ अपन बोली मे लिखू, अपन भाषा मे लिखू- यैह असल मैथिली छै।" ई कथन नव पीढ़ी लेल क्रांतिकारी साबित भेल। मैथिली कविता, मुक्त लेखन, आधुनिक प्रयोग, सोशल-मीडिया शैली जकरा बहुत लोक "निम्न" मानैत छलाह, ओ सब विदेह पर स्थान पाबि अपन मूल्य स्थापित केलक। विदेह युवा पीढ़ीक

क्रिएटिव सेफ-जोन बनल।

५. भाषायी भविष्य और विदेहक योगदान- विदेह मात्र वर्तमान लेल नहि, बल्कि भविष्य मे मैथिली भाषाक निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निमाहलक। विदेह पहिल प्लेटफ़ॉर्म अछि जाहि ठाम ई-पत्रिका, ई-प्रकाशन, ऑनलाइन पुस्तकालय, डिजिटल कपीराइट आदिक सुविधा छै जाहिसँ विदेह वर्चुअल पाठक समुदाय सभकेँ मैथिली संग जोड़ने रहल। मैथिली साहित्यक भविष्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर निर्भर अछि एकर पहिल सफल प्रयोग विदेह केलक। भाषा केँ समाजक लग अनलक। साहित्य जखन जन-भाषासँ दूर भऽ जाइत अछि, तखन समाज सँ कटि जाइत अछि। विदेह साहित्यक भाषा के फेर लोकजीवनक हृदयसँ सँ जोड़ि देलक। लोक-भाषा मे लिखल रचना पाठक केँ अपन परिवारक बोलीक रस देलक, जाहि कारणे विदेहक पाठकीय संख्या आकस्मिक रूप सँ बढ़ल। विदेह समाजक विभिन्न समूह जेना ग्रामीण आ शहरी, पुरान आ नव, पुरुष आ महिला, देश आ विदेश सभ प्रकारक लेखक आ पाठकक बीच मे सेतु बनेलक। एहिसँ मैथिली समुदायक एकता बढ़ल। विदेह मैथिली भाषायी विविधताक सांस्कृतिक महत्व बढ़ेलक। डायभर्सिटी मात्र साहित्यक मुद्दा नहि रहल, ई सांस्कृतिक अस्तित्वक प्रश्न सेहो अछि। मैथिली भने एक भाषा अछि, मुदा एकर भीतर अनेक उप-भाषा बसल छैक जाहिमे मिथिलाक लोकधुन, मधुबनी क्षेत्रक गीत, जनकपुरक ध्वनि, कोसीक उच्चारण, सहरसाक, नेपालक लेल विदेह एहि सभ कथ्य, ध्वनि आ शैलीक संरक्षित राखबाक प्लेटफॉर्म बनल। साहित्यक इतिहास मे ई कार्य बहुत पैघ महत्व रखैत अछि। कियैकि जखन भाषा अपन आंतरिक विविधता संरक्षित रखैत छै, तखने ओहि भाषा मे समयक संग चलबाक क्षमता होइत छै।

८. विविधताक प्रतिरोध- समाजमे विविधातक प्रतिरोध सभ दिनसँ होइत रहल छै। जतय नव सोच होइत अछि, ओकर प्रतिरोध अनिवार्य होइत छै। विदेहक संग एहने भेल। कतेको परम्परावादी समूह कहलक- भाषा बिगड़ि रहल, मोन टूटि रहल, अनुशासन खत्म भेल, नव पीढ़ी गलत दिशा मे जा रहल मुदा विदेहक उत्तर स्पष्ट छल- “भाषा कोनो संग्रहालयक वस्तु नहि। भाषा जीवित अछि आ जे जीवित अछि, ओ बदलैत रहैत अछि।” कतेको स्थापित साहित्यिक समूह कैँ विदेहक उदारता पसिन नहि आएल। कियैकि ई मंच मे पदवी नहि, सत्ता नहि, गठजोड़ नहि, पुरस्कार समूह नहि किछु नहि अछि। सिर्फ लेखन। ई बात मैथिली साहित्यक सत्ता केंद्र लेल असहज करैत छल। विदेह समूचे आलोचना एवं आलोचना पर आलोचना कैँ अपन मंच पर स्थान दैत रहल। ईहो मैथिली मे एकदम नव डेग छल। कियैकि एतय “विरोधक आवाज”क सम्मान देल गेल- न कि दबैल गेल।

निष्कर्ष– बहुत रास विरोध आ समर्थनक बीच विदेह डायभर्सिटी केर माध्यमसँ मैथिली साहित्यक एक पूरा अध्याय नहि, बल्कि नव युगक घोषणा निर्माण केलक अछि।

डायवर्सिटी आ विदेह

डा. शिव कुमार प्रसाद

समय दसा कुल देखि कै, लोग करत सनमान।
रहिमन दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान।।

कविवर रहीमक देहवसान 1627 ई. मे भेल रहैन। लगभग चारि सौ बरख पहिले ई बात लिखने ओ बतौने रहथिन जे समय, स्थिति, कुल आदि देखि कऽ लोक दोसरकैं सनमान (सम्मान) करैत छथिन। ई बात सामाजिक स्थिति देखैत ओ कहने रहथिन। मैथिली साहित्य आ मिथिलामे एखनहु ताहि समयक सत्य आइ सँ पचीस-तीस बरख पहिने ओहिना छल। मैथिली साहित्यमे एखनहु ओ परिपाटी वा बेबहार किछु कम होइतो विद्यमान छैक। जाति-पाति, छोट-बड़, गुट-बाजी, अपन-आनक आँखि मुनौअल खूब होइछ। एहना स्थिति मे ऊपरका बन्धन तोड़ि मैथिली भाषाक एकटा लौह पुरुषक पदार्पण भेल। जिनका लेल मैथिली माएक ओहि सन्तान जे कुल, दसा सँ हीन रहितहु शब्द-शिल्पक नियामक छलाह, हुनका

मैथिलीक प्रति झुकाव भेलनि। ओ मैथिली साहित्यक पहिल ई-पत्रिका निकालब शुरू केलाह आ ओहि पत्रिकामे ओहन रचनाकार सभकेँ स्थान देबाक निर्णय केलाह जे मैथिली साहित्यक वरेण्य समाजसँ कटल, दुतकारल, अज्ञात रहि साहित्य सृजनमे लागल छलाह।

मैथिली साहित्य मे स्त्री रचनाकारक एक तँ कमी रहैक दोसर जे रहबो करैथ से कोना-कोंचरमे दुबकल रहथि। एहि पत्रिका के एला सँ हुनको सभकेँ एकटा मजगूत आधार भेटलनि। विदेह ई पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर वएह लौह पुरुष छथि जे पत्रिकामे मूल रूप सँ खंती गाड़ने बैसल मठाधीश सभ सँ लोहा लैत एहि पत्रिकाक रचनाकारक बीच डायवर्जन बना नव-नव कुल मूलक शब्द शिल्पी सभकेँ स्थान देलखिन। हुनका पत्रिके टामे नहि बल्कि हुनक नीक-नीक रचनाकेँ अपन श्रुति-प्रकाशन सँ पोथी रूपमे प्रकाशित कए साहित्य जगतमे हुनका स्थापित करबामे बहुमूल्य योगदान देलथिन। मनुख के सामाजिक प्राणी कहल जाइत छैक। मनुखक जनम, पालन-पोषण आ शिक्षण, जेहन जीवन, परिवार आ समाजमे होइत छैक, हुनक बोली वा भाखा, व्यवहार ओहने होइत छैक। मिथिलाक गाम समाजमे रहनिहार लोकक व्यवहार आ संस्कारमे ई विविधता सेहो सहजे देखल जाइत छै। साहित्यमे सेहो एहि तथ्यकेँ सहजे देखल जा सकैत छै। मैथिली साहित्य मे सेहो ई विविधता विद्यमान छै। 'विदेह' ई पत्रिका जेना एहि विविधता कें स्वीकार करैत सभ तरहक रचनाकारकें स्थान देलक ओना आन मैथिली पत्रिकामे नहि देखल जाएत अछि। एहि पत्रिकाक सैकड़ो अंक निकलि चुकल अछि आ तहिना मिथिलाक माटि-पानिमे रचल-बसल सैकड़ो रचनाकारक कथा, कविता, नाटक, एकांकी, निबन्ध, आलेख

आदिक वैभव एतए पसरल छनि। 'विदेह' ई पत्रिकाक एखन धरि ५३८ टा अंक प्रकाशित भ' चुकल अछि। ई पत्रिका ने तऽ कोनो चंदा स्वीकार करैत अछि आ ने एहि मे प्रकाशित रचना हेतु रचनाकारकें कोनो पारिश्रमिक भेटैत छनि। सम्पादन काज सेहो बिन पारिश्रमिककें। मैथिली साहित्य मे ई पत्रिका हमरा बुझने एखन धरिक कालखण्डक पहिल ई पत्रिका अछि जे अनवरत ससमय छोट सँ पैघ रचनाकार तकक रचना के स्थान दैत आगा बढ़ि रहल अछि।

श्री गजेन्द्र ठाकुर 'कुरुक्षेत्रम्-अन्तर्मनक' नामक पोथीमे सुभाष चन्द्र यादवक कथा संग्रह 'बनैत-बिगड़ैत'क समीक्षा लिखैत छथि- "अपनाकँ घोड़ा आ बाघ आ दोसरकँ गदहा आ बकरी कहबाक काल ओ मूल दिशा आ समस्यासँ अपनाकें फराक करैत छथि। कथा-कवितापर अपने समीक्षा कए आत्ममुग्धताक ई स्थिति समीक्षकक दुर्बलता सँ आएल अछि। एहि एक मात्र शब्दसँ हमरा वितृष्णा अछि आ तकर निदान हम मैथिलीक स्लो-पोइजनिंगक विरुद्ध "विदेह ई पत्रिका"क मैथिली साहित्य आन्दोलनमे देखैत छी। एतए साल भरिमे सएसँ बेशी लेखक जुड़लाह तँ पाठकक संख्या लाख टपि गेल। बच्चा आ महिलाक संग जाहि तरहें गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखक जुटलाह से अद्भुत छल।" (1)

मैथिली समीक्षा-आलोचनापर गजेन्द्र जीक ई विचार मैथिली साहित्य मे प्रचलित वैचारिक दरिद्रत्ताक परिचायक अछि। 'विदेह ई पत्रिका'क प्रकाशनक संगे-संग मैथिली साहित्यमे साहित्यकारक एकटा विशेष वर्गक प्रादुर्भाव होइत छैक। ताहि साहित्यकारमे सभसँ पहिल नाम श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीक लेल जा सकैत अछि।

आदरणीय जगदीश बाबूक साहित्यमे मिथिलाक जनगी, माटि, पानि सदति हिलकोर मारैत रहैत छनि। विहनिकथा, लघुकथा, उपन्यास आ नाटकक संगे-संग पद्य साहित्यक हिनक सएसँ अधिक पोथी प्रकाशित भ' चुकल छनि। हिनक विषयमे गजेन्द्र जी लिखैत छथि- "...आ एतय जगदीश प्रसाद मंडल जीक कथा मैथिली कथा धाराक यात्राकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लैए।" मुदा हिनका द्वारा कथ्यकेँ (विहनि कथा, लघुकथा, उपन्यास, नाटक, प्रेरक कथा सभमे) उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह आ क्षमता हिनका मैथिली साहित्य मे ओहि स्थान पर स्थापित करैत अछि, जतय सँ मैथिली साहित्यक इतिहास "जगदीश प्रसाद मंडल सँ पूर्व" आ "जगदीश प्रसाद मंडल पश्चात" एहि दू खण्ड मे पठित होएत।......... हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोण कारण सँ आ सँ अछि हिनकर व्यक्तिगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारण सँ। जे सोचैत छी, जे करैत छी सएह लिखैत छी— तइ कारण सँ।" (2)
जगदीश मंडलक 'बिसाँढ़' सँ एखन धरि धरि सैकड़ों कथा प्रकाशित भ' चुकल छनि। जगदीश प्रसाद मंडलक रूपमे पहिल बेर साहित्य अकादमी कोनो गैर-सवर्ण लेखककेँ अकादमी पुरस्कार देलक। हिनक उपन्यास 'पंगु' सम्मानित भेल। एहि सँ पहिले 'टैगोर सम्मान सँ सेहो श्री मंडल जी सम्मानित भ' चुकल छथि। ई सम्मान मैथिलीमे मात्र श्री जगदीश प्रसाद मंडलजीकें देल गेल अछि। एहि प्रकार 'विदेह' ई पत्रिका एहन-एहन कथा पुरुषकें अपन पृष्ठ पर स्थान देलक जे मैथिली साहित्यक मील स्तंभ सिद्ध भेलाह अछि। एहि कड़ी मे अनेक नाम अछि जे विदेहमे छपि चुकल छथि आ एखनहु छपि रहलाह अछि। किछु नाम अछि— श्री उमेश पासवान, श्री राजदेव मंडल, नन्द विलास राय, राम विलास साहु, उमेश

मंडल, रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', दुर्गानिन्द मंडल, बेचन ठाकुर, कपिलेश्वर राउत, लालदेव कामत, मुन्नी कामत, अखिलेश मंडल, शिव कुमार प्रसाद, नारायण यादव, सुभाष कुमार कामत, संतोष कुमार राय 'बटोही', रामेश्वर प्रसाद मंडल, भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश', प्रदीप कुमार मंडल, मानुषी सिंह, पल्लवी कुमारी, पूनम मंडल, श्री राम प्रवेश मंडल, राम कृष्ण मंडल, बलराम साह, किशन कारीगर, चन्द्रशेखर कामती, जय प्रकाश मंडल, कपिलेश्वर साहु, राधाकान्त मंडल 'रमण', मनोज कुमार मंडल, प्रभात राय भट्ट, मो. गुल हसन, पवन कुमार साह...आदि ई सब अवर्ण रचनाकार 'विदेह' ई पत्रिकाक माध्यम सँ धीरे-धीरे पल्लवित-पुष्पित होइत मैथिली साहित्य धाराकेँ समानान्तर रचना संसार स्थापित कए रहलाह अछि। एहिमे सँ बहुत कम रचनाकार छथि जिनक रचना कोनो आन मैथिली पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित भेल हो।

उमेश पासवान- युवा कवि छथि। हिनक कविता संग्रह अछि 'वर्णित रस'। वर्णित रसमे विविध रसक कवि दृष्टि वैशिष्ट्यक परिचायक अछि। संगहि एकटा दलितक भोगल यथार्थक वर्णन त' अछि एहि संग्रहक अपन दलित होयबा सँ हुनका दुख नहि मुदा दलितकेँ ठकि-फुसला कऽ सत्य सँ भ्रमित नहि कए सकैत छी। वर्णित रसक विषयमे एकटा विमर्श द्रष्टव्य अछि- "तँ की कहल जाए "वर्णित रस" सभकें। की कविक वसन्त मात्र फूल-पात देखैए जे मात्र सुगन्ध दैए, आँखिके सुख दैए, मुदा जरल पेटकें से नीक लगतै? तें कविक वर्णित वसन्तक रस ओ फल विहीन सुन्दर फूल नै भ' सकैए, आ से नहिये अछि। दलित विमर्श दलित द्वारा, आ ओइ दलित द्वारा जेकर धुआधाजा छै सलहेस सन, नै बिसरल अछि अपन संस्कृति, बोली-वाणी, नै बिसरल अछि सोहर-समदाौन। आ ओ छथि उमेश

पासवान।" "ओ जे हिनकर वसन्तकें देखबाक, एन. एच. क चौराहा देखबाक दृष्टि फराक अछि तँ हिनकर कविता सेहो फराक अछि।" (3) आ एहि दृष्टिकें देखल गेल 'विदेह' ई पत्रिका मे। आइ उमेश पासवान मात्र मैथिलीक कवि नहि मैथिली साहित्य अकादमी सँ युवा कवि रूपमे सम्मानित कएल जा चुकल छथि।

'उलहन' (विहनि आ लघु कथा संग्रह) 2013 श्रुति प्रकाशन, पुनर्नवा- (कथा संग्रह) 2017 पल्लवी प्रकाशन, पंचदीप (काव्य संग्रह)- 2018 पल्लवी प्रकाशन आ 'मराएल जिनगी' (कथा संग्रह) 2023 पल्लवी प्रकाशन सँ प्रकाशित रचनाकें बिहार राज्य संस्कृत अकादमी, पटना सँ सम्मानित श्री कपिलेश्वर राउत 'विदेह' ई पत्रिकाक सेहो सक्रिय रचनाकार रहलाह अछि। गत दू बरख सँ अस्वस्थताक कारणे हिनक सक्रियता कनेक कम भ' गेलैन्हि। किन्तु मैथिली कथा साहित्यमे समानान्तर कथा लेखनमे हिनक महत्वपूर्ण योगदान छनि।

श्री राजदेव मंडल- पेशागत भावभूमिसँ अलग भऽ समानान्तर मैथिली साहित्य सृजनमे लागल छथि। हिनक पहिल काव्य संग्रह 'अम्बरा' सन 2010 मे श्रुति प्रकाशन सँ प्रकाशित भेलैन। एहि पोथीक प्रस्तावनामे हिनक कविताक विषय मे लिखल गेल अछि-

"मुदा जखन राजदेव मंडल कविता लिखैत छथि-

'टप-टप चुबैत खूनक बून सँ
धरती भ' रहल स्नात्
पूछि रहल अछि चिड़ै,
अपन मन सँ ई बात
आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति
कि नहि बाँचत हमर जाति...?'

तँ से हमरा सभकें सिहरा दैत अछि। कविक कवित्वक जाति, ओइ चिड़ैक जाति अकि...कोन गोलौसी आ आत्ममुग्ध आमुखक दरकार छै ऐ कविताकें। कोन गोलौसी आ पंथक सौँगर चाही ऐ संवेदना कें"। (५) निस्तुकी बात ई अछि जे कविता लेल भाखा वा भाषा जखन माटि-पानिसँ सानल रहैत छैक त' माटिक सुगन्ध सँ सुरभित भाव मह-मह करैत छै। तैँ गजेन्द्र ठाकुर कें अम्बरा "एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह मानबामे कोनो संदेह नहि छनि।"(5)

राजदेव मंडल जीक दोसर कविता संग्रह 'वसुंधरा' छनि।' श्रुति प्रकाशन सँ ई पोथी 2013 मे प्रकाशित भेल अछि। कवि एहि काव्य संग्रहमे सेहो अपनाकेँ निरापद नहि मानि रहलाह अछि-

"हम नुकाएल छी ओहीठाम
जेतए सब किछुक लागि रहल दाम
नोंचि नेने अछि ओ सब
हमरा देहक मासु-हाड़

हम देखैत सभ किच्छो
कानै छी जार-जार।" (6)

'हमर टोल' राजदेव मंडलक श्रुति प्रकाशन सँ 2013 मे प्रकाशित उपन्यास अछि। एहि टोलमे जिनगीक अनेक रंग घोरल अछि। सुख-दुख, हास-विलास, जाति-पाति, प्रेम-विरोध आ प्रेम केनिहारकें एक संगे जीवित जरेबाक क्रूर अध्याय संग स्त्री विमर्श सेहो उपस्थित कएल गेल छैक। एहि उपन्यासक बाद हिनक उपन्यास 'जल भँवर' पल्लवी प्रकाशन सँ 2017 मे प्रकाशित छनि। 'जाल-पटकथा'-2015, 'त्याग' एकांकी-2017, 'पंचैती' एकांकी-2017,

'वापसी' एकांकी-2018, आदिक संगे-संग हिन्दी मे सेहो अनेक रचना प्रकाशित छानि। हिनक 'अम्बरा' कविता संग्रह लेल विदेह सम्मान-2012क मूल पुरस्कार आ समग्र योगदान लेल विदेह सम्मान-2013 देल गेलैन अछि। 'त्रिवेणीक रंग' हिनक कथा संग्रहक पोथी छनि। 2021 मे पल्लवी प्रकाशन सँ ई संग्रह प्रकाशित छनि। एखनहु राजदेव जीक लेखनी चलायमान छनि।

'विदेह' ई पत्रिकाक एकटा नीक रचनाकार छथि श्री बेचन ठाकुर। मैथिली नाट्य-साहित्यक हिनका एकछाहा रचनाकार कहल जा सकैत अछि। सम-सामयिक परिवेश आ परिस्थितिजन्य भावक ई अद्भुत नाटककार छथि। नाटक मात्र लिखब नहि ओकर निर्देशन, मंचन करएब हिनक विशेषता छनि। नाट्य साहित्यमे नाटक लिखब पैघ बात नहि ओकर मंचन महत्वपूर्ण होइत छैक। बेचनजीक कोनो नाटक एहन नाटक नहि छनि जे मंचित नहि भेल हो। प्रायः मूल-पाण्डुलिपिसँ हिनक नाटक मंचित होइत देखल गेल अछि। पुरुष आ स्त्री पात्रक भूमिकामे हिनक छात्र-समुदाय खूब मोन लगा कʼ अभिनय करैत छनि। किछु अभिनय तʼ उच्च कोटिक रहैत छनि। हिनक नाटक 'छीनरदेवी'क विषय-वस्तुक विषय मे आशीष-अनचिन्हार एकटा प्रश्न उठेलाह अछि जे प्रो. हरिमोहन झाक बाद फेर सँ बेचनजीकें एतेक दिनक बाद कलम उठेबाक की प्रयोजन? "हमरा मनमे ई प्रश्न उठत जे प्रो. झा जइ प्रबलतासँ अंधविश्वास पर कलम चलेने छलाह तकरा बाबजूदो 60-70 साल बाद बेचन जी कें फेर कलम चलेबाक जरुरत किए पड़लनि? एकर दूटा कारण भʼ सकैत अछि, पहिल जे प्रो. झाक प्रहारक बाबजूदो अंधविश्वास मेटायल नै... आ दोसर कारण भʼ सकैत अछि जे बेचन जी कें कोनो विषय नै भेटल होइन्हि।" (7) एकर उत्तर सेहो ओ देलाह

अछि। हमरा एहि विषयमे एतबे कहबाक अछि जे एकभगाह दृष्टि साहित्य आ समाजक भंजक होइत छैक।
जावत सम्यक दृष्टि नहि रहतैक, साहित्यकार साहित्य आ समाजक कल्याण नहि कए सकैत छथि। बेचन जी हरेक साल सरस्वती पूजाक दिन अपन संस्थानक छात्रकेँ अपन नव नाटकक मंचन हेतु निर्देशन करैत छलैथ। ई क्रम आब शिथिल भ' गेलैन्हि मुदा लेखन चलि रहल छनि। हिनक पहिल नाटक 'बाप भेल पित्ती आ अधिकार' श्रुति प्रकाशन सँ 2012 मे प्रकाशित भेलैन। 'विश्वासघात-2013 मे, 'बेटीक अपमान', 'छिनरदेवी', 'ऊँच-नीच', 'भोंट', 'नब घर', 'बरहम बाबा', 'घोघ बाली कनियाँ', 'रसुन-पियाज' आदि प्रकाशित भ' चुकल छनि। 'तीन बाल संगी', 'हरिनाम मे विवाद किए', 'मरबा परहक महीस', 'ठक', 'होनहार चेला', 'सिमरियाक पंडा', 'सपूत', 'राखीक लाज', 'खच्चर कहीं के' आदि नाटक आ एकांकी अप्रकाशित छनि। एहि तरहें नाटक साहित्य पर हिनक काज मैथिली नाटक साहित्य मे एकटा समानान्तर धारा रूप मे प्रवाहित भ' रहल छनि। हिनका गजेन्द्र ठाकुर समानान्तर परम्पराक नाटककार मानैत छथि। "विश्वासघात नाटक बेचन ठाकुर जीक द्वितीय इनिंगक प्रारम्भक घोषणा करैत अछि। 'एन. एच.' सड़क परियोजना पर हिनक लिखल ई नाटक ई सिद्ध करैए जे समानान्तर परम्पराक नाटककार समाजमे उठै-बैसै छथि, जुड़ल छथि।" (४)
जखन मैथिली साहित्यक बात होइत छैक त' प्रायः वएह पारम्परिक आ पण्डिताउ साहित्यक बात होइत छैक। एकैसम शताब्दीक आरम्भमे मैथिली साहित्यक एकटा नव वर्गक पदार्पण भेलैन जे भोगल यथार्थक खूटीमे टाँगल व्यथाक साहित्य लिखब शुरू करैत गेलाह। एतय ई स्पष्ट कए दी जे एहि सँ पहिले सेहो एक्का-दुक्का

साहित्यकार अवश्य छलाह जे अपन-अपन विचारक दृष्टिसँ रचना करैत छलाह। जेना आदरणीय सुभाष चंद्र यादव, प्रो. डॉ. अशोक मेहता, बुचरू पासवान, महेन्द्र नारायण राम आदि-आदि।

एकैसम शताब्दीक हम ओहि रचनाकार सभक बात करैत छी जे खाँटी गामक कथाकार छथि। खाँटी नाटककार छथि। खाँटी कवि आ उपन्यासकार छथि। जिनका भाषामे गामक माटिक सुगन्ध छनि। जे खाँटी मिथिलाक शब्दावलीक प्रयोग करैत छथि। गामक जिनगी, गामक खेत-खरिहान, धार, खत्ता, काश-पटेर आ बाढ़ि-अकालक मारि झेलैत, जीबैत-मरैत जिनगी जीबैत छथि आ ओहि त्रासदी कें शब्दक माध्यमसँ अभिव्यक्ति दैत छथि। एहि तरहक रचनाकारक रचना मे बाह्य आडम्बर, पोंगापंथी नहि, चाक-चिक्य नहि, निम्न वर्गक जिनगीक हँसी उड़ाएब नहि वरन् हुनका सभक जिनगीक साँच, सोच आ विडम्बनाक लेखा-जोखा हुनके सभक भाषामे लिखि रहल छथि। त' एहि तरहक रचनाकार कें समानान्तर धाराक रचनाकार कहबामे कोनो हर्ज नहि।

ताहि रचनाकारक माँझ रामविलास साहुक नाम लऽ सकैत छी। हिनक पोथी श्रुति प्रकाशन सँ 'रथक चक्का उलटि चलए बाट' पद्य संग्रह 2013 मे प्रकाशित छनि। 'अंकुर' लघु कथा संग्रह श्रुति प्रकाशन सँ 2016 मे, 'कोसीक कछेर' पल्लवी प्रकाशन सँ कविता संग्रह 2017 मे प्रकाशित भेलैन। 'गामक सुख' कविता संग्रह हिनक 2018 मे प्रकाशित छनि। एहि संग्रहक 'भिखमंगनी' कविता सर्वहारा वर्गक समाजिक विडम्बनाक दुखद गाथा अछि। जतए विवाहक बाद युवतीक निःसंतान रहबाक कारणे प्रताड़ित कए कोना घर त्यागबाक लेल बाध्य कऽ देल जाइत छै। 'दुधबेचनी' हिनक 2019 मे प्रकाशित कथा-संग्रह छनि। 'अंशुमान' 2021 मे प्रकाशित हिनक कथा-संग्रह

छनि। 'नेत्रदान' दुनू रचना सँ भिन्न खण्ड काव्य छनि जे 2021 मे प्रकाशित छनि। 'मनक मैल' सेहो हिनक कविता संग्रह छनि जे 2018 मे प्रकाशित छनि। हिनका 2018 मे नरेन्द्र सम्मान सँ सम्मानित कएल गेल छनि। श्री साहु कृषिकार्य आ गैर सरकारी संगठन मे शिक्षकक काज करैत लेखन आ अध्यापन मे सदैव लागल रहैत छथि।

नन्द विलास राय एहि पत्रिकासँ वर्षो सँ जुड़ल छथि। ई गामक परिवेशक कथाकार, कवि, नाटककार, एकांकीकार आ संस्मरण विधाक रचनाकार छथि। मात्र पत्रिकामे नहि आइ हिनक अनेक पोथी प्रकाशित छनि। हिनक पहिल लघुकथा संग्रह श्रुति प्रकाशन सँ 2013 मे प्रकाशित भेलैन 'सखारी पेटारी'। 'मरजादक भोज' आ 'भरदुतिया' पल्लवी प्रकाशन सँ 2018 मे प्रकाशित भेलैन। 'हमर चारू धाम' आ 'छठिक डाला' कविता संग्रह सेहो ओही बरख 2018 मे पल्लवी प्रकाशन सँ प्रकाशित भेलैन आ सगरि राति दीप जरय कथा गोष्ठीमे लोकार्पित भेलैन।

वर्ष 2021 मे हिनक तीन टा पोथी प्रकाशित छनि। तीनू पल्लवी प्रकाशन सँ प्रकाशित छनि। 'सरस्वती पूजक प्रसाद' कथा संग्रह 'बहिनपा' लघु नाटिका आ 'अपन बीतल' संस्मरण। सन् 2022 मे हिनक तीन गोट पोथी सेहो प्रकाशित छनि। 'पइत' एकांकी संचयन, 'मोन पड़ैए' संस्मरण, आ 'असल पूजा' कथा संग्रह। तीनू पोथी पल्लवी प्रकाशन सँ प्रकाशित छनि। मिथिलाक गाम-घरक लघु आ मध्यम वर्गक परिवारक परिस्थिति, परिवेश, आशा, अभिलाषा आ ताहि लेल आदर्श पर चलैत पात्रक माध्यम सँ ई अपन कथा, कविता, एकांकी लिखैत छथि। हिनक दू गोट संस्मरणक पोथी जिनगीक मादे बहुत किछु कहैत छानि।

'सगर राति दीप जरय' कथा गोष्ठीक वर्षों सँ भरि राति संचालनक भार उठौनिहार नन्द विलास जी अपन कर्मठता सँ आइ पहिचानक मोहताज नाहि। ४३म सगर राति दीप जरय के ई संयोजक सेहो रहल छथि। हिनका विषय मे बहुत सटीक बात लिखल गेल बुझना जाइत अछि जे- "गाममे रहि क' गामक बात रचनिहार, गामक जिनगीक लग सँ देखि भोगि क' कथारूप मे अपन खुलेआम विचार प्रस्तुत केनिहार, एक सुच्चा रचनाकार नन्द विलास रायजी सेहो मैथिली साहित्यकाश मे अपन उपस्थिति अपना बल पर दर्ज करौलैन।" एहि तरहें नन्द विलास जी मैथिली साहित्यक विकास हेतु एखनहु समर्पित छथि। 'विदेह' ई पत्रिकाक सन्दर्भ मे ई कहब कोनो अतिशयोक्ति नहि जे एहि पत्रिका मे कवि, कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, समीक्षक आदिक चयन हुनका प्रतिभा सँ छनि नहि की हुनक कुल, गोत्र वा विशेष जाति धर्म। (१)

एहि क्रम मे अगिला रचनाकार अभरैत छथि 'मुन्नी कामत' जखन हिनका कोइ नहि चिन्हैत-जानैत छलैन तखन हिनक रचना के 'विदेह' ई पत्रिका मे स्थान भेटलैन। खाँटी भुतही बलानक कछेरक जिनगी आ भाषा ल' क' ई मैथिली साहित्य मे पदार्पण केलीह। समाजक विडम्बना, बेटी, जिनगीक मरीचिका, तकैत जिनगी कूड़ा ढेर मे, संकल्प, उमकल शब्द, दहेजक बिहाड़ि, हराएल हमर रूप आदि विदेह मे प्रकाशित हिनक आरम्भिक कविता छनि। 'उमकल शब्द' मे ओ लिखैत छथि-

"ने लऽ जाएब ने छोड़ि जाएब किच्छो
बस एगो दिया जे जरत
अइ ठाम सदखन, सबहक मन मे
हएत ओ हमर कृति,

हमर करमक ज्योति।"(10)

मुन्नी कामतक एखन धरि हमर जानकारी मे दू गोट कविता संग्रह प्रकाशित छनि। 'सुखल मन तरसल आँखि' पल्लवी प्रकाशन, निर्मली- वर्ष 2014 आ 'अन्ततः' गीताश्री प्रकाशन, पटना - 2019। 'माटिक सुवास' वाची त्रैमासिक पत्रिकामे धारावाहिक रूप मे 2022 सँ 2023 तक प्रकाशित छनि। ई उपन्यास 2023 मे पुस्तकाकार रूप मे नवारम्भ प्रकाशन सँ प्रकाशित भ' चुकल छनि। 'चुक्का' बाल कथा संग्रह नवारम्भ प्रकाशन, मधुबनी सँ 2022 मे प्रकाशित छनि। 'माटिक सुवास' उपन्यास लेल हिनका चेतना समिति, पटना सँ सन् 2024 मे 'महेश्वरी सिंह महेश' सम्मान सँ सम्मानित कएल गेल छनि। सन् 2025 मे 'चुक्का' कथा संग्रह लेल साहित्य अकादमी दिल्ली सँ बाल साहित्य सम्मान सँ सम्मानित कएल गेलैन। सम्प्रति केन्द्रीय भाषा शोध संस्थान (CIIL) सँ जुड़ि शोध कार्य सँ जुड़ल छथि आ नीक काज क' रहलीह अछि। आइ मुन्नी कामत जतय पहुँचली ओकर आरम्भ 'विदेह' ई पत्रिका सँ भेल छनि। हिनक चारू पोथी विदेहक पेटारी मे सुरक्षित छनि। ई आर आगा बढ़ती। 'विदेह' ई पत्रिकामे रचनाकारक वैविध्यता साँचो अनुकरणीय अछि। मैथिली भाषा आ साहित्य समस्त मिथिला मे रहनिहार लोकक थाती अछि। मैथिली साहित्य सृजन मे लागल समस्त रचनाकारक सम्मिलित प्रयास सँ एकर विकास सम्भव छैक। ताहि लेल विदेह ई पत्रिकाक प्रयास स्तुत्य अछि।

एहि विविधता मे एकटा नाम हम जोड़बऽ चाहब, दुर्गानन्द मंडल जीक। दुर्गा नन्द मंडल पेशा सँ शिक्षक छलाह। आब अवकाश प्राप्त क' चुकलाह अछि। विदेह ई पत्रिका मे हिनक परिचय कथाकार रूप मे छनि। जखन आदरणीय जगदीश प्रसाद मंडल जीकें 'टैगोर

सम्मान' हेतु 'कोच्चि' बजौल गेल रहैन त' हुनका संग दुर्गा नन्द जी सेहो गेल रहथि। एकटा प्रेरक कथाकार रूप मे हिनक विशिष्ट पहिचान छनि। हिनक कथ्यक विषय मे सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि- "जँ प्रेमक कथाक चर्चा करी तँ दुर्गा नन्द मंडलकें लाल भौजी, सुजीत कुमार झाक एकटा अधिकार... कामिनी कामायनीक टुटल तारा आ राजनाथ मिश्रक मस्ती सोझ रूपमे प्रेमकथा अछि मुदा ई सभ एक दोसरा सँ भिन्न हास्य, गम्भीरता, सामन्तवादकें अपना तरहें सेहो चिन्हित करैत अछि।" (11)

'कथा कुसुम' हिनक पहिल कथा संग्रह 2016 मे पल्लवी प्रकाशन सँ प्रकाशित छनि। एहि मे 24 गोट कथा संकलित छनि। एहि संग्रह मे संकलित अधिकांश कथा सामाजिक सरोकार सँ सम्बद्ध छनि। पोस्टमार्टम, कुकर्मा, जेहन करनी तेहन भरनी मे जतय नैतिक पतन सँ सम्बद्ध विषय छैक ओतहि अनेक कथा नीति परक छनि, पारस, असली हीरा आदि। हिनक दोसर पोथी छनि 'चक्षु' पल्लवी प्रकाशन सँ 2018 मे प्रकाशित छनि। एहि पोथी पर लिखल छैक- "निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना"। एहि मे कुल 23 शीर्षक छैक। श्री जगदीश प्रसाद मंडलक मौलाइल गाछक फूल, जीवन-मरण, श्री बेचन ठाकुरक 'बेटीक अपमान' आ 'छिनरदेवी' नाटक, टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहने (यात्रा वृत्तांत वा संस्मरण), श्रीमती प्रीति ठाकुरक गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा, दोसर मैथिली चित्रकथा सँ सम्बद्ध नेना लेल सुन्दर चित्रकथा पर पर नीक निबन्ध लिखल छथि। निश्तुकी- उमेश मंडल, जिनगीक जीत- ज.प्र. मंडल, उलहन- कपिलेश्वर राउत, सरकारी पेटारी- नन्द विलास राय आदि अनेक कथा; ओहिना गाबय मिथिला लोक प्रगीत- प्रीतम कुमार निषाद, नवकी पुतोह- नारायण यादव, हमरा बिनु जगत सुन्ना छै-

रामदेव जी, गामक सुख- राम विलास साहु, हमर टोल- राजदेव मंडल, सोंहात-अनसोंहात- डॉ. शिव कुमार प्रसाद पोथी पर दुर्गा नन्द जी छोट-पैघ विचार व्यक्त कएने छथि। 'सगर राति दीप जरय' देवघर पर कार्यक्रमक रिपोर्टिंग सेहो एहि संग्रह मे संकलित छैक। 'चक्षु' क सबसे महत्वपूर्ण बात छैक जे एहि मे जतेक रचनाकारक समीक्षा छनि सभ विदेह ई पत्रिका सँ जुड़ल सहयोगी रचनाकार छथि। दोसर एहि मे चर्चित पोथी आ रचनाकार विदेह ई पत्रिकाक 'डायभर्सिटी' के प्रमाणित करैत अछि। दुर्गा नन्द जी 'सगर राति दीप जरय' के कुशल मंच संचालक छथि। एहि क्रम मे अपन गाम दीप गोधनपुर (झंझारपुर) मे सगर राति दीप जरय कथा गोष्ठीक संयोजकत्व सेहो कएने छथि। हिनक समीक्षा कर्मक विषय मे विदेहक सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक मन्तव्य छनि- "दुर्गा नन्द मंडल जीक डेढ़ दर्जन आलेख मैथिली साहित्यक निबन्ध आ आलोचना क्षेत्र मे अपन फरिच्छ आ फरिछायल दृष्टि लेल मोन राखल जाएत।......मोटा-मोटी कटही गाड़ी आ संगे-संग हवाइ-जहाजक समानान्तर चलैत समाज पर ओ चर्चा करैत छथि। ... आ तही कारणे हिनकर समीक्षा ऐ सभ तरहक रचनाकें बुझि पाबैए, गहिया पाबैए, गहिया कए पकड़ि पाबैए।" (12)

विदेह ई पत्रिका आइ धरिक विविधता मे एकताक सूत्र मे बान्हैत, जिनका सभकेँ आगाँ बढ़ेलक ताहि मे श्री उमेश मंडल सेहो छथि। युवा लेखक के रूप मे उमेश जी काज करैत आइ मैथिली साहित्य जगतक जगजियार व्यक्तित्व रूप मे प्रतिष्ठित भ' चुकल छथि। अपन जीविका उपार्जनक बाट ई आदरणीय डॉ. रामानन्द प्रसाद जीक संग धेलैन। निर्मली नगर परिषद् क्षेत्र मे उमेशजी आइयो 'डाक्टर' साहेब नाम सँ जानल जाएत छथि। हिनक दोसर रूप छनि मैथिली

साहित्य सेवीक रूप मे। ताहि संगे ई कम्प्यूटर संग खेलौंन करैत टाइप केनाइ शुरू केलाह। संगहि मैथिली साहित्यक अध्ययन-मनन करैत 'सगर राति दीप जरय' कथा गोष्ठी सँ जुड़ि मैथिली भाषा-साहित्य सँ सानिध्य स्थापित केलाह।

पहिले अपन अध्ययन वृत्ति के कारण मैथिली साहित्य मे स्नातकोत्तर केला पश्चात् पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त केलाह। आइ अतिथि सहायक प्राध्यापक रूप मे सर्वनारायण सिंह महाविद्यालय, सहरसा (भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा)क मैथिली विभाग मे कार्यरत छथि। दोसर पल्लवी प्रकाशनक संरक्षक बनि सैकड़ो पोथी प्रकाशित क' चुकल छथि। तेसर लगभग पन्द्रह (15) बरख सँ मैथिली कथा साहित्यक प्रसिद्ध कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' के त्रैमासिक आयोजन करैबा लेल दत्त-चित्त सँ संलग्न छथि। चारिम विदेह ई पत्रिका सँ जुड़ि एहि पत्रिकाक डायभार्सिटी चरित्र के रूपायित करबामे सम्पादक महोदय सँ जुड़ि सैकड़ो एहन रचनाकार सभकें सम्मान दैत जोड़बाक प्रयास केलाह जे काल्हि तक त्याज्य छलाह। हिनक मुद्रण कलाक हम प्रशंसा केने नहि रहि सकैत छी। ई अपन चारि सौ पृष्ठक अपन शोध प्रबंध अपनहि टंकित केलाह। पुनः ओही शोध ग्रंथ के अपनहि छपबो केलाह सेहो छः प्रतिमे।

रचनाकार रूप मे हिनक एक गोट पोथी 'निश्तुकी' श्रुति प्रकाशन सँ सन् 2009 मे प्रकाशित छनि। एहि पोथी मे कविताक विविध रूप संकलित छनि। कविता, लघुकविता, हाइकू, टन्का, शेनर्यू, गजल आदिक ई पोथी अपन-अपन कलेवर मे निश्तुकी बात कहबा मे सक्षम छैक। हाइकूक कमाल देखू-

"केशक वीर
अपन वीरताकें

घोंकचौंने छैं"

तहिना-

"अंडी छाहरि

दैत अछि राहति

कोशिकन्हा मे।"

ई टन्का सेहो देखल जा सकैत छैः-

"समस्या आप्त

सोलहनी सजल

साहित्यकार

लेखे पुरान छै अतृप्त

केना एतै यथार्थ.."

एहि पोथीक विषय मे श्री गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि- "उमेश मंडलक 'निश्तुकी' कविता, लघुकविता, हाइकू, टन्का आ गजलक संग्रह थीक। मैथिलीक नव तुर मात्र उमरेक प्रतिष्ठा नै देबऽ चाहैए जँ ओ उमेर अग्रगामी नै होथि। आ से हेबाको चाही, काजक सम्मान छै उमेरक आ पुरानक नै।..........उमेश मंडल जे किछु कहैत छथि — "निश्तुकी कहैत छथि, घुरझी ओझरी सभटा चारू कात पसरल छनि, मुदा सोझराबैत छथि, ओझराबैत नै छथि।" (13)

एहि मूल पोथीक बाद हिनक रुचि सम्पादन आ शोध आलेख दिस अधिक बढ़ि रहल छनि। 'मुक्त पुरुष' हिनक शोध आलेख संग्रह छनि जाहि मे आदरणीय जगदीश प्रसाद मंडल जीक विविध पोथी पर शोध आलेख संकलित छनि। 'पंचदेव' नाम सँ जगदीश बाबू क पाँच-पाँच कथाक 100 संकलन 2018 मे प्रकाशित भेलैन, कुल 500 कथा। 'देवाश्रम' नाम सँ अनेक भागमे जगदीश बाबूक विषय मे अता-पता आ कथांश संकलित छनि। 'निर्विकल्प', 'जेतए ने जाए

कवि ओतय जाए अनुभवी', 'हेण्डबुक सँ फेसबुक धरि', 'समस्या सँ समाधान धरि' मे सेहो जगदीश बाबू क विविध पोथीक अंश संकलित छनि। 'स्वातिसुत' सेहो एही तरहक संकलन छनि। 'चौपहल चेहरा' आ 'कियो करए आप ले माए ले नै बाप ले' सेहो। 'जगदीश प्रसाद मंडलक काव्य संसार' शीर्षक सँ प्रकाशित हिनक पोथी जगदीश बाबूक काव्य संसारक शोध आलेख छनि। 'टूटैत मनक जुड़ाव' मे विविध काल खण्ड मे लिखल 26 गोट कथा संकलित कएने छथि। 'अन्तर्ध्वनि' मे सेहो 15 गोट कथाक ई संकलन केलाह अछि। एहि तरहें अपन इच्छानुसार उमेशजी मैथिली साहित्य सेवा मे लागल छथि।

विदेह ई पत्रिकाक एकटा सहयोगी रचनाकार रूप मे श्री लालदेव कामत एखन धरि अपन समीक्षक माध्यम सँ सहयोग द' रहल छथि। पोथी पर पाठकीय प्रतिक्रिया वा पोथी समीक्षा मादे हिनक नाम विदेह ई पत्रिकाक अनेको अंक मे सहज सुलभ अछि। अपन परिचित, आदरणीय व्यक्ति सभकें सेहो ई नीक परिचय उपस्थापित कएने छथि। मैथिली संस्कृति आ ग्रामीण समाज सँ सम्बद्ध हिनक शोध 'हटनी' सँ प्रकाशित 'कोशी-संदेशः मिथिलाक आवाज' पत्रिका हित लेल सदैव तत्पर रहैत छथि। हिनक 'दिव्य दृष्टि' (पल्लवी प्रकाशन, निर्मली) सँ 2022 ई. मे निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचनाक पोथी प्रकाशित छनि जाहिमे कुल 48 गोट निबन्ध, समीक्षा आ पाठकीय प्रतिक्रिया संकलित छनि। अपन सामर्थ्य अनुसार ई अपन लेखन काजमे सदैव लीन रहैत छथि।

एहि पत्रिकाक रचनाकार सहयोगीमे श्री सन्दीप कुमार साफीक नाम सेहो अंकित कएल जा सकैत अछि। मेंहथ गाम निवासी श्री साफी 'भकजोगनी' आ 'वसन्त पंचमी' क संग विदेह ई पत्रिकामे

जुड़लाह। गामक परिवेशमे रचल बसल साफीजीक कविताक कथ्य आ भाव दलित समाजक विडम्बनाकें नव स्वर देबामे सक्षम छैक। हिनक 'भकजोगनी' क ई पाँति देखी-

"बौआ कनैए भकजोगनी लए
बड़ैए चहूँ ओर
पकड़ रोउ, भुल्ला, होकवा
ठहा-ठही अन्हरियामे लुत्ती
नेने माथ पर नारक आँटी
थरथराइ छी पछुआर मे।"

हिनक पहिल पोथी 'वैशाखमे दलान पर' वर्ष 2014 मे श्रुति प्रकाशन दिल्ली सँ प्रकाशित भेल अछि। एहि मे हिनक आत्मकथाक अंशक संगे-सग कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड आ विचार-बिन्दु खण्ड शीर्षक सँ चारि विधाक रचना संकलित छनि। लघुकथा खण्डमे एकटा कथा छैक 'पसीखाना'। एहि कथामे वर्णित भाषा शिल्प आ भावक बेजोड़ उद्धरण छैक जे हमरा सभक बीच दलित विमर्शक खूँटा रोपने अछि- "तखन एकटा छोटका बच्चा, गाँड़र खुल्ले छँऊरा, टिनही बाटी मे बसिया भात आउर मूरै साग खाइत अंगना सँ बाहर भेल कहैए- हमर बाबू सतलै छै। राति मे माए सँ झगड़ा भ' गेलै, भुखले सुति रहलै, अखन तक नै उठलै।" (14) "... तहिना — ओ जरलाहा के जहिया सँ के भिखमंगा के घर एलौं, कहियो सुख सँ नै खाइ-पिबै छी। ... जे नैहिरामे बियाहमे देलक साड़ी माए-बाप वएह साड़ी, साया ब्लाउज सँ गुजर करै छी।" (15) हिनक कथ्य आ भावक विषयमे बहुत कहबाक हमरा जरूरत नहि बुझना जाएत अछि। हिनक आत्मकथ्यक विषय मे ओहि समय (2014) मे श्री गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि- "मैथिली मे दलित

आत्मकथाक सर्वथा अभाव रहल अछि। सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथा मिथिलाक साहित्य, समाज आ संस्कृतिक हिसाबे ओइ अभावक पूर्ति करैत अछि।" (16)

"बिजनेस मे अपन नाम करितौं" शीर्षक सँ सेहो पोथीक भूमिका लिखल छनि आशिष अनचिन्हारक।

मैथिलक एकटा भावपूर्ण मन—

बिजनेस मे अपन नाम करितौं,

मिथिलाक आगू नाम करितौं।" (17)

"मैथिलीक भिखारी ठाकुर रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार' दइ छथि माटि आ कहै छथि- हमरा बिनु जगत सुन्ना छै।" (18क) रामदेव जीक झारू सेहो अलग-अलग प्रकारक छनि। "रामदेव जी गीत सेहो लिखैत छथि आ पनिसोखा सन रंग-बिरंगक झारू सेहो। जेहन समस्या तेहन झारू। आ मैथिलीमे जखन गोत्र-मूलक उपनाम रखबाक प्रवृत्ति किछु नव आ पुरान लेखकमे देखल जा रहल अछि तखन ई "झारूदार" उपनाम की सभ चीज बिनु कहने कहने कहि जाइछ?" (18ख)

विदेह ई पत्रिकाक रचनाकार रामदेव प्रसाद 'झारूदार' अपन "झारू" सँ परिस्थिति आ परिवेशजन्य स्थितिक साक्षात्कार करेबा मे पूर्णतः सक्षम छथि। हमर जानकारी मे हिनक एकमात्र पोथी प्रकाशित छनि सन् 2012 मे श्रुति प्रकाशन, दिल्ली सँ 'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै'। ई पोथी झारू आ गीतक संकलन छनि। हिनका दृष्टि मे नारीक सम्मान सर्वोपरि छनि। हिनक ताहि विषयक झारू देखू-

"जइ घर मे होइ नारी पूजा,

ओ घर होइ छै स्वर्ग समान।

ओइ घरकें तँ नरके मानू,

जतय होइ नारीक अपमान।" (19)
ओ कहैत छथि-
"दीप जराबू प्रेमक बाती, भरि क' तइमे सिनेहक तेल।
फुटै आभा सुख शान्तिक, जन-जनमे होइ सम्मत मेल।" (20)

किसान, मजूरक जिनगीक विषय मे लिखैत छथि-
"चाहे ओला पुस गिराबै, टपकि रहल होइ जेठक घाम।
लिखलक किस्मत कहाँ विधाता, बैस घरमे करी अराम।" (21)
आ अन्त मे हिनक मानवता देखू —
"ताज मिले सम्पूर्ण जगतकें, आ बनि जीबए झारूदार।
मानव मे मानवता होइ त', बदलै नै ओकर अवतार।" (22)
साँचो "झारूदार" जीक झारू मे इन्द्रधनुषी रंग भरल छनि।
ऊपरमे उल्लेखित रचनकारक अलावे आनो रचनाकार सभ छथि जिनकापर हम भविष्यमे विस्तारसँ लिखब जेना- नारायण यादव, शिव कुमार प्रसाद, अच्छे लाल शास्त्री, दीप नारायण विद्यार्थी, सुभाष कुमार यादव, भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश', मो. गुल हसन, विन्देश्वर ठाकुर, वीरेन्द्र कु. यादव, शुभचन्द्र राय, रामेश्वर प्रसाद मंडल, जय प्रकाश मंडल, बद्रीनाथ राय, मानषी सिंह, पूनम मंडल, पल्लवी मण्डल आदि सन एखन पचासो रचनाकार छुटल छथि। एहि, आलेख मे उल्लेख्य रचनाकार आ हुनक सन्दर्भ मूल रूप सँ विदेह सदेह-2012 कें आधार पर देल गेल अछि। विदेह सँ जुड़ल आ हमर एहि आलेखक शीर्षक सँ सम्बद्ध बहुतो पुरान आ नव रचनाकार एखनहु बाँचल छथि।
संदर्भग्रंथ-
1. कुरुक्षेत्रम्अन्तर्मनक प्रबंध-निबंध समालोचना-, पृ-1.139,

संस्करण -2009
2. प्रबंध-निबंध समालोचना भाग-2, पृष्ठ-275-276
3. प्रबंध-निबंध समालोचना भाग-2, कुरुक्षेत्रम्-अन्तर्मनक-2, खंड-8, पृष्ठ-78-79
4. अम्बरा, राजदेव मंडल, प्रस्तावना, गजेन्द्र ठाकुर, पृष्ठ-8
5. अम्बरा, राजदेव मंडल, प्रस्तावना, गजेन्द्र ठाकुर, पृष्ठ-9
6. बसुंधरा, राजदेव मंडल, केतए छी हम, पृष्ठ-101
7. विदेह मैथिली नाट्य उत्सव -विदेह-सदेह)8), बेचन ठाकुरक नाटक 'छीनरदेवी', पृष्ठ -145-146
8. विश्वासघात, बेचन ठाकुर, मंतव्य (गजेन्द्र ठाकुर), पछुलका पृष्ठ
9. पइतनंदविलास राय -, पछिला पृष्ठ, पल्लवी प्रकाशन, 2022
10. विदेह मैथिली पद्य, विदेह-सदेह-7, पृष्ठ-531
11. विदेह मैथिली लघुकथा, विदेह-सदेह-6, पृष्ठ-10
12. चक्षु, दुर्गानंद मंडल, पछुलका पृष्ठ, वक्तव्यगजेन्द्र ठाकुर-
13. निश्तुकी, उमेश मंडल, पृष्ठ-9-13
14. बैशाख में दलान पर, संदीप कुमार साफी, पसीखाना, पृष्ठ -89
15. बैशाख में दलान पर, संदीप कुमार साफी, पसीखाना, पृष्ठ-92
16. बैशाख में दलान पर, संदीप कुमार साफी, आत्मकथा,
17. बैशाख में दलान पर, संदीप कुमार साफी, बिजनेस मे अपन नाम करितौं
18 कप्रबंध-निबंध-समालोचना ., भाग-2, गजेन्द्र ठाकुर, पृष्ठ-57
18 खप्रबंध-निबंध-समालोचना ., भाग-2, गजेन्द्र ठाकुर, पृष्ठ-57
19. हमरा बिनु जगत सुन्ना छै, राम प्रसाद मंडल 'झारूदार', 2012, पृष्ठ-21

20. हमरा बिनु जगत सुन्ना छै, राम प्रसाद मंडल 'झारूदार', 2012, पृष्ठ -८९

21. हमरा बिनु जगत सुन्ना छै, राम प्रसाद मंडल 'झारूदार', 2012, पृष्ठ -९५

22. हमरा बिनु जगत सुन्ना छै, राम प्रसाद मंडल 'झारूदार', 2012, पृष्ठ-105

विदेह आ नव लेखक

कल्पना झा

कोनो स्थापित साहित्यकारक, सम्पादकक ई जिम्मेदारी बनैत छनि, जे साहित्य मे रुचि रखनिहार कोनो नवागन्तुकक भीतर प्रतिभा देखथि, तँ ओकर लेखनी कैँ परिमार्जित करबा मे, ओकर लेखनी कैँ यथोचित दिशा देबा मे सहयोग करथि। जाहि सँ लेखकक नव पीढ़ी तैयार भ' सकए। जखन स्वयं वरिष्ठ साहित्यकारक रूप मे स्थापित भ' जाइ तँ अगिला पाँती तैयार करबा दिस ध्यान देबाक चाही हुनका लोकनि कैँ। एहि तरहैँ नव लेखक पर समय खर्च करब एक तरहक साहित्य-सेवे कहल जाएत। मुदा से एहन साहित्य-सेवा करबाक भावना मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकारक देखाइत नहि अछि, एखनुक समय मे। केओ माएक पेटे सँ तँ महान साहित्यकार, कि सुयोग्य सम्पादक बनि क' नहिए आबैत अछि धरती पर। सभ महान साहित्यकार कैँ मार्गदर्शक रूप मे केओ-ने-केओ भेटलथिन, तखन ओ महान बनलाह। से कतेको लोक सार्वजनिक रूप सँ स्वीकार सेहो करैत रहैत छथि, ई बात। एखन हम 'मैथिली साहित्य मे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क योगदान' पर लेख सभ लिखि रहल छी। से एहि

जीवनी-लेखन-क्रम मे जनतब भेटि रहल अछि, जे 'व्यास' जी कैँ डेग-डेग पर कतेको मार्गदर्शक भेटैत रहलथिन। मात्र साहित्य-सृजनक मामला मे नहि, जीवनक अन्यान्य गतिविधि मे सेहो। स्कूलक विद्यार्थी छलाह तखन सँ ल' क' 'इंजीनियरिंग'क पढ़ाइ आ साहित्य-सृजन धरि, सभ गतिविधि मे केओ-ने-केओ निःस्वार्थ मार्गदर्शन कएनिहार भेटैत रहलथिन हुनका। धीरेन्द्रनाथ लाहा, बलभद्र बाबू, दयानाथ बाबू, रमानाथ बाबू, कतेको लोकक प्रोत्साहन आ मार्गदर्शनक फलस्वरूपैँ तँ 'व्यास' जी, 'व्यास' जी बनलाह। हुनकर जन्मजात प्रतिभा कैँ चिन्हल गेलनि, किछु सहृदय लोक द्वारा आ ओहि प्रतिभा मे निखार अनबा लेल ओ सभ तन-मन-धन सँ हुनकर सहयोग कएलनि। तदुपरान्त जे व्यक्तित्व समाजक सोझाँ आएल, से बुझले अछि सभ कैँ। समाजक लेल जतेक ओ क' गेलाह, से बहुत कम लोक क' पाबैत अछि अपन जीवन मे।
एखनुक समय मे जखन निःस्वार्थ मार्गदर्शन, प्रोत्साहन देनिहारक अकाल सन देखाइत अछि, विदेह टीम नव लेखकक प्रतिभाक मूल्यांकन क' ओकरा अवसर प्रदान क' रहल छथि, से प्रशंसनीय ओ अनुकरणीय अछि। विदेह टीम माने संपादक गजेन्द्र ठाकुर कहू कि आशीष अनचिन्हार एक्कहि बात अछि सभ। जखन कि विदेह टीम कोनो वरिष्ठ साहित्यकारक टीम अछिओ नहि। बएस सँ तँ वरिष्ठ नहि छथि मुदा ज्ञान-बुद्धि आ परिपक्वता मे वरिष्ठ छथि। दूरदर्शिताक मामला मे वरिष्ठ। हिनका लोकनि लग जे 'विजन' छनि, से कहाँ देखाइत अछि अन्य कोनो पत्रिकाक सम्पादक लग। वास्तव मे 'सम्पादक'क जिम्मेदारी निभा रहल छथि विदेहक सम्पादक। मतलब ककरो भीतर प्रतिभा देखि, ओकरा 'पॉलिश' करबाक लूड़ि छनि विदेह टीम लग। ओकरा अवसर देबाक साहस

सेहो छनि। आ उदारता सेहो छनि। माने दोसर पर समय खर्च करब समयक बेरबादी नहि बुझाइत छनि हिनका लोकनि कैँ। ककरो प्रतिभा परखबाक दृष्टि सेहो छनि। फिल्मी बोली मे जकरा 'जिगरा' कहल जाइत छै से 'जिगरा' छनि। आ एकरे अभाव देखाइत अछि, अन्यान्य सम्पादक मण्डलीक भीतर। एकर पाछाँ की कारण भ' सकैए, तकर अनुमान तँ हम नहि लगा पाबि रहल छी मुदा आशीष अनचिन्हार अपन एकटा फेसबुक पोस्ट मे एहि तरहेँ एकर कारणक खुलासा कएलनि अछि- "मैथिलीक पुरान रचनाकार सभ रिस्क नै लेब' चाहैत छथि। किनको डर छनि जे नव कहीं हुसि ने जाए तँ किनको डर छनि जे नवका हमरा सभकेँ पछाड़ि देत। आ अंततः एकर फल मैथिलीकेँ भोग' पड़ि रहल छै।" एहि खुलासक संग ओ 'निर्भीक नव साहित्यकार' सभ कैँ विदेहक आँगन मे स्वागत सेहो करैत छथि। से विदेह टीम वास्तव मे नव-नव कलम पकड़निहारक स्वागत तँ ठीके करैत अछि। ई हमर आँखिक देखल अछि आ एहि पोस्टक फोटो सेहो हम दऽ रहल छी। एहिसँ पहिने आशीष जी अपन गजल विधा लेल बहुत नव लेखककेँ प्रोत्साहित कऽ गजल विधामे जोड़ने छथि आ ई नव गजलकार सभ विदेहमे सेहो लिखलाह।

सोशल मीडियाक चलती बला एखनुक समय मे नव प्रतिभा ताकब, ओकर लेखकीय क्षमता कैँ परखब आसानो बहुत भ' गेल अछि। आइ-काल्हि सोशल मीडिया पर धड़ल्ले से सभ अपन मोनक गप्प लिखि रहल अछि। पारखी नजरि रहने फेसबुक पोस्ट सभक अवलोकन करैत, प्रतिभाक मूल्यांकन क' सकैत छथि सम्पादन कार्य मे लागल लोक। ओकरा प्रोत्साहित क' सकैत छथि। ओकर लेखनी कैँ उचित दिशा देबा मे सहयोग क' सकैत छथि। आ इएह

क' रहल छथि विदेह टीम। "अहाँ अमुक विधा मे नीक काज क' सकैत छी, प्रयास करू" एहि तरहेँ जँ कोनो नव रचनाकार के प्रोत्साहन भेटतनि तँ अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे रचनाकारक मनोबल कतेक बढ़ि जेतनि। आ ओ वास्तव मे नीक काज क' सकत।

एहि ठाम हमरा अपन अनुभव साझा करब आवश्यक बुझना जा रहल अछि। जएह-जतबे टा लेखन-यात्रा अछि हमर, ताहि मे बहुतो लेखक-सम्पादक लोकनि सँ परिचित भेलहुँ। हुनका सभ कें चिन्हलहुँ, जनलहुँ। हमर लेखन-यात्राक शुरुआत फेसबुके पर किछु छोट-छोट लघुकथा/बीहनि कथा सभ लिखैत, भेल अछि। तकर बाद किछु-किछु पोथी पढ़ि अपन प्रतिक्रिया टीपब शुरु कएलहुँ। एकटा सामान्य गृहणीक भीतर एतेक आत्मविश्वास कहियो नहि विकसित भ' सकैत छलै, कि ओ किछु एहनो लिखि सकैत अछि जे कोनो महत्वपूर्ण पोथी मे संलग्न करबा योग्य होएत। कोनो पत्रिका मे प्रकाशित करबा योग्य होएत। सर्वप्रथम सोशल मीडियाक माध्यम सँ परिचित भेल लोक मे सँ श्री अशोक मेहता जी हमरा भीतर आत्मविश्वास बढ़एबाक प्रयास करैत, निःस्वार्थ भावेँ हमर लेखनी मे सुधार लेल किछु-किछु टिप्स देब शुरु कएने छलाह। जे टिप्स हमरा अद्यतन भेटिए रहल अछि। तदुपरान्त 'विदेह ई मैगजीन'क सम्पादक-टीम, विशेष रूप सँ आशीष अनचिन्हारक महत्वपूर्ण भूमिका छनि हमर आत्मविश्वास बढ़एबा मे। एहि ठाम गौर करए बला बात ईहो अछि, जे कोनो नवागन्तुक रचनाकारक मनोबल बढ़ाए, विदेह टीम ओहि रचनाकारक संग-संग अपन मातृभाषा पर सेहो उपकार क' रहल छथि। संगहि पत्रिकाक लेल ई बेस लाभकारी तँ अछिए। नव विचार, नव भाषा-शैलीक संग नव लोकक प्रवेश सँ

एकटा पत्रिकाक कंटेंट मे ताजगी आओत आ निश्चित सराहल जाएत। हमर तँ बहुत सकारात्मक अनुभव रहल अछि एहि टीमक संग। हम कृतज्ञ छी आ आजीवन कृतज्ञ रहब एहि टीमक प्रति। जखन 'केदारनाथ चौधरी विशेषांक'क घोषणा कएल गेल विदेह टीम द्वारा, तखन हमरा कहल गेल छलए, "हमर अनुमान अछि, अहाँ आलोचना लिखि सकैत छी।" संगहि केदारनाथ चौधरीक दू-चारि टा पोथीक पी डी एफ सेहो पठौलनि आशीष जी। व्हाट्सएप्प पर। एहि तरहेँ हमर लेखनी कैँ एकटा दिशा देलनि ओ। एकटा जिम्मेदार सम्पादकक इएह तँ काज छै!

आ से हमरे टा नहि, कइअक टा एहन रचनाकार छथि जे, जखन शुरुआती दौर मे छलाह, जखन संघर्ष क' रहल छलाह; तखन विदेह टीम हुनका सपोर्ट कएलथिन। मार्गदर्शन कएलथिन। एहन रचनाकार मे सँ किछु नाम एहि तरहेँ अछि। एहि सूचीमे हरेक विधाक लेखक सभहक नाम अछि जनिका विदेह टीम प्रोत्साहित केलकनि एवं आजुक समयमे बहुत रास लेखक स्थापित भऽ गेल छथि- पूनम मण्डल, मधूलिका मिश्र, तूलिका, स्वास्तिका ठाकुर, नीलिमा चौधरी, सुनीता ठाकुर, रश्मि प्रिया, प्रियंका झा, किरण चौधरी, नीतू कुमारी, सन्दीप कुमार साफी, दुर्गानन्द मण्डल, राम विलास साहु, कपिलेश्वर राउत, नंद विलास राय, जगदीश प्रसाद मंडल, उमेश मंडल, बेचन ठाकुर, राजदेव मंडल, उमेश पासवान, रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', कुंदन कुमार कर्ण, विन्देश्वर ठाकुर, त्रिपुरारी कुमार शर्मा (ओना ई हिन्दी मे पहिनहि सँ गजल लिखैत छलाह), सुनील कुमार झा (आब सुनील कुमार 'भानू'), विकास झा रंजन (आब विकास 'वत्सनाभ'क नाम सँ जानल जाइत छथि), हिनकर लेखन-यात्रा सेहो 'विदेह' सँ होइतहि आगाँ बढ़लनिहेँ। एकर

अतिरिक्त रोशन जी, दीप नारायण विद्यार्थी, मिहिर झा, ओमप्रकाश जी, प्रवीन नारायण चौधरी प्रतीक, शांति लक्ष्मी चौधरी (आब राजनेत्री छथि) सन कतेको रचनाकार अपन पहचान बनौलनि। एहने किछु आरो नाम सभ अछि, प्रदीप पुष्प, विनीत उत्पल, रवि मिश्रा 'भारद्वाज', जगदानंद झा 'मनु', अजय ठाकुर 'मोहन', प्रभात राय 'भट्ट', अनिल, इरा मल्लिक, मनोहर कुमार झा, कुमार पंकज झा, स्वाति लाल, निशांत झा, जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' (अनिलजी पहिनेसँ रचनारत छलाह मुदा हम गजलक संदर्भमे लिखलहुँ), अविनाश झा अंशु, नवल श्री (पंकज चौधरी नवल श्री), चंदन झा, अमित मिश्र, मिहिर झा, राजीव रंजन मिश्र, क्रान्ति कुमार सुदर्शन, शिव कुमार यादव, जवाहर लाल कश्यप, मुन्नी कामत, बालमुकुन्द पाठक, सुमित मिश्र, रामकुमार मिश्र। एतबा नाम हमरा जनतब मे अछि। एहि नाम सभक अतिरिक्तहु आरो कतेको लोक हेताह, जे विदेह पर लिखैत अपन लेखन-यात्रा शुरु कएने हेताह। निश्चिते बहुत नाम छूटल होएत एखन। ईहो बात उल्लेखनीय जे एहि नव लेखकमेसँ बहुत रास पहिल पोथी विदेह आ श्रुति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भेलै।

मुदा जतबा नाम लिखलहुँ अछि हम, सेहो संख्या कम नहि अछि। एतेक भारी संख्या मे नव लेखक कैँ अवसर देब आ ओकर मार्गदर्शन करबाक काज तँ करितहि आबि रहल छथि, विदेह टीम। संगहि बहुतो पुरान आ स्थापित साहित्यकार कैँ सेहो यथोचित मार्गदर्शन देबाक काज करैत रहलाह अछि आशीष अनचिन्हार। उपरोक्त पैराग्राफ मे जतेक नाम गनौलहुँ हम, ताहि मे एक टा नाम अछि जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' जीक। से हिनकर अनुभव, तकर चर्चा करब आवश्यक अछि। हुनकहि लिखल बात (फेसबुक पोस्ट)

जस-के-तस राखि रहल छी हम। हुनकर बात सँ स्पष्ट भ' जाएत, जे विदेह टीम की-कतेक-कोना सहयोग क' रहल छथि नव लेखकक तँ जानिए क', पुरान आ अनुभवी लेखक पर्यन्त कैँ। हिनका लोकनि सँ जकरा, जे सहयोग चाही (लेखन-कार्य मे) से निश्चित भेटतनि, हर हाल मे भेटतनि, एहन हिनका लोकनिक उसूल छनि, एहन सन बुझना जा रहल अछि हमरा। देखू/पढ़ू जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' जीक अनुभव, जे हुनका विदेह एवं अनचिन्हार आखर सँ जुड़ि क' प्राप्त भेलनि। ओ विदेह लेल कहि रहल छथि-

"विदेह-ईः इन्टरनेट पर पाक्षिक मैथिली पत्रिका 'विदेह-ई' देखि क'बहुत आनंदित भेलहुँ। संपादक गजेंद्र ठाकुरजीसं हमरा भेंट नै अछि। मोने-मोन हुनका एहि लेल धन्यवाद देलियनि। ओ अपनो खूब लिखलनि आ एकटा विशाल लेखक-पाठक वर्ग तैयार केलनि। हम अवकाश प्राप्तिक बाद फरवरी 2011 मे पटना एलहुँ। पत्रिका नियमित रूपसं निकलि रहल छल। हम एहिमे नियमित रूपसं लीख' लगलहुँ : गीत, गजल। लिखबाक गति बढल। हमर अधिकांश गजल विदेहमे छपल। विदेहकें सदेह सेहो देखल।

तहिना अनिल जी 'अनचिन्हार आखर लेल लिखैत छथि-

"नेट पर मैथिलीमे गजल लेखनक लेल एकटा स्वतंत्र वेबसाइट बना क', ओहि पर गजल शास्त्र प्रस्तुत करैत, बहुत लोक कैँ गजल लेखन लेल प्रेरित करब, मार्ग-दर्शन देब, पुरस्कारक योजना चलाएब, बाल-गजल, भक्ति-गजल आदि विशेषांक प्रस्तुत करब, गजलकारक परिचय-श्रृंखला प्रस्तुत करब आदि काज कठिन छल से आशीषजी (आशीष अनचिन्हार) केलनि आ हमरा सबहक आलोचनाक पात्र बनलाह।

कएटा हिंदी, मैथिली पत्रिका मे गजल छपि चुकल छल। कतहु

कियो एना आंगुर नहि उठौने छल। साठि बरखक उमेर मे जहिया ई सुनल जे व्याकरणक दृष्टि सँ कएटा गजल दोखपूर्ण अछि तँ अहंकार कैँ चोट लागल। बहुत दिन धरि एहि बात पर कान देब आवश्यक नहि बुझलहुँ। मुदा जखन-तखन ई बात ध्यान मे आबि जाइत छल।

अंततः अहंकार पराजित भेल। जे नै जान' चाहैत छलहुँ, से जनबाक इच्छा भेल, जे नै पढ़' चाहैत छलहुँ, से पढ़बाक मोन भेल। 'अनचिन्हार आखर'क साइट पर गजलक व्याकरणक एतेक सामग्री देखि हर्ष भेल। मैथिलीक लेल गौरवक बात बुझाएल। हम सभ रदीफ आ काफिया पर ध्यान दैत छलहुँ, एकटा वस्तु छुटि रहल छल। ओ अछि बहर। हम सभ बहरक झंझटि सँ मुक्ति चाहैत छी, किएक त ओकर अभ्यास नै। जिनका ई बूझल भ' गेलनि जे बहरक की भूमिका छै शेर मे, हुनका लगैत छनि जे बहरक बिना गजल कोना हेतै। स्वीकार आ विरोधक बीच बहरयुक्त बहुत रास गजल लिखा रहल अछि।"

जगदीश जीक कहल उपर्युक्त बात मे जाहि वक्तव्य पर हमर ध्यान गेल, से अछि - "अंततः अहंकार पराजित भेल। जे नै जान' चाहैत छलहुँ, से जनबाक इच्छा भेल, जे नै पढ़' चाहैत छलहुँ, से पढ़बाक मोन भेल।" इएह अहंकार पराजित नहि भ' पाबैत छनि बहुतो स्थापित साहित्यकार लोकनिक। आ तैँ ओ सभ गजल पर कएल गेल आशीष अनचिन्हारक काज सँ ने लाभान्वित होएबाक इच्छा व्यक्त क' सकैत छथि, ने हुनकर कएल काजक सराहना/प्रशंसा क' पाबैत छथि। एकटा दोसर वरिष्ठ साहित्यकार अरविन्द ठाकुर जीक चर्चा करब सेहो एहि ठाम प्रासंगिक होएत। कोन तरहेँ आशीष अनचिन्हार हुनकर मनोबल बढ़एबाक प्रयास करैत रहलाह। आ

हिनकहि प्रोत्साहनक फलस्वरूप अरविन्द ठाकुरक झुकाव बढ़लनि आलोचना/समीक्षा लिखबा दिस। जखन अरविन्द ठाकुरक पहिल आलोचनाक पोथी "रोशनाइक लोकपक्ष" प्रकाशित भेलनि, तखन आशीष अनचिन्हारक उद्गार एहि तरहेँ बहरएलनि-- "आइ जखन कि हमरा लग 2022 मे प्रकाशित अरविन्द ठाकुर जीक पहिल आलोचनाक पोथी "रोशनाइक लोकपक्ष" आएल अछि तखन हमरा लगैए जे एहि पोथी मे हमर अपने छवि हो। हमरे पोथी हो। एहि पोथी पर, पढ़ि क' लिखबाक अवसर सेहो हमरा भेटत। पोथी मे आलोचना तँ छै मुदा एकरा मैथिली कथेतर गद्य कहल गेलैए। हमरा ई सदिखन लगैए जे निर्भीक भऽ कऽ जँ कोनो लेखक केर आब्जर्भेसन देल जाए तँ पूरा ब्रह्मांड ओकरा पूरा करबाक लेल सहायता करैत छै (कने फिल्मी)। तँ ई हमर आब्जर्भेसन छल। ई अलग बात जे अरविन्दजी आलोचना बहुत पहिने सँ लिखैत छलाह।" एहि उद्गार मे ध्यान देबए बला बात अछि जे आशीष अनचिन्हार स्वयं क्रेडिट लेबा लेल लालायित नहि देखा रहल छथि। ओ कहि रहल छथि, "ई अलग बात जे अरविन्दजी आलोचना बहुत पहिने सँ लिखैत छलाह।"

जखन कि प्रोत्साहित करैत रहरहाँ कहैत रहैत छलाह, सार्वजनिक रूपेँ, "हमरा बुझाइत अछि, अरविन्द ठाकुर मात्र आ मात्र आलोचक छथि। मुदा मैथिली मे विधा केर विवशता मे ओ कथा-कविता आदि लिखैत रहलाह। ई हमर सोच अछि आ से हम सार्वजनिक करैत रहलहुँ। 2019 मे फेसबुक पोस्ट देलहुँ, 2020 मे जखन विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांक कैँ पोथी रूप मे सम्पादित करबाक अवसर भेटल तखन ओकर भूमिका मे हम साफे-साफ अरविन्दजीक आलोचना कैँ हुनकर आन विधा सँ पहिने रखलहुँ।"

विभिन्न माध्यम सँ आशीष अनचिन्हार ईहो व्यक्त करैत रहलाह अछि जे "अरविन्दजीक कुल 20 टा आलोचनाक पोथी एबाक चाही जाहि मे सँ ई पहिल भेल अछि आ ।9 टा बाँकी रहल आब। उम्मेद जे उन्नैसो बाँकी भेटत हमरा सभ कैँ।"
प्रमाणक रूप मे आशीष अनचिन्हारक उक्त फेसबुक पोस्ट सभक रेफरेंस हम लेलहुँ अछि। ई आवश्यक छलए। एहि कारण सँ, जे लोक कैँ अनढ़नक महिमा मंडन सन नहि बुझना जाइन हमर लेख। ओहुना दोसराक प्रशंसा आ अपन निन्दा सुनबाक शक्ति बड़ थोड़ लोकक भीतर रहैत छनि। खैर, जे-से। विदेह टीमक ई प्रयास, मतलब नव लेखकक संग पुरान लेखक धरि, सभक लेखनी कैँ यथोचित दिशा देबा मे सहयोग करबाक प्रयास/तत्परता वास्तव मे सराहनीय, प्रशंसनीय ओ अनुकरणीय अछि।
मुदा ई 'सराहनीय ओ प्रशंसनीय' काज, विशेष रूप सँ नव लेखक सभ कैँ अवसर देब, ओतेक सहजो काज नहि छनि कोनो सम्पादक लेल। नव लेखकक भीतर प्रतिभा देखैत काल सम्पादक के बहुत बातक ध्यान राखब आवश्यक रहैत छनि। नव लेखकक प्रतिभा परखबा लेल मात्र भाषाक शुद्धता टा नहि, बल्कि हुनकर दृष्टि, हुनकर सिखबाक क्षमता, मौलिकता, विषय-बोध, सन कइअक टा बिन्दु पर नजरि राखब आवश्यक रहैत छै। एहि सभ बिन्दु पर नव लेखक के परखबाक दृष्टि जँ विकसित भ' जाइन एकटा सम्पादकक, तँ कोनो अजोह लेखकक भीतर सेहो सशक्त लेखकक झलक हुनका देखा सकैत छनि। आ ओहि अजोह लेखकक लेखनी के अपन मार्गदर्शन सँ चमका सकैत छथि। कहबाक माने सम्पादक बस एकटा चयनकर्ताक भूमिका नहि, अपितु मार्गदर्शकक भूमिका निभाबथि। ओहि नव लेखकक लेखन-शिल्प आ दृष्टि के निखारब

सेहो एकटा नीक सम्पादकक काज छनि। लेखक के गाइड करथि, जाहि सँ हुनकर लेखन स्पष्ट, सुसंगत आ प्रभावी बनि सकनि। संगहि ईहो ध्यान राखब आवश्यक छनि सम्पादक के, जे लेखकक मौलिक पहचान दबए नहि। मतलब लेखकक मौलिक पहचान बनल रहए आ ओकर लेखन-शैली परिमार्जित होइत जाए, से प्रयास रहबाक चाही सम्पादकक। तैँ कहलहुँ ई ओतेक सहज काज नहि। आ तैँ अधिकांश सम्पादक एहि फेरा मे नहि पड़ैत छथि। जे-जे लिखि क' पठा देलक छापि देल गेल। काज खतम।
एक समय मे मिथिला मिहिर पत्रिका मे लिखैत बहुतो लेखक अपन लेखन-यात्रा शुरु कएलनि, जे आगाँ जा क' नीक लेखकक रूप मे समादृत भेलाह। वर्तमान मे मैथिली पत्रिका (प्रिंट) सभक की-केहन हाल छै, से ककरो सँ नुकाएल नहिए अछि। चेतना समितिक सौजन्य सँ प्रकाशित होमए बला पत्रिका घर-बाहर लेल हम कइअक टा रचना पठौलिअनि, प्रकाशितो भेल। मुदा आइ धरि स्मरण नहि अछि, कहियो सम्पादक महोदय किछु सुझाओ देने हेताह जे ई विधा लिखू, कि ओ विधा लिखू। जखन कि हमरा लेल अभिभावक-तुल्य छथि चेतना समिति मे सक्रिय गणमान्य लोक सभ। तैँ इच्छा रहैए किछु मार्गदर्शन भेटए।
नीक सम्पादक के ईहो ध्यान राखब आवश्यक छनि जे पुरान स्थापित लेखकक परम्परा सेहो चलैत रहए, संगहि नव लेखक के अवसर सेहो देल जाए। माने प्रयोगधर्मी बनी मुदा जड़ि सेहो थेने रही। जाहि सँ नव लेखक सेहो पुरान स्थापित लेखक सभ के पढ़थि, गुनथि आ हुनका सभ सँ सीखथि। मतलब पुरान लेखकक संगतिए मे, हुनकर सभक संग चलैत सशक्त "नव बेंच" तैयार कएल जाए। एतेक सशक्त, जे "लम्बी दूरीक धावक" सिद्ध होइथ। आ ई

जिम्मेदारी विदेह टीम बड़ कुशलतापूर्वक निभा रहल छथि। बहुतो एहन लेखक, जे एखन खूब चर्चा मे छथि, से जखन अपन पहचान बनएबा लेल संघर्षरत छलाह तखन विदेह टीमक भरपूर सहयोग भेटल छलनि।
एकटा नीक सम्पादक, लेखकक क्षमता तँ परखिए लैत छथि; लेखकक आकांक्षा सेहो भाँपि लैत छथि ओ। संगहि पाठकक अपेक्षा सँ सेहो अनभिज्ञ नहि रहैत छथि सुयोग्य सम्पादक। एहि तरहेँ लेखकक क्षमता, आकांक्षा आ पाठकक अपेक्षाक बीच 'सेतु'क काज करैत अछि सम्पादक। एहि सेतु के बड़ मजबूती सँ दुनू छोर पकड़ने रहब आवश्यक छनि। मतलब पाठकक अपेक्षा केँ ध्यान मे राखैत, लेखक सँ हुनकर क्षमतानुसार सहयोग लैत काज लेबाक लूड़ि रहबाक चाही। दालि-भातक कौर नहि छै एकटा नीक सम्पादकक दायित्व निभाएब। बस नाम लेल माथा पर 'सम्पादक'क ठप्पा लगाएब तँ बामा हाथक खेल छै मुदा वास्तविक बला सम्पादक बनि क' देखाएब लोहाक चना चबाएब सन कठिन काज छै।
कतेक एहन सम्पादक कि लेखक छथि मैथिली भाषान्तर्गत काज कएनिहार मे सँ, से बुझले होएत सभ केँ। मैथिली साहित्यिक जगत सँ बहुत लोक नैतिक पतन दिस अग्रसर होइत देखा रहल छथि। नव लेखक केँ प्रोत्साहित करबाक साँती उन्टे ओकर प्रतिभा सँ व्यक्तिगत लाभ लेबाक कोशिश रहैत छनि किछु स्थापित साहित्यकारक। किछु तँ बेवकूफ बनएबाक प्रयास करबा मे सेहो संकोच नहि करैत छथि। विदेह टीमक एहन मानसिकता नहि देखाएल हमरा कहियो। हमर लेखन-यात्रा हालांकि बहुत नमहर तँ नहि अछि, तथापि किछु एहनो सम्पादक सँ सरोकार पड़ि चुकल अछि; जनिकर मानसिकता छनि जे मात्र वरिष्ठ साहित्यकारक

रचना प्रकाशित कएने हुनकर पत्रिकाक मान आ अरुदा, दुनू बढ़तनि। एकर एकदम उलट विदेह मे नव-पुरान सभ तरहक रचनाकारक रचना के स्थान देल जाइत रहल अछि। स्थाने टा नहि देल जाइत अछि, नव रचनाकार कें उचित मार्गदर्शन सेहो भेटैत छनि विदेह टीम सँ। जँ कोनो रचनाकार दिशा भटकि गेल होइथ, तँ हुनका सही रस्ता देखएबाक काज सेहो करैत छथि/कएलनि अछि विदेह टीम। ई बात हम निजगुत जनतबक आधार पर कहि रहल छी। ई कतेक बड़का उपकार भेल मैथिली भाषा पर, साहित्य पर, से बुद्धिजीवी लोक खूब नीक जकाँ बुझैत हेताह। आ बुझि रहल छथि। भले केओ पीठ थपथपाबनि, नहि थपथपाबनि विदेह-टीमक। मुदा लोहा सभ मानि रहल छथि मोने-मोने, जे विदेह टीम किछु एहन तँ अवश्ये क' रहल छथि माँ मैथिलीक लेल, जे ठोस; तथ्यपरक आ आगाँ आबए बला पीढ़ीक लेल बहुत उपयोगी सिद्ध होएत। मंच-माला-माइक सँ स्वयं कें दूर राखि विदेह टीम बस अपन काज पर फोकस करब जानैत अछि। नव-नव आइडिया, जे कोनो अस्सी बरखक अनुभवी, बुजुर्ग सम्पादकक दिमाग मे नहि आबैत छनि, से हिनका लोकनिक दिमाग मे आबैत छनि आ ओहि आइडिया पर काज सेहो करैत छथि, करबाबैत छथि। काज लेबाक लेल विदेह टीम अपन विरोधी पर्यन्त सँ सम्पर्क करैत छथि। माने अपन व्यक्तिगत 'अहम्' के ताख पर राखि मात्र अपन मातृभाषाक लेल की-कतेक नीक काज कएल जा सकैए, ताहि पर फोकस छनि हिनका लोकनिक। ई एहि टीमक सभ सँ बड़का विशेषता छनि। "जे लोक विदेहक विरोध करैत छथि, जे विदेहक सहयोगी नहि छथि, जे विदेह सँ असहमति राखै छथि तिनको लग विदेहक टीम जाइत अछि। हुनका पर काज करैत अछि। हुनकर योगदान कें रेखांकित

करैत अछि। भूतकाल मे विदेह एहन काज केने अछि आ भविष्यो मे करिते रहत।" ई कहब छनि आशीष अनचिन्हारक।
आगाँ ओ कहैत छथि, "विदेहक ध्येय "मैथिली" छै, ने कि व्यक्तिगत राग-द्वेष। एहि संदर्भ मे विदेह मैथिलीक एकमात्र पत्रिका अछि जे अपन विरोधीक योगदान कैँ सेहो समाजक सामने अनैत अछि।" आ उक्त बात सभ ओ पब्लिकली बाजैत/लिखैत छथि। माने एहि बात सभक सत्यता मे कतहु कोनो शंकाक गुंजाइश नहि। ओ जे क' रहल छथि, से लोकक सोझाँ अछि। ओ जे कहि रहल छथि, सेहो लोकक सोझाँ अछि। लोक स्वयं बुझि/देखि सकैत छथि, जे हुनकर कहल बातक संग कएल गेल काज मे कतेक-की तारतम्यता छनि।
मातृभाषा मैथिलीक नाङ्गरि ध' लाभान्वित होएबाक (आर्थिक/सामाजिक/साहित्यिक) लोभ-मात्र नहि, मातृभाषाक लेल किछु स्तरीय काज करबाक लौल छनि गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हारक एहि जोड़ीक हृदय मे। ई हमरे टा नहि समस्त मैथिल समाज कैँ देखा रहल हेतनि। निश्चित देखा रहल हेतनि। सराहना करथि; नहि करथि, से भिन्न गप्प ! वास्तव मे विदेह टीम सन आरो सुच्चा सेवकक बेगरता छनि माँ मैथिली कैँ।

Ashish Anchinhar's post

Videha www.videha.co.in
Ashish Anchinhar · 3 April 2014 ·

मैथिलीक पुरान रचनाकार सभ रिस्क नै लेब' चाहैत छथि। किनको डर छनि जे नव कहीं हुसि ने जाए तँ किनको डर छनि जे नव हमरा सभकें पछाड़ि देत।

आ अंततः एकर फल मैथिलीकें भोग' पड़ि रहल छै।

निर्भीक नव साहित्यकार सभकें विदेहक आँगनमे स्वागत अछि।

Gajendra Thakur and 6 others 14 commer

Like Comment Send

Kumar Padmanabh
पछिला किछु साल में पाँच-छओ टा किताब पढलहुँ. ओहि में दूइ टा किताब महत्वपूर्ण छल, अँग्रेजी मे "डिफिकल्टी आफ बीइँग गुड" आ एकटा मैथिली में "पुरोहित". पहिल किताब लिखने छलाह प्रोक्टर एंड गैम्बल के भूतपूर्व सी.ई.ओ "गुरचरण दास" दोसर किताब'क लेखक छलाह हमरे गौआँ. दुनू लेखक'क ई सबसँ पैघ किताब नइँ छलनि. मुदा एक चीज जे सबसँ महत्वपूर्ण छल ओ छल दुनू किताब लिखबाक लेल काएल गेल तैयारी. गुरचरण दास सी.ई.ओ पद सँ इस्तीफा द' कें तीन साल'क छुट्टी पर रहलाह आ केवल यैह किताब लेल पढाई करैत रहलाह. हमर गौआँ ओहि किताब लिखबा'क लेल तीन साल धरि भारतीय पुरातन इतिहास'क अध्ययन करैत रहलाह. कतेक लोक'क मुँह सँ सुनने छी जे कम सँ कम दस घँटा प्रतिदिन पढाई अबश्ये करैत छलाह. हमरा बुझने ओ दुनू लेखक यदि ओतेक पढाई नइँ केने रहितथि त' आई ओ किताब दुनियाँ'क में सफल नइँ भेल हेतैक. हमरा हिसाब सँ लेखक-कवि बनए सँ पहिने नियमित पाठक भेनाए निताँत आवश्यक. मैथिली'क सबसँ पैघ समस्या जे आब पाठके नइँ बचल अछि. आइ किओ लोकनि जँ किताब लिखि कें पाँच सय कापी बेच दैथि त' आश्चर्य'क गप्प होएत. साढे चारि करोड मैथिली बाजए वाला लोक मे यदि पाँच सय एहेन नवयूवक नइँ जे

Jagdishchandra Thakur's post

एखनहु प्रेरित करैत रहैत छथि |

(21) विदेह-ई :इन्टरनेट पर पाक्षिक मैथिली पत्रिका 'विदेह-ई' देखि क'बहुत आनंदित भेलहुँ | संपादक गजेंद्र ठाकुरजीसं हमरा भेंट नै अछि | मोने-मोन हुनका एहि लेल धन्यवाद देलियनि | ओ अपनो खूब लिखलनि आ एकटा विशाल लेखक-पाठक वर्ग तैयार केलनि |
हम अवकाश प्राप्तिक बाद फरवरी २०११ मे पटना एलहुँ |पत्रिका नियमित रूपसं निकलि रहल छल |
हम एहिमे नियमित रूपसं लीख' लगलहुँ : गीत, गजल | लिखबाक गति बढल |हमर अधिकांश गजल विदेहमे छपल | विदेहकें सदेह सेहो देखल |

(22) अनचिन्हार आखर :

नेट पर मैथिलीमे गजल लेखनक लेल एकटा स्वतंत्र वेबसाईट बना क', ओहि पर गजल शास्त्र प्रस्तुत करैत, बहुत लोककें गजल लेखन लेल प्रेरित करब, मार्ग-दर्शन देब, पुरस्कारक योजना चलायब,बाल-गजल, भक्ति-गजल आदि विशेषांक प्रस्तुत करब,गजलकारक परिचय-श्रृंखला प्रस्तुत करब आदि काज कठिन छल से आशीषजी (आशीष अनचिन्हार) केलनि आ हमरा सबहक आलोचनाक पात्र बनलाह |

कएटा हिंदी,मैथिली पत्रिकामे गजल छपि चुकल छल | कतहु कियो एना आंगुर नहि उठौने छल |

साठि बरखक उमेरमे जहिया ई सुनल जे व्याकरणक दृष्टिसं कएटा गजल दोखपूर्ण अछि त अहंकारकें चोट लागल |
बहुत दिन धरि एहि बात पर कान देब आवश्यक नहि बुझलहुँ |मुदा, जखन-तखन ई बात ध्यानमे आबि जाइत छल |

अंततः अहंकार पराजित भेल | जे नै जान' चाहैत छलहुँ, से जनबाक इच्छा भेल, जे नै पढ़' चाहैत छलहुँ,से पढ़बाक मोन भेल |

'अनचिन्हार आखर'क साइट पर गजलक व्याकरणक एतेक सामग्री देखि हर्ष भेल |

मैथिलीक लेल गौरवक बात बुझाएल |

हम सभ रदीफ़ आ काफिया पर ध्यान दैत छलहुँ, एकटा वस्तु छुटि रहल छल | ओ अछि बहर |
हम सभ बहरक झंझटिसँ मुक्ति चाहैत छी, किएक त ओकर अभ्यास नै

| जिनका ई बूझल भ' गेलनि जे बहरक की भूमिका छै शेरमे, हुनका लगैत छनि जे बहरक बिना गजल कोना हेतै |

Ashish Anchinhar's post

Ashish Anchinhar
6h

जे लोक विदेहक विरोध करैत छथि, जे विदेहक सहयोगी नहि छथि, जे विदेहसँ असहमति राखै छथि तिनको लग विदेहक टीम जाइत अछि। हुनकापर काज करैत अछि। हुनकर योगदानकेँ रेखांकित करैत अछि। भूतकालमे विदेह एहन काज केने अछि आ भविष्योमे करिते रहत।

विदेहक ध्येय मैथिली छै ने कि व्यक्तिगत राग-द्वेष। एहि संदर्भमे विदेह मैथिलीक एकमात्र पत्रिका अछि जे अपन विरोधीक योगदानकेँ सेहो समाजक सामने अनैत छै।

Ashish Anchinhar's post

Ashish Anchinhar
10 March 2023

हमरा सभ दिन लगैत रहल जे अरविन्द ठाकुर Arvind Thakur मात्र आ मात्र आलोचक छथि। मुदा मैथिलीमे विधा केर विवशतामे ओ कथा-कविता आदि लिखैत रहलाह। ई हमर सोच अछि आ से हम सार्वजनिक करैत रहलहुँ। 2019 मे फेसबुक पोस्ट देलहुँ, 2020 मे जखन विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांककेँ पोथी रूपमे संपादित करबाक अवसर भेटल तखन ओकर भूमिकामे हम साफे-साफ अरविन्दजीक आलोचनाकेँ हुनकर आन विधासँ पहिने रखलहुँ।

आइ जखन कि हमरा लग 2022 मे प्रकाशित अरविन्द ठाकुरजीक पहिल आलोचनाक पोथी "रोशनाइक लोकपक्ष" आएल अछि तखन हमरा लगैए जे एहि पोथीमे हमर अपने छवि हो। हमरे पोथी हो। एहि पोथीपर पढ़ि लिखबाक अवसर सेहो हमरा भेटत। पोथीमे आलोचना तँ छै मुदा एकरा मैथिली कथेतर गद्य कहल गेलैए।

हमरा ई सदिखन लगैए जे निर्भीक भऽ कऽ जँ कोनो लेखक केर आबजर्भेसन देल जाए तँ पूरा ब्रह्मांड ओकरा पूरा करबाक लेल सहायता करैत छै (कने फिल्मी)। तँ ई हमर आबजर्भेसन छल। ई अलग बात जे अरविन्दजी आलोचना बहुत पहिनेसँ लिखैत छलाह।

विभिन्न माध्यमसँ हम ई व्यक्त करैत रहलहुँ अछि जे अरविन्दजीक कुल 20 टा आलोचनाक पोथी एबाक चाही जाहिमेसँ ई पहिल भेल अछि आ 19 टा बाँकी रहल आब। उम्मेद जे उन्नैसो बाँकी भेटत हमरा सभकेँ।

एहि संग हुनक दीर्घ कविताक पोथी "जड़ताक प्रतिवाद मे" सेहो आएल अछि। आ हमरा एकरो पढ़बाक अछि।

Ashish Anchinhar
Feb 7, 2019

हमरा हिसाबें मैथिलीमे आलोचक किछुए छथि ताहिमे ई पाँच प्रमुख छथि- राजमोहन झा, कलानंद मिश्र, अरविन्द ठाकुर

विदेह पत्रिका केर अंक 189 (1 नवम्बर 2015) अरविन्द ठाकुर विशेषांक छल। प्रस्तुत पोथी ओकरे संशोधित रूप अछि। संशोधन माने किछु रचना यथा अरविन्दजीक अपन मौलिक रचना बला खंड हटाएल गेल अछि तँ किछु ओहने आलोचना-संस्मरण सभकेँ जोड़ल गेल अछि जे कि विशेषांक प्रकाशित भेलाक बाद लिखेलै। जोड़ल रचनामे एक-दू एहन अछि जे कि मूलत: विदेहक विशेषांक लेल लिखेलै मुदा एलै विशेषांक प्रकाशित भेलाक बाद आ तकर बाद लेखक ओकर उपयोग आन पत्रिकामे

मैथिलीमे गैर सवर्ण लेखक कमी एवं गजेन्द्र ठाकुर

मुन्ना जी

मैथिलीमे साहित्यक सत्ता पर बैसल साहित्यकार सभ कखनो फरमान जारी करथि त' कखनो बहन्ना। अदौ काल सँ ओहने एकटा आधारहीन बहन्ना रहनि-"मैथिली साहित्यमे गैर सवर्ण लेखक कहाँ अबैत छै"।
मैथिलीक साहित्यिक सत्ताक मठाधीशक ऐ अघोषित खडयंत्रकेँ तोड़बाक श्रेय 2008 सँ विदेहक माध्यमे गजेन्द्र ठाकुरकेँ देल जाइत छनि। विदेहक माध्यमे किछुए बरखमे अल्पसंख्यक, गैर सवर्ण लेखक, बहुसंख्यक भ' देदीप्यमान भऽ गेलाह। आब स्वघोषित विद्वान / लेखककेँ छाती पर साँप लोटाइ लागल। नवसिखुआक श्रेणीसँ टपि माँजल लेखक बनि एक पर एक रचनाकार उभरि सोझाँ आबि अपन उपस्थितिक धमक देलनि। विदेहक एहने एकटा रचनाकार भेलाह श्री जगदीश प्रसाद मंडल जे मैथिली कथा साहित्यमे अपन उपस्थितिकेँ मैथिली साहित्यक स्वर्णिम कालमे बदलि देलनि। नन्हकी सँ सनकी रचनाकार जे जड़ल जौड़क ऐंठन सन अगराइ छलाह से सभ साकांक्ष भ' उठलाह। जहन एकाएकी निस्सन रचनाकार धर्रोहि लागय लागल तखन फेर इएह मठाधीश सभ कहय लगलाह- हम त' हुनका सबकेँ रचनाकार मानबे नै करब। हुनका व्याकरण ज्ञाने नै छनि, वर्तनी अशुद्ध छनि.... ! नै जानि कोन शब्द आ कर्मक छीनरधप खेलाय लगै गेलाह। एम्हर गजेन्द्र

जी, हेरायल-बेरायल, कतिआएल रचनाकार सभकें लोग दोसाइन सँ ताकि-ताकि एकटा नमहर पाँति बना देलनि। आ... आब गैर सवर्ण आ नवतुरिया लेखक अल्पसंख्यक सँ बहुसंख्यक बनि मैथिलीक खोधल पीचकें सैरि क' चौका-छक्काक झड़ी लगा देलैन। जे आब विगत 18 बर्खसँ अनवरत चलि रहल अछि।
समकालीन मैथिली साहित्यमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जी आइ एकटा सीमान सन भ' ठाढ़ भेल छथि। माने कथा-उपन्यास मे जगदीश मंडल जी सँ पहिने आ जगदीश मण्डल जीक पछाति। एकटा एहेन रेखा घीचल गेल जकरा सँ आगू जाएब एकटा चुनौती सन। मुख्यधरामे रमल दलितो लेखक सभ जगदीश जीकेँ कात कऽ देने छलनि विदेहसँ पहिने। एक दलित लेखक हुनक पांडुलिपि धरि घुरा देने रहनि। ओहिठामसँ श्री जगदीश बाबूकें क्रमशः हौसला दऽ, पोथी छापि, टैगोर पुरस्कार एवं साहित्य अकादमीक मूल पुरस्कार धरि अनबामे श्री गजेन्द्र ठाकुरक योगदान अविस्मरणीय रहत।
आब कन्ना रोहट बला सबहक आँखिक नोर सुखाए लागल मुदा बोलीक भरोस एखनो। आब गिनब' लगलाह- हम फन्नाकेँ अनलौं त' हम चिल्लाकें। विदेहसँ निकलल पहिल पीढ़ीक लेखक सभ सेहो अपन ज्ञान सँ निस्सन रचनाक प्रदर्शन क' जगह बनबैत नव पीढ़ीक रचनाकारकैं जोड़ब शुरू केलनि। ठाकुरेजीक प्रेरणा सँ मैथिलीमे आएल बिन्देश्वर ठाकुर, जनकपुर, नेपाल, संदीप साफी, मनोज मण्डल, सुभाष कामत आ साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार सँ सम्मानित मुन्नी कामत नाम उल्लेखनीय अछि।
हेराएल-बेराएल आ नवतुरियाकेँ आनि मैथिली साहित्यमे मुख्य धाराक समक्ष कतिआएल-बेराएलक एकटा ढार ठाढ़ क' दैलनि। जाहि सँ साहित्य एकभगाह होइ सँ बचि समतुल भ' रहल। एकरा

समतुल करबामे गजेन्द्र जीकें आर्थिक, शारीरिक, मानसिक अवरोहन आ सामाजिक उपहास सेहो उघ' पड़लनि मुदा ओ अपन बाट पर अडिग रहि मैथिलीकें एकटा नव पेटार देबामे सक्षम भेलाह जाहि सँ मैथिली चिरकाल धरि श्रृंगारित रहि पओती।

विदेह पत्रिकाक जनपक्षधरता

डॉ. धनाकर ठाकुर

विदेह पाक्षिक ई-पत्रिका (इंटरनेट पत्रिका) अछि जकर 450म अंक शीघ्रहि भए जाएत एकर माने जे ई पत्रिका अपन बारम्बारता-निरंतरता वा आवृत्ति बनौने रखलक अछि। एहि पत्रिकामे मैथिलीक सभ विधाक सामग्री प्रायः भेटि जाएत। मुद्दा मात्र एतबहि लेल की विदेह वा कोनहुँ पत्रिकाकेँ मोन राखल जाएत? विदेह या कोनहुँ आन पत्रिकासँ ई अपेक्षा रहत जे ओ साहित्यिक उत्कृष्टताक संग जनोपयोगी अछि वा नहि? साहित्यहि नहि, साहित्यसँ इतर गतिविधिमे सेहो। भाषा विचार संप्रेषणक माध्यम मानल जाइत अछि आओर विचारक व्यापकता तऽ असीम अछि। तखन कोनहुँ कथित साहित्यिक पत्रिका दर्शनक दुआरि पर थाप दऽ सकैत अछि आओर ज्ञान-विज्ञानक आरि सेहो छूबि सकैत अछि बल्कि छूबाकहि चाही मुद्दा मात्र एतेक रहलाक बादहुँ कोनहुँ एक पत्रिकाक विस्तारमे कसरि रहिए जेतैक यदि ओ उपेक्षित व्यक्ति, वर्ग वा समुदायक बात नहि उठबैत अछि।

जखन हम उपरोक्त कसौटीपर विदेहकेँ कसैत छी तऽ लगैत अछि जे विदेह पत्रिका ओहन किछु डेग जरूर उठेने अछि जे ओकर जनपक्षधरताक संकेत दैए, किन्तु विदेहक जनपक्षधरताक बहुत रास काज एनाइ बाँकी अछि, तथापि ईहो सत्य जे मैथिलीक आन सभ प्राचीन-नवीन पत्रिकाक तुलनामे बहुत बेसी जनपक्षधरता विदेह

लग छैक। विदेहक जनपक्षधरताकेँ हम मुख्यरूपसँ चारि-पाँच बिंदुमे बाँटि कऽ देखि रहल छी-

(1) भाषायी जनपक्षधरता,

(2) लेखकक वर्गक जनपक्षधरता,

(3) विषय एवं विधाक जनपक्षधरता,

(4) पुरस्कारक जनपक्षधरता,

(5) विशेषांकक जनपक्षधरता

आब उपरोक्त पाँचो जनपक्षधरताक संबंधमे अपन संक्षिप्त विचार राखि रहल छी-

(1) विदेह सभसँ पहिले भाषाकेँ जनोपयोगी हेबाक बात केलक। विदेहक अपन एक मानक भाषा रहलाक बादहुँ ओ अपन लेखक सभकेँ अपनेहि वर्तनीमे लिखबाक प्रोत्साहन देलक। ओना एकर दू फल सामनेमे एलै पहिल जे विदेहमे प्रकाशित आलेख सभ भाषाक स्तरपर कचकूँह लगैत छैक आओर कखनहुँ काल अबूझ सेहो, आओर दोसर फल ई जे एहिसँ लेखकक आत्मविश्वास बढ़लैक, रचनाक संख्या संगे लेखकक संख्या सेहो बढ़लैक। विदेह अपन एहि भाषाक जनपक्षधरतापर एखनहुँ अछि। एखनहुँ विदेहक रचनासभमे वर्तनीक अभाव भेटत किन्तु हरेक अंकमे कोनहुँ ने कोनहुँ नव लेखक अवश्य भेटि जाएत। बहुत संभव जे ई नव लेखक सभ विदेहक आत्मविश्वास लऽ आगा बढ़थि आओर अपन भाषामे सुधार आनि आगू प्रसिद्ध बनथि। कोनो पत्रिकाक उद्देश्य मात्र मानक भाषामे प्रकाशन करब नहि होएबाक चाही। यदि कोनहुँ पत्रिका अपना समयमे प्रचुर मात्रामे नव लेखक सामने नहि आनि सकल तखन ओकर सभ कसरत व्यर्थे बूझू। नव लेखक अनबाक दृष्टिकोणसँ मिथिला मिहिरक बाद विदेहहि अबैत अछि आओर ई

ओकर जनपक्षधरताक पहिल कोण भेल।

(2) विदेहसँ पहिलहुँ असवर्ण जातिक लेखक सभ मैथिलीमे भेल छथि, हुनक रचना नामी-नामी पत्रिका सभमे प्रकाशित भेल छनि संगहि पोथी सभहक प्रकाशन सेहो भेल छनि किन्तु मैथिलीक कोनहुँ पत्रिका ओहन वातावरण नहि बना सकल जाहि ठाम असवर्ण लेखक सभ बिना कोनो संकोचकेँ अपन नीक-बेजाए दूनू संगे प्रकाशित भऽ सकथि। विदेह एहि सन्दर्भमे मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि जे मैथिलीक बहुसंख्यक जनता लेल अपनाकेँ खोलि देलक। हमरा बुझाइत अछि जे विदेहक भाषानीतिक कारणसँ मैथिलीक बहुसंख्यक जनता ओकरा अपन लग बूझऽ लगलैक। मैथिलीमे विदेहसँ पहिने एहन काज कोनहुँ आन पत्रिका नहि कऽ सकल छल। तेँ विदेहमे सभ जाति-वर्गक लेखक समान रूपसँ लिखैत भेटताह। ई विदेहक दोसर किन्तु सभसँ बेसी प्रभावशाली जनपक्षधरताक कोण भेल।

(3) मैथिलीमे सभ पत्रिकाक सम्पादक लेखक वर्गसँ छथि विदेह सेहो एकर अपवाद नहि अछि। देखल जाइत अछि जे पत्रिकाक सम्पादक जाहि विधा वा विचारधारासँ जुड़ल रहैत छथि ओहि विधा वा विचारधाराक बेसी प्रभाव ओहि पत्रिकामे आबि जाइत छैक। ओहन सम्पादक पत्रिका चलेबाक लेल विधामे समझौता तऽ कऽ लै छथि मुदा अपन विचारधाराक संगे नहि। तेँ देखबैक जे मैथिलीमे अधिकांश पत्रिकामे चाहे कविता हो कि कथा कि नाटक कि आन विधा सभ ओही विचारधाराक भेटत जाहिसँ ओकर सम्पादक जुड़ल छथि। एहन स्थितिमे मैथिलीक दोसर विचारधाराबला लेखक कतऽ जाथि? जे कोनो पत्रिका अपन विचारधाराक नामपर रचनाक चयन करैत छथि से किन्नहुँ जनपक्षधर नहि भऽ सकैत छथि किन्तु जखन

विदेहमे प्रकाशित रचना सभकेँ देखल जाएत तऽ ओहिमे धुर वामपंथी रचनाक संगे भक्तिपरक गीत सेहो भेटत। परिवर्तनक कामनाक संगे परम्पराक पूजा सेहो भेटत आओर ई भेलै बहुसंख्यक जनता, असवर्ण जनताक अनेक लेखककेँ विदेहसँ जुड़लाक कारण। (५) विदेह पुरस्कारक सम्बन्धमे एतेक जनपक्षधर रहल जे ओ समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार सेहो घोषणा करैत रहल यद्यपि हम व्यक्तिगत रूपसँ सदैव एकर विरोधी रहलहुँ जे एहिमे समानान्तर शब्द नहि रहक चाही कारण अनेक मनीषीक जीजिविषासँ साहित्य अकादमीमे मैथिली प्रतिष्ठित भए सकल अछि। तेँ केवल 'विदेह पुरस्कार' पर्याप्त छल तथापि एकरहुँ विदेहक जनपक्षधरताक द्योतक बूझक चाही। विदेहक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार मात्र पढ़ल-लिखल लेखकहिक लेल नहि छल ई पुरस्कार ढोल-पिपही बजबऽ बलासँ लऽ कऽ महींसक पीठपर बैसि कविता लीखऽ बलाकेँ सेहो देल गेल छैक जे विदेहक वास्तविक जनपक्षधरता भेल किन्तु बादमे विदेहक ई समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कारक कोनहुँ सूचना नहि देखाइ पड़ल। बादमे विदेह अनेक साहित्यिक व्यक्ति पर केन्द्रित विशेषांक निकालए लागल (हम जतेक नाम देखलहुँ ताहि नाम सभकेँ एखन धरि साहित्य अकादमी पुरस्कार नहि भेटलन्हि किन्तु हुनक अग्रणी भूमिका मैथिलीक लेखन, परिशीलन, परिवर्धनमे रहल अछि)। हम अपन एक आलेख "विदेह ओ गजेन्द्र" मे ई बात लिखनहुँ छी जे "एहि बीच व्यक्ति केन्द्रित अनेक अंक निकालनाइ से ठीक-ठाक ओना ओतहु समानान्तरता मोनमे जे ओतेक आपत्तिजनक नहि।" (६) विदेह जखन विशेषांकहि निकालऽ लागल तखनहुँ ओहिमे जनपक्षधरता रहल से चाहे लेखकक सम्बन्धमे हो, लेखकक

जातिक हो वा कि लेखकसँ इतर आन विषय-वस्तुक सन्दर्भमे हो। उदाहरण लेल जे विदेह पहिल चरणमे अपनाकेँ असवर्ण जनता लेल खोलि देने रहै से जखन विशेषांक प्रकाशित केलक तखन ओहिमे बेसी नाम सवर्णक एलैक किन्तु सोचबाक बात ईहो जे ओ सवर्ण जिनकापर विदेह विशेषांक प्रकाशित भेल सेहो सभ मैथिलीक मुख्यधारासँ अन्यमनस्क छलाह। विदेहक जनपक्षधरताक ई एकटा अलग दृष्टिकोण भेल जे एहि पत्रिकाकेँ कट्टर बनेबासँ बचा लेलक। विदेह मात्र लेखककहि पर नहि विविध संगठनहुँ पर विशेषांक प्रकाशित केलक जाहिमे मिथिला स्टूडेंट यूनियन, मिथिला विकास परिषद्‌क संगहि अन्तरराष्ट्रिय मैथिली परिषद् अछि। विदेहक विशेषांक मात्र साहित्य वा संस्था पर नहि रहल ओ एक्टिभिस्ट 'पोखरि पुरुष- नारायणजी चौधरी, भाषावैज्ञानिक डा. रामावतार यादव आ पांडुलिपि विशेषज्ञ भवनाथ झापर सेहो प्रकाशित केलक। एहन विशेषांक सभ विदेहक व्यापक जनपक्षधरताक दिग्दर्शक अछि। विदेहक ई व्यापक जनपक्षधरता सिद्ध करैत अछि जे समाज लेल साहित्यहिटा नहि आनहुँ विषय-वस्तु अनिवार्य छैक आओर विदेहक ई जनपक्षधरता ओकरा कोनहुँ प्राचीन वा समकालीन पत्रिकासँ बहुत आगू लऽ जाइत छैक।

जँ हम अपन पाँचो बातकेँ समेटि एना कही जे "विदेहक जनपक्षधरता कोनहुँ व्यक्ति, विचारधारा या वर्ग विशेषक पिछलग्गू नहि अछि आओर तेँ ई पत्रिका पढ़ल-लिखल लोकसँ लऽ कऽ गामक साधारण पाठक लग पहुँचि गेल अछि" तऽ से बेसी उपयुक्त रहत।

गजेन्द्र ठाकुर आ मैथिली समीक्षाशास्त्र

हितनाथ झा

ककरो काज चुप-चुप ससरैत अछि, समाजपर अपन अमिट छाप छोड़ैत अछि, बामा-दहिना भीड़ आ कोलाहलसँ अपनाकेँ फराक करैत, किन्तु सूक्ष्म-दृष्टि रखैत, अपन धरोहरक सम्पदाकेँ सुरक्षित रखबाक लेल प्राचीन पद्धतिसँ नवीन दृष्टि रखैत, नवीकरणक लेल डिजिटलाइजेशनक विकसित दुनियाँमे प्रयोग क' आगाँक पीढ़ीक लेल वरदान साबित करबाक हेतु जे मानव निरन्तर अपनाकेँ ओहिमे झोंकि देने हो आ ओहि हेतु समाजसँ कोनो प्रतिफलक आकांक्षा नहि रखैत हो, ओहेन मनुष्य कोनो समाजमे विरले आ विरल होइत अछि, कतेको युगक बाद देखनामे अबैत अछि।

ई तँ भेल एक पक्ष, जँ ओहि व्यक्तिमे एहि सभ गुणक अतिरिक्त दोसरो पक्ष विद्यमान हो, जे अपन भाषा-साहित्यक प्राचीन पीढीसँ नवीनतम पीढीतक सर्जनात्मक गुण-अवगुणसँ अवगत हो आ स्वयं एक कुशल सर्जक हो आ समीक्षकक रूपमे बेबाक समीक्षा करबाक क्षमता आ साहस रखैत हो, तँ ओहि व्यक्तिक विद्वत्ता आ दूरदर्शिताक कल्पना कय ओहि व्यक्तिक प्रति आदरभाव उत्पन्न भेनाइ स्वाभाविक।

एकटा बात आर, हम जाहि व्यक्तिक विषयमे कहि रहल छी, हुनकामे एक आर गुण सम्पादनक सेहो अछि, जे 'विदेह' पाक्षिक ई पत्रिकाक

निरन्तर 2008सँ प्रकाशित होइत अछि आ अनेक नव प्रयोगक एहि पत्रिकाक प्रयोगशालामे सफल परीक्षणक बाद सार्थक तत्व बाहर होइत अछि। एकर मात्र एक उदाहरण प्रस्तुत करब, एहि पत्रिकाक दूरदर्शिताक प्रमाणक हेतु पर्याप्त अछि। मैथिलीक ई पहिल पत्रिका थिक, जाहिमे अद्यावधि कुल 17 टा विशेषांक जीवित साहित्यकारपर आ 3 विशेषांक संस्थापर प्रकाशित भेल अछि एकर अतिरिक्त । विशेषांक मधुपजीपर, आन विषय सभपर 17 टा विशेषांक मिला कुल 38 टा विशेषांक प्रकाशित भेल अछि।
हिनक एहि पत्रिकाक साइट पर 1. विदेहक सभ टा पुरान अंक 2. मैथिली ऑडियो-वीडियो संकलन 3. मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य 4. संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिली वैकल्पिक विषयक हेतु छात्रोपयोगी सामग्री आदि उपलब्ध अछि, जे साहित्यानुरागी ओ अनुसन्धानकर्ताक लेल उपयोगी अछि, निःशुल्क जे सभक लेल वरदान अछि।
हम आइ ओही व्यक्तिक एक समीक्षाक पोथी जे 2022मे पल्लवी प्रकाशनसँ प्रकाशित अछि- 'मैथिली समीक्षाशास्त्र' आ समीक्षक छथि श्री गजेन्द्र ठाकुर। हिनक सर्जनात्मक साहित्य सेहो अनेक विधामे अछि आ समीक्षाक सेहो पोथी अछि। हिनक मानब छनि- "मुख्य धारामे आलोचना शून्य छै। समानांतर धारामे विदेहक समलोचनाक अंक देखि सकै छी, अपन समीक्षाशास्त्र छै एतऽ।" (प्रीति कारण सेतु बान्हल-स. आशीष अनचिन्हार पृष्ठ-436)। ओही विदेहक पेटारसँ निकालि आ छानि, प्रस्तुत संग्रह प्रकाशित छनि, जे स्वयं सेहो कहैत छथि मुख्यधाराक समानांतर समीक्षाशास्त्र अछि ई पोथी।
एहि पोथीमे जाहि विषयवस्तुक समीक्षाशास्त्र अछि, ओ थिक गद्य

साहित्य मध्य बिहनि कथाक स्थान आ बिहनि कथाक समीक्षाशास्त्र, लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र, पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्रमे मैथिली गजल समीक्षाशास्त्र, मैथिली हाइकू/हेकू क्षणिकाक समीक्षाशास्त्र, दोहा/रोला/कुण्डलिया/छन्द विचार, नाट्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र, शिशु, बाल आ किशोर साहित्यक समीक्षाशास्त्र, प्रबंध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना, अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र, उपन्यासक स्थान आ उपन्यासक समीक्षाशास्त्र।

विषयवस्तुक अवलोकनसँ ई तँ लगिते अछि जे हिनक ध्यान ओहि सभ विधापर पड़लनि अछि, जाहि विधापर एखन वृहत रूपमे सृजन भ' रहल अछि आ नीको लिखा रहल अछि तँ बेजाइयो। बहुत ध्यान देलापर सम्प्रति मैथिली साहित्यमे अराजकताक स्थिति सेहो देखना जाइछ, तकनीकीक हिसाबसँ सेहो, वर्तनीक हिसाबसँ सेहो, क्षेत्रक हिसाबसँ सेहो आ वर्गविभेदक हिसाबसँ सेहो। खण्ड-खण्डमे क्षेत्रोकेँ आ भाषा-साहित्योकेँ बँटबाक कुत्सित प्रयास भ' रहल अछि। एहि विषम परिस्थितिमे साहित्यक समीक्षाशास्त्र नवोदित आ अन्य रचनाकारकेँ सेहो उचित मार्गक मार्गदर्शन करेबामे सहायक सिद्ध होयत, जाहिमे प्रस्तुत पोथीक प्रस्तुति विशेष महत्वक अछि।

विहनि कथा आ लघु कथाक बीच महीन रेखा अछि, अधिकांश लोक एक्कहि मानैत अछि, किन्तु जँ महीनो रेखा अछि आ अनेक विहनि कथाक पोथियो प्रकाशित अछि आ समय-समयपर समीक्षक आ रचनाकार लोकनि द्वारा चर्चा-परिचर्चाक आयोजन सेहो कैल जाइत अछि आ आब अनेक समीक्षक सेहो एकरा फुटा क' समीक्षा करबाक प्रयास करैत छथि, ओहिमे गजेन्द्र ठाकुरक मानब एहि रूपें

छनि - "विहनि कथाक वर्ण्य मात्र चलैत-फिरैत घटना नै अछि। विहनि कथाक लेखनकेँ बच्चाक लेल, नैतिक शिक्षा आ धार्मिक विषयपर सेहो विहनि कथा लिखबाक चाही। ट्रेनमे बसमे जाइ छी, घरमे दलानपर घूरतर गप करै छी आ तकर अनुभव मात्र विहनि कथामे आबि रहल अछि। सामाजिक आ आर्थिक समस्या सेहो एक स्थायी वर्ण्य विषय भ' सकैत अछि। राजनैतिक प्रश्न आ प्राकृतिक आपदाकेँ वर्ण्य विषय बनाओल जा सकैत अछि। विहनि कथा समीक्षक समीक्षा करबा काल पौराणिक समीक्षा नै करथि माने शिव पुराणमे सभसँ पैघ शिव आ गरुड़ पुराणमे सभसँ पैघ गरुड़, ऐ तरहक समीक्षा नै करथि। माने ई नै होमए लागय जे अछि से विहनि कथा चाहे ओ जेहेन हुअय।" (मैथिली समीक्षाशास्त्र-पृष्ठ संख्या 9-10)

लघुकथाक वातावरण निर्माणसँ लेखक आगाँ बढ़ैत छथि, ओकर पात्र सभक विवरण, लघुकथाक प्रारूप आ तकरा लेल लोकक आ परिस्थितिक वर्णन। ऐ मेसँ कोनो एक टा पक्ष लऽ कऽ सेहो अहाँ लघुकथा लिख सकै छी। कृति कोना उत्कृष्ट अछि आ ओइमे की छुटि गेल अछि से समीक्षककेँ देखबाक चाही। ओकर मूल्यांकन एकभगाह नै हेबाक चाही, ओइ रचनामे की संदेश नुकाएल छै, कोन दिस निर्देशित कऽ रहल अछि से समीक्षककेँ बुझबाक आ लिखबाक चाही। लघुकथाक मुख्यधाराकेँ चिह्नित करबाक चाही। अपन विचारधाराकेँ समीक्षित लघुकथापर आरोपण नै हेबाक चाही। ओइ लघुकथाक महत्ता कोन रूपमे अछि से देखाउ, ओकर मुख्य तत्व चिह्नित करू। लेखकक जीवन दर्शन, वास्तविक, काल्पनिक आ आदर्शक सम्बन्धमे ओकर दृष्टि आ संदेहकेँ चिह्नित करू। लेखकक लेखनशैलीक कलात्मक पक्ष, ओकर गप कहबाक क्षमता,

रचनाक ढाँचा आ ओकर विभिन्न भागकेँ जोड़बाक कलाक चर्चा करू, जेना नीक कमार ठोस आ कलात्मक पलंग बनबैत अछि, तँ दोसर कमारक जोर मात्र ठोस हेबापर होइ छै आ तेसरक कलात्मकतापर, तहिना...।" (मैथिली समीक्षाशास्त्र, पृष्ठ संख्या-21) एहि साँचापर मैथिलीक किछु सर्वश्रेष्ठ विहनि कथा आ लघुकथाक उदाहरण दैत छथि आ दुनू विधाक कथा सभक संख्यातम आ गुणात्मक, कथ्य आ शिल्प आह्लादित करबाक योग्य मानैत छथि।

एहि पोथीमे सभसँ महत्वपूर्णमेसँ एक अछि 'गजल समीक्षाशास्त्र माने गजलशास्त्र। 54 पृष्ठमे गजलपर विस्तारसँ चर्चा कयलनि अछि, सोदाहरण, आन भाषाक संग मैथिलीक गजलक उत्पत्ति। हम हिनक गजलक विश्लेषणक विस्तारमे नहि जा, एक टा बात अवश्य कहय चाहब जे, जे रचनाकार गजलक पथपर जयबाक सोचि रहल छथि किंवा ओहि पथपर चलि रहल छथि, हुनका अवश्य ई आलेख पढ़थि, जाहिसँ मैथिली गजलक एक विशेष पथपर चलबाक सभ सरंजाम भेटि जायत आ मैथिली साहित्य गजलक समृद्धिमे आगाँक योगदान निश्चित रूपसँ विशेष उल्लेखनीय होयत। सरल शब्दमे कहब तँ गजल सृजनक ई एक पाठशालाक काज करत। "मैथिली भाषामे गजल जे हम लिखी तँ छंदशास्त्रक अनुसार लिखी, आ से छंदशास्त्र हम अरबी-फारसी प्रयुक्त करी, मुदा ओइ प्रयासक अतिरिक्त ऋग्वैदिक छंदशास्त्र टगण-मगणसँ बेशी वैज्ञानिक आ सरल छै आ ऐसँ मैथिली गजल लिखबा-पढ़बा-गुनगुनएबामे लोककेँ सुविधा हेतै से हमर विश्वास अछि। वेदक समएमे हिन्दू-शब्दक जन्मो नै भेल रहै से वैदिक छंदशास्त्रक प्रयोग मात्र, मैथिली गजलकेँ हिन्दू बना देतै से हमरा नै लगैए।" (मैथिली समीक्षाशास्त्र,

पृष्ठ- 63)

किछु समीक्षकक टिप्पणीपर असहमति सेहो प्रकट कयलनि अछि आ कहलनि अछि जे "हँ मुदा समीक्षककेँ लाठी हाथेँ ई सभ मैथिली गजल थिक, गजले टा थिक, कहबापर विवश करैत प्रहार सभ अवश्य अछि। गजल कतेको ढंगसँ कतेको बहरमे कतेको छन्दमे लिखल जा सकैए, ई सत्य अछि, मुदा गणना नियमक स्वातंत्र्यक अधिकार ने मात्रिक गणनामे छै आ ने वार्णिक गणनामे।" मैथिली समीक्षाशास्त्र, पृष्ठ- 85)

मैथिलीमे हाइकू/हैकू/क्षणिका सेहो अल्पे मुदा लिखल गेल अछि। ई जापानी काव्य विधा अछि। ठाकुरजी कहैत छथि-" हैकूक लेल मैथिली भाषा आ भारतीय संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि।"(मैथिली समीक्षाशास्त्र, पृष्ठ- 93)।

नाट्य, बाल, उपन्यास, आलोचना-समालोचना, अनुवाद आदि अनेक विधापर चर्चा करैत एक ठाम लिखैत छथि -"शास्त्रीय अनुशासन लेखक लेल अछि, पाठक लेल नै। लेखक जँ गजल, रोला, दोहा, कुण्डलिया शास्त्रीय आधारपर लिखताह तखने पाठककेँ नीक लगतै, जँ लेखक मेहनतिसँ दूर भगताह तँ साहित्यिक पाठकीयता घटत। शास्त्रक बान्ह तोड़बाक विधि सेहो शास्त्रक मध्य छैक, सावित्री मन्त्र जँ शास्त्रीय कट्टरतासँ देखी तँ ओ गायत्री छन्दमे नै छै, मुदा हम सभ ओकरा गायत्रीमे मानै छी कारण गणना पुरेबालेल स्वः कैँ सुवः कएल गेलै। (मैथिली समीक्षाशास्त्र, पृष्ठ- 148)

एहि पोथीमे जे आन समीक्षाक पोथीसँ अंतर देखना गेल ओ थिक, विषयवस्तुपर समीक्षा, नहि कि व्यक्तिक वस्तुपर समीक्षा। एहि दृष्टिकोणसँ प्रायः ई पहिल पोथी थिक जे एतेक विस्तारसँ मैथिली

साहित्यमे समीक्षाशास्त्रक विश्लेषण भेल अछि, बिन्दु-विसर्गपर ध्यान देल गेल अछि, साहित्यिक शब्दावलीपर हिनक विचार- "साहित्यक मूल सरोकार अछि विषय-वस्तुसँ। मुदा शब्दक अकाल जँ साहित्यकारेक मध्य रहत तँ ओ की सम्प्रेषण करताह, विषय-वस्तुकेँ कोना फरिछा पेताह। जे हाल हिन्दी साहित्यक अछि, सैह मैथिलीक भऽ जाएत। शब्दावलीक ग्राह्यता नेटिव स्पीकरक गाममे बाजल जाएबला शब्दावली निर्धारित करत, संस्कृतिसँ दूर प्रवासी द्वारा बाजल जाएवला शब्दावली नै। शब्दावलीक ग्राह्यता नेटिव स्पीकरक गाममे बाजल जाएवला शब्दावली निर्धारित करत, आ जँ संस्कृतिसँ कटल प्रवासी द्वारा बाजल शब्दावलीकेँ आधारभूत बनाएब तँ नीक साहित्य कोड़ि कऽ निकलल बुझाएत आ गोलैसी आधारित समीक्षकक समीक्षित साहित्य नेचुरल बुझाएत।" (मैथिली समीक्षाशास्त्र, पृष्ठ-148), सार्थक बुझना जाइत अछि।। प्रो. बालकृष्ण झाक एक पोथी समीक्षाशास्त्रपर अछि। ओहि पोथीक विस्तारमे नहि जा ई कहब अत्योक्ति नहि होयत जे समीक्षाशास्त्रीक विमर्श उचित दिशानिर्देशनक अछि जे- "लेखकक आडियोलॉजी पानिमे नून सन हेबाक चाही, पानिमे तेल सन नहि।" (समीक्षाशास्त्र-पृष्ठ-159)

जँ समग्रतामे एहि पोथीपर विचार करी तँ शिक्षक आ शिक्षार्थी, शोध-पर्यवेक्षक आ शोधार्थी, रचनाकार आ पाठक सभक हेतु ई पोथी मार्गदर्शनक काज करत, मत-भिन्नताक स्थितिमे सेहो, मतैक्यताक स्थितिमे सेहो।

गजेन्द्र ठाकुरः लेखक, इतिहासकार आ आधुनिक मैथिली अध्ययनक शिल्पकार

प्रवीण कुमार झा

गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषाक एक प्रमुख लेखक, इतिहासकार, शिक्षाविद्, कोशकार आ लिपि विशेषज्ञ छथि। ओ मुख्य रूपेँ मैथिली भाषा मे लेखन करैत छथि आ साहित्य, पंजी (वंशावली-अध्ययन), शब्दकोश-निर्माण तथा तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपिक पुनरुद्धार मे महत्वपूर्ण योगदान देने छथि। हुनकर काज मिथिलाक शास्त्रीय बौद्धिक परंपराकेँ आधुनिक शैक्षणिक आ डिजिटल ढाँचा सँ जोड़ैत अछि।

प्रारंभिक जीवन आ पृष्ठभूमि

गजेन्द्र ठाकुरक जन्म 30 मार्च 1971 के बिहारक भागलपुर मे भेल। हुनकर पैतृक गाँव मेंहथ, जिला मधुबनी, बिहार अछि। ओ कृपानंद ठाकुर आ लक्ष्मी ठाकुरक पुत्र छथि। हुनकर विवाह प्रीति ठाकुर सँ भेल अछि। वर्ष 2000 के आसपास ओ एक गंभीर दुर्घटना के शिकार भेल छलाह, जाहि कारणे हुनका लगभग 18 महीना धरि बैसाखीक सहारे चलए पड़लनि। ई समय हुनकर बौद्धिक जीवन मे निर्णायक सिद्ध भेल, कारण एहि अवधि मे ओ प्राचीन ताड़पत्र पांडुलिपिक अध्ययन आ पाठ-निर्णयन मे गहींर रूपेँ संलग्न रहलाह।

भाषा आ लिपि

गजेन्द्र ठाकुर मुख्य रूपैं मैथिली भाषा में लेखन करैत छथि। ओ देवनागरी आ तिरहुता (मिथिलाक्षर) दुनू लिपि में दक्ष छथि। तिरहुता लिपिक संरक्षण, पुनर्जीवन आ वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण मे हुनकर योगदान विशेष रूपैं उल्लेखनीय अछि। तिरहुता लिपिक यूनिकोड मानकीकरण मे सेहो हुनकर विद्वतापूर्ण सुझावक महत्वपूर्ण भूमिका रहल अछि।

साहित्यिक कृति

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक (सात-खंडीय श्रृंखला)- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक आधुनिक मैथिली साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण बहुखंडीय परियोजना अछि, जाहि मे गजेन्द्र ठाकुरक बहुआयामी साहित्यिक प्रतिभा स्पष्ट रूपैं परिलक्षित होइत अछि।

1. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना
2. सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)
3. सहस्राब्दीक चौंपड़पर (पद्य संग्रह)
4. गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह)
5. संकर्षण (नाटक)
6. त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (महाकाव्य)
7. बाल मण्डली/ किशोर जगत

ई श्रृंखला आधुनिक मैथिली साहित्यक सभसँ व्यापक आ महत्वाकांक्षी साहित्यिक उपक्रम सभ मे सँ एक मानल जाइत अछि जाहिमे एकै पोथीमे सात विधा राखल गेल अछि। एहि साहित्यिक पोथी क्रममे हिनक आर बहुत रास पोथी अछि जकरा विदेह सूचीपर

देखल जा सकैए।

ऐतिहासिक आ वंशावली अध्ययन

जीनोम मैपिंग – मिथिलक पंजी प्रबंध (450 ई.-2009 ई.)

गजेन्द्र ठाकुरक सभसँ महत्वपूर्ण विद्वतापूर्ण उपलब्धि सभ मे सँ एक अछि जीनोम मैपिंग–मिथिलक पंजी प्रबंध (450 ई.-2009 ई.) जकरा ओ दू अन्य संपादक संग संपादित केलाह। एहि ग्रंथ मे ओ लगभग 11,000 ताड़पत्र पंजी पांडुलिपिक संकलन, पाठ-निर्णयन आ प्रकाशन केने छथि। ई कृति मिथिलाक सामाजिक इतिहास, वंशानुक्रम, विवाह-प्रथा आ अंतर्जातीय संबंधक अध्ययन लेल एक अत्यंत मूल्यवान स्रोत अछि। बाद में एकर द्वितीय खंड सेहो प्रकाशित भेल। संगहि एकर तृतीय खंड "दूषण पंजी" केर नामसँ प्रकाशित भेल जे प्राचीन मैथिल ब्राह्मण समाजमे अंतर्जातीय विवाहक पुष्टि लिखित प्रमाणक संग करैत अछि।

कोश-निर्माण (लेक्सिकोग्राफी)

गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषा के आधुनिकीकरण मे शब्दकोश-निर्माणक माध्यम सँ महत्वपूर्ण भूमिका निभौने छथि, दू अन्य संपादक संगे। हुनकर प्रमुख कोश-ग्रंथ अछि:

मैथिली–अंग्रेजी शब्दकोश

अंग्रेजी–मैथिली शब्दकोश (जाहि में कंप्यूटर आ डिजिटल शब्दावलीक समावेश विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि) एहि शब्दकोश सभ मैथिली भाषाकेँ आधुनिक शिक्षा, तकनीक आ अकादमिक क्षेत्र सँ जोड़ए में सहायक सिद्ध भेल अछि।

संपादकीय काज
गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषाक पाक्षिक ई-पत्रिका 'विदेह' क संपादक छथि। हुनकर संपादन मे विदेह मैथिली साहित्य, आलोचना, शोध, नाटक, कविता आ बाल साहित्यक एक प्रमुख मंच बनल अछि। विदेहक अंतर्गत विभिन्न विषय पर अनेक संकलन आ ग्रंथ प्रकाशित भेल अछि।

अनुवाद आ जीवनी
गजेन्द्र ठाकुर अपन कतेको रचनाकेँ मैथिली सँ अंग्रेजी में अनुवाद केने छथि। एकरा अतिरिक्त ओ कन्नड़, तेलुगु, ओड़िया आ गुजराती जकाँ भारतीय भाषा सभक रचनाकेँ अंग्रेजी माध्यम सँ मैथिली मे अनुवाद केने छथि। ओ 'जगदीश प्रसाद मंडल–एकटा बायोग्राफी' नामक जीवनी सेहो लिखने छथि, जे विदेह ई-पत्रिका सँ प्रकाशित भेल अछि।

सामाजिक आ सांस्कृतिक प्रभाव
गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषा आंदोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभौने छथि। हुनकर काज मैथिली साहित्यकेँ कुलीन आ जाति-सीमित दायरा सँ बाहर निकालि व्यापक समाज धरि पहुँचौने अछि। पंजी पांडुलिपि पर हुनकर शोध मिथिलाक ऐतिहासिक अभिलेख के सुरक्षित कयलक, जखनकि लिपि आ डिजिटल क्षेत्र में हुनकर योगदान मैथिली के आधुनिक युग सँ जोड़ैत अछि।

सम्मान आ विरासत
गजेन्द्र ठाकुर मैथिली लेखक संघक सदस्य छथि। तिरहुता लिपिक

यूनिकोड मानकीकरण मे हुनकर योगदान विद्वान सभ द्वारा विशेष मान्यता प्राप्त केने अछि। विदेह पत्रिका आ अपन बहुआयामी लेखनक माध्यम सँ ओ मैथिली साहित्य आ शोध लेल एक स्थायी मंच निर्माण केने छथि।

उपसंहार

लेखक, इतिहासकार, कोशकार आ लिपि-विशेषज्ञ रूपेँ गजेन्द्र ठाकुर आधुनिक मैथिली साहित्यक एक केंद्रीय व्यक्तित्व छथि। हुनकर समग्र काज मिथिलाक प्राचीन बौद्धिक परंपरा आ आधुनिक डिजिटल युगक बीच एक सशक्त सेतु बनबैत अछि।

संपादकीय टिप्पणी-

1. बर्ख 2000 मे गजेन्द्र ठाकुर अपन तात्कालीन कार्यक्षेत्र एक्साइज विभाग (Excise Department) मे एक छापा मारि घुरि रहल छलाह जाहि क्रममे हुनकर एक्सीडेंट भेल छलनि। एहि तरहक काजमे एकटा ईहो आशंका रहैत छै जे जकरापर छापा पड़लै सेहो सभ अधिकारीकेँ मारबाक लेल सुपारी दऽ दैत छै, ताहू बातसँ मना नै कएल जा सकैए।

2. गजेन्द्र ठाकुर एखन धरि सक्रिय रूपसँ कोनो संस्थामे नहि रहलाह। हेबाक लेल ओ चेतना समितिक आजीवन सदस्य छथि आ मैथिली लेखक संघक सेहो। संगहि अनेक मैथिली पत्रिकाक आजीवन सदस्य (ग्राहक) सेहो छथि। मैथिली लेखक संघक संस्थापक ओ तात्कालीन अध्यक्ष नरेन्द्र झाक आग्रहपर ओ एहि संघक सदस्य बनलाह। हिनके कारणसँ गजेन्द्र ठाकुर मैथिली लेखक संघ केर वेबसाइट सेहो बनेलाह। किछु बर्ख ई वेबसाइट गजेन्द्रजीक खर्चपर चलैत रहलै बादमे गजेन्द्रजी एहि वेबसाइटकेँ

ब्लाग रूप दऽ देलाह जकर लिंक निच्चा अछि। https://maithililekhaksangh.blogspot.com/

अनुपम अतुल्य योगदान

कुन्दन कर्ण

आदरणीय गजेन्द्र ठाकुर जी हमरा लेल जिज्ञासाक विषय छथि। 5 बरख पहिने धरि हम हुनक नामो नहि जनैत रहियनि, साहित्यक लोक नहि छी। सोशल मीडिया मे बीहनि कथाक बारे मे किछु-किछु जानकारी भेटल त एकाध टा बीहनि फेसबुक पर लिखय लगलहुँ। अहिना कोरोना कालमे एकटा बीहनि पोस्ट केने रही कोरोना लॉकडाउन पर। एकटा अग्रज व्यक्ति (मुन्नाजी)क फोन आयल जे अहाँक बीहनि कथा नीक लागल, पुछलियनि जे कत' पढ़लियै तऽ कहलनि जे कोनो स्मारिका मे छपल अछि। हमरा लेल ई बड़ पैघ गप्प छल। ओही बातचीतमे खोजबीन केला पर पता चलल जे "विदेह" नामसँ कोनो पत्रिका अनवरत छपि रहल छै जाहिमे आर बीहनि कथा पठाएल जा सकैए। हमरा लागल जेना कोनो नेनाके केयो डेन ध' उप्पर उठा देने हो, तहियासँ हम बीहनि कथा लिखब आरंभ कयलहुँ।

फेर कोनो कोनो कारणसँ आदरणीय गजेन्द्र ठाकुर जीसँ व्हाट्सअप पर गप्प भेल, बड़ आत्मीयतासँ हमर बातक प्रतिउत्तर दैत रहलाह, ता धरि हमरा हुनका सम्बन्ध मे जनतब नहि छल जे सरकारी हाकिम छथि, मैथिली मे अतेक पैघ आ कालजयी ग्रंथ के रचनाकार

छथि, अतेक शोध आ संकलन के भागिरथ योगदान छनि। जा धरि किनको बारे मे बुझल नहि रहत ता धरि अहाँ हुनका संग बालसुलभ मित्रवत कम्फर्ट ज़ोन मे रहि व्यवहार करबै, हमरो संग सएह छल। हुनकर आत्मीय आ सहयोगपूर्ण आ अहंकाररहित व्यवहार सेहो एकटा कारण छल जाहि कारणे हमरा हुनक विशाल व्यक्तित्वके अनुमान नहि भय सकल छल। मुदा कालक्रम मे हुनका जनबाक अवसर भेटल तऽ हतप्रभ रहि गेलहुँ- अतेक कम आयु मे अतेक पहाड़ सन अवदान, सेहो बिना कोनो पद पुरस्कारक रेस मे सम्मिलित भेने।

हमरा बुझाइत अछि जे हम हुनक व्यक्तित्व आ कृतित्व मादे एखनहुँ अनभिज्ञ छी, साक्षात भेंटो नहि अछि। मुदा जतेक जनतब अछि ताहि आधार पर कहि सकैत छी जे शोध, पंजी संकलन, लेखन आदि मे जे हुनकर अनुपम अतुल्य योगदान छनि से कालजयी सिद्ध हएत। एकर अतिरिक्त कतेको युवाके मातृभाषासँ जोड़ब सेहो अतुल्य अछि। हुनक रचनाकर्म सँ बेस परिचित तऽ नहि छी मुदा संपादकीय कॉलम सँ लेखन के अनुमान लगा सकैत छी।

मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुर जीक योगदान

जगदानंद झा 'मनु'

मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुर जीक काजपर प्रकाश देबाक माने भेल सूर्यकेँ दीप देखेनाइ। तथापि एहिठाम प्रयास कय रहल छी मैथिली साहित्यक अनंत अंतरिक्षमे गजेन्द्र रूपी सूर्यकेँ अपन आखरक माध्यमसँ दीप देखेबाक। गजेन्द्रजीक जन्म- 30 मार्च 1971 (भागलपुर), एखन करीब 54 वर्षक एतेक कम अवस्थामे एतेक बेसी उपलब्धि, दुनियामे बहुत कम देखै लेल भेटै छैक। एखन धरि गजेन्द्र ठाकुर जी मुख्यतः मैथिली एवं अंग्रेज़ी भाषामे अनुसंधान, पंजी इतिहास, भाषा विज्ञान, मैथिली-अंग्रेज़ी शव्दकोश आ अनुवाद एवं मौलिक साहित्य सहित करीब सवा सयसँ बेसी पोथी लीखि चुकल छथि। जे कि मैथिली साहित्य लेल आकाशगंगा सन एकटा अनंत शृंखला बनल अछि, जाहिमे मैथिली साहित्य, इतिहास आ अनुसंधानकेँ विद्यार्थी संगे संग विद्वान लोकनि अपन ज्ञानक पियासकेँ मेटा सकैत छथि। मैथिली लेखनक कोनो एहेन विधा नहि जाहिमे ओ अद्भुत काज नहि केने होथि। एक इतिहासकारकेँ रूपमे, मिथिला आ मैथिलकेँ वर्तमान समयमे स्थापित करैक रूपमे, आधुनिक मैथिली-अंग्रेजी शव्दकोशक निर्माण, प्राचीन मिथिलाक पंजी व्यवस्थाक संग्रह आ संकलन एहन दुरूह काजकेँ सम्पन्न केनाइ कोनो चमत्कारसँ कम नहि बुझना जाइत अछि। एतबे नहि हुनक सभ रचना, खोज, ग्रन्थकेँ ओ देवनागरी सहित मैथिलीक मूल लिपि, तिरहुता लिपि (मिथिलाक्षर लिपि) मे सोहो लीखि कय

मिथिलाक धरोहर आ साहित्यए टा नहि वरन अति प्राचीन तिरहुता लिपिक विकास आ प्रचार पर सेहो खूब बेस काज कय रहल छथि। संगे-संग ब्रेल लिपिपर हुनक काजक जतेक प्रसंसा कयल जाए से कम।

मैथिली साहित्यमे कतेको एहन विधा जकर अस्तित्व गजेन्द्र युगसँ पहिने नहि वा नहिए जकाँ छल, ओहन कतेको विधाकेँ मैथिली साहित्यमे स्थापित करै मे हुनक योगदानकेँ जतेक कहल जाए से कम होयत। जेना कि गजलशास्त्र, बीहनि कथा, रुबाइ, टंका, शेनर्यू आ हैबून आदि-आदि। टंका, शेनर्यू आ हैबून ई तीनू जापानी काव्य विधाकेँ मैथिलीमे गजेन्द्र ठाकुरजी अनलाह। मैथिलीमे हाइकू पहिनेसँ छै मुदा टंका, शेनर्यू आ हैबून गजेन्द्रजीसँ पहिने मैथिलीमे नहि छल। गजेन्द्र ठाकुर जी मात्र एकटा इतिहासकार, पुरालेखविद्, विद्वान, साहित्यकार, लेखक, कथाकार, कवि, गजलकार, समीक्षक सहित कलमेटाक धनी नहि अपितु एकटा श्रेष्ठ लीडरक सभटा गुण हुनकामे भरल अछि। ओ अपन साहित्यिक ज्ञान आ मातृभाषा मैथिलीक सिनेह केर अपन नेतृत्व गुणसँ इन्टरनेटपर परसि कऽ दुनियाँकेँ अलग-अलग हिस्सामे रहै बला मैथिली अनुरागी पाठक, मैथिली भाषाक विद्यार्थी आ साहित्यकार सभकेँ एक ठाम अनि कय मैथिली साहित्य केर विकासक गतिकेँ दुनियाँक आन-आन विकसित भाषा सभक समक्ष आनि ठार कय देला।

इन्टरनेटपर मैथिली भाषाक प्रथम उपस्थित 'भालसरिक गाछ' केर रुपमे सन 2000 मे हुनके द्वारा भेल अछि। इएह भालसरिक गाछ 2008 मे विदेहक नामसँ पाक्षिक पत्रिकाक रूपमे आएल। वर्तमानमे विदेहक माध्यमें मैथिली भाषा आ साहित्य लेल जतेक काज भेलै से केकरोसँ नुकाएल नहि अछि। ओ काज नव-नव विधाकेँ

मैथिलीमे स्थापित केनाइ हो, नव-नव प्रतिभाकैँ इन्टरनेटकैँ द्वारा ताकि कय, माँजि कय, पॉलिश कय कऽ दुनियाँक सामने प्रस्तुत केनाइ हो। अनेको नव-नव प्रतिभाकैँ जिनका साहित्य वा मैथिली साहित्यसँ दूर-दूर धरि कोनो सम्बन्ध नहि छल ओ सभ गजेन्द्र ठाकुर जीसँ विदेह व आन-आन इन्टरनेटक माध्यमसँ जुड़ि आइ स्थापित साहित्यकार, लेखक, कवि, गजलकार, कथाकार आदि आदिकैँ रूपमे जानल जाइ छथि। नव-नव विधा आ नव-नव प्रतिभाकैँ आगू बढ़बै संग विदेह पुरान आ स्थापित मैथिली साहित्यकार सभकैँ दुनियाँक सामने एकटा आँगुरकैँ क्लिकसँ पहुँचाबैक अवसर देलकै। ततबे नहि पुरानसँ पुरान पिछला अंक सभकैँ पढ़ै केर सुविधा संगे संगे अनेको लेखक आ साहित्यकारक बहुत रास पोथीक ई-वर्जन विदेह आर्काइवकैँ मैथिली पोथी डाउनलोडमे राखल अछि। जे कि अपना आपमे एकटा अनुपम उपलब्धि अछि। इन्टरनेटकैँ दुनियामे एकटा एहन पुस्तकालय अछि जे विद्यार्थी, शोधकर्ता, साहित्यकार, लेखक, पाठक आ मैथिली अनुरागीकैँ बिना कोनो मोल आ समयक स्वतंत्रता संगे पढैक अवसर दै छै।

एहन समय अथवा कालखंड जाहिमे कोनो सरकार, संस्था वा अकादमी, मैथिली भाषा व साहित्य लेल पूर्ण समर्पणसँ काज नहि कय रहल अछि ओही समयमे गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा व्यक्तिगत रूपसँ एतेक रास काज केनाइ अकल्पनीय आ अविश्वसनीय अछि। एतेक रास काज हुनक ज्ञान, योग्यता आ मातृभाषा मैथिलीक प्रति हुनक समर्पणकैँ तँ देखाइए रहल अछि संगे-संग एहिमे लगै छै समय आ धन दुनू। एकटा आम व्यक्ति लग आइकैँ समयमे धन आ समय दुनूक अभाव रहै छै आ जिनका लग छनि हुनका लग

मोन नहि। एहिठाम गजेन्द्र ठाकुर जीक ऊपर गणेश जीक बुद्धि, सरस्वती जीक ज्ञान रूपी आशीर्वाद तँ छनिहें संगे महामायाक देल ओ विराट करेजा, जे ओ धन वा कोनो तरहक नाम व पुरस्कारक मोह देखने बिना मैथिली भाषा आ साहित्य लेल भगीरथ काज कय रहल छथि। एही भगीरथ काजक लेल हुनकर जतेक प्रशंसा कयल जाए से कम होएत। मैथिली भाषा आ साहित्य प्रति हुनक एहि समर्पणकेँ कोनो मूल्य वा पुरस्कारसँ नहि नापल जा सकैए, ओ अमूल्य अनमोल अछि। कोनो पुरस्कारसँ श्रेष्ठ अछि। मैथिली भाषा आ साहित्यमे हुनकर एहि योगदानकेँ लेल हुनका युग-युग तक याद राखल जायत।

गजेन्द्र ठाकुरः मैथिली भाषा-साहित्यक नवजागरणक सेतु-पुरुष

उज्ज्वल कुमार झा

मैथिली भाषा-साहित्यक आधुनिक इतिहासमे किछु एहन व्यक्तित्व देखाइ पड़ैत छथि, जे केवल रचनाकार नहि, अपितु एकटा युग-चेतनाक प्रतिनिधित्व करैत प्रतीत होइत छथि। हिनकर सभक काज सभकें देखैत एना बुझाएत जे ओ अपन व्यक्तिगत लेखन-सृजन तक सीमित नहि छथि, बल्कि समूचा भाषिक समाज, सांस्कृतिक विरासत आ भावी पीढ़ी लेल आधार-निर्माणमे लागल छथि। गजेन्द्र ठाकुर एहने सन एक विशिष्ट नाम छथि। डिजिटल युगमे मैथिली भाषाक वैश्विक पहचान देनिहार, पंजी प्रबंधक संपादक छथि, शब्दकोशकार छथि, संपादक छथि, सांस्कृतिक कर्मयोगी छथि, इतिहासकार छथि, आलोचक छथि आ लेखक छथि। हुनकर समूचा कृतित्व एकटा निरंतर साधना जकाँ प्रतीत होइत अछि- मातृभाषाकें बचाएबाक, सहेजबाक आ समृद्ध करबाक साधना।

30 मार्च 1971 कैं मिथिलाक भागलपुरमे जन्मल गजेन्द्र ठाकुर मूलतः मधुबनी जिला सँ संबंधित छथि। मिथिला केवल भौगोलिक क्षेत्र नहि, बल्कि हजारो वर्ष पुरान ज्ञान-परंपरा, पांडित्य, लोक संस्कृति आ भाषिक अस्मिताक केंद्र रहल अछि। एहि भूमि पर शास्त्रार्थ, पंजी-प्रथा, लोकगीत, लोककथा आ सांस्कृतिक

अनुशासनक समृद्ध परंपरा रहल अछि। एहन वातावरणमे पलि-बढ़ि क' गजेन्द्र ठाकुरक मनमे भाषा आ संस्कृति प्रति स्वाभाविक अनुराग जागल। बचपन सँ अध्ययनशीलता, जिज्ञासा आ लेखनक प्रवृत्ति हुनका भीतर विकसित होइत गेल। हुनकर व्यक्तित्वक सभसँ उल्लेखनीय विशेषता ई अछि जे ओ बहुआयामी छथि। सामान्यतः कोनो लेखक कविता या कथा तक सीमित रहैत छथि, मुदा गजेन्द्र ठाकुर अपन साहित्यिक यात्राकें अनेक दिशामे विस्तृत कयलनि। ओ संपादक छथि, गद्यकार छथि, नाटककार छथि, आलोचक छथि, इतिहास-शोधकर्ता छथि आ कुशल अनुवादक संग शब्दकोशकार सेहो। एहि सभ भूमिकामे समान सक्रियता बनौने राखब कोनो साधारण बात नहि। एहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे हुनका लेल साहित्य केवल भावाभिव्यक्ति नहि, बल्कि एकटा समग्र सांस्कृतिक दायित्व अछि।

गजेन्द्र ठाकुर मैथिलीकेँ इंटरनेटपर आनए बला पहिल लोक छथि। डिजिटल युगक महत्त्वकें समय रहैत समझब हुनकर दूरदर्शिताक प्रमाण अछि। संपूर्ण मैथिली जगतमे ओ पहिल लोक छथि जे बुझलनि जँ भाषा इंटरनेट पर उपस्थिति नहि रहत, तँ भविष्यमे ओकर अस्तित्व संकटमे पड़ि सकैत अछि। एहि सोच सँ ओ बर्ख 2000 मे अपन याहू ब्लाग पर मैथिलीक प्रथम प्रयोक्ता भेलाह। ई पहल मैथिलीकें डिजिटल दुनियामे प्रवेश करौलक। आ बादमे 2008 मे अही ब्लागकेँ विदेह नामसँ पाक्षिक ई-पत्रिका रूप मे आरंभ कयलनि। विदेह ई-जर्नल, पुरान अंकक ऑनलाइन संग्रह, मैथिली पोथी डाउनलोड, ऑडियो-वीडियो संकलन आ विविध डिजिटल संसाधन- ई सभ प्रयास मैथिलीकें वैश्विक पाठक धरि पहुँचौने अछि। विदेशमे रहैत मैथिली भाषी लोक सेहो एहि माध्यम सँ अपन

भाषा-संस्कृति सँ जुड़ल रहैत छथि।
गजेन्द्र ठाकुरक योगदानक एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष अछि- पारंपरिक मिथिलाक्षर अर्थात् तिरहुत लिपिक संरक्षण आ मानकीकरण। मैथिली भाषा प्राचीन काल सँ मिथिलाक्षर लिपिमे लिखल जाइत रहल अछि, मुदा आधुनिक समयमे देवनागरीक प्रचलन बढ़ला सँ ई लिपि धीरे-धीरे कात भऽ गेल। लिपि केवल लिखबाक माध्यम नहि, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिताक प्रतीक होइत अछि। जँ लिपि विलुप्त होए, तँ भाषाक ऐतिहासिक स्मृति सेहो कमजोर पड़ि जाइत अछि। गजेन्द्र ठाकुर एहि संकट कें गंभीरता सँ अनुभव कयलनि आ मिथिलाक्षरकें पुनर्जीवित करबाक दिशामे अग्रणी भूमिका निभौलनि। ओ लिपिक स्वरूप, अक्षर-रचना, वर्तनी-मानक आ डिजिटल उपयोगिता पर कार्य क' एकर मानकीकरणक प्रक्रियामे महत्वपूर्ण योगदान देलनि। यूनिकोड एन्कोडिंगक प्रयास मे सेहो हुनकर योगदान मान्य भेल। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिरहुता लिपिक यूनिकोडमे स्थान भेटल, जाहिमे हुनकर सहभागिताकें स्वीकार कयल गेल। ई उपलब्धि अत्यंत ऐतिहासिक अछि, कियैक तँ यूनिकोडमे सम्मिलित भेला बाद कोनो लिपि के डिजिटल दुनियामे स्थायी पहचान भेटैत अछि। एहि प्रयास सँ मिथिलाक्षरकें कम्प्यूटर, मोबाइल आ इंटरनेट पर उपयोग संभव भेल। फलतः लिपि पुनः जीवित होए लगल अछि आ नव पीढ़ी अपन पारंपरिक लेखन-पद्धति सँ परिचित भ' रहल अछि। गजेन्द्र ठाकुरक ई योगदान मैथिली सांस्कृतिक इतिहासमे विशेष महत्व रखैत अछि।
इतिहासकार रूपमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान विशेष चर्चा योग्य अछि। मिथिलाक पंजी-प्रथा एक अद्भुत सामाजिक-सांस्कृतिक

व्यवस्था रहल अछि, जाहिमे वंशावली, विवाह-संबंध आ सामाजिक संरचनाक व्यवस्थित अभिलेख राखल जाइत रहल अछि। गजेन्द्र ठाकुर एहि पंजीकें केवल परंपरा रूपें नहि, बल्कि ऐतिहासिक स्रोत रूपें देखलनि। "जीनोम मैपिंग- 450 ई. से 2009 ई.- मिथिलाक पंजी प्रबंध" जकाँ कृतिमे ओ पंजी-सामग्रीकें आधुनिक शोध-पद्धति सँ जोड़ि मिथिलाक दीर्घकालीन सामाजिक इतिहासक विश्लेषण कयलनि अछि। ई कार्य मैथिली समाजक इतिहास लेखनमे अभिनव योगदान अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक नाम "विदेह" बिना अधूरा अछि। "विदेह" पत्रिका हुनकर साहित्यिक जीवनक सभसँ पैघ उपक्रम मानल जा सकैत अछि। एखन धरि 435 अंकक संपादन कोनो सामान्य उपलब्धि नहि। एहि मंच सँ असंख्य लेखक, कवि आ शोधार्थीकें स्थान भेटल। "विदेह" केवल पत्रिका नहि, बल्कि एकटा साहित्यिक परिवार बनि गेल अछि। एतय स्थापित लेखक सभ संग नव प्रतिभाकें सेहो समान अवसर भेटैत रहल अछि। एहि प्रकार ओ साहित्यिक लोकतंत्रक सुंदर उदाहरण प्रस्तुत कयलनि अछि।

शब्दकोशकार रूपमे हुनकर योगदान मैथिली भाषा लेल अत्यंत महत्वपूर्ण अछि। कोनो भाषा जँ शैक्षणिक आ शोध स्तर पर अपन स्थान बनाबय चाहैत अछि, तँ ओकर शब्द-संपदा कें व्यवस्थित करब आवश्यक होइत अछि। मैथिली बहुत समय धरि एहि क्षेत्रमे अपेक्षित कार्य सँ वंचित रहल। गजेन्द्र ठाकुर एहि अभावकें गंभीरता सँ अनुभव कयलनि आ शब्द-संकलन आ शब्द-व्यवस्था पर काज आरंभ कयलनि। ई प्रयास भाषाकें वैज्ञानिक आधार प्रदान करैत अछि आ भविष्यक शोधार्थी लेल मार्ग प्रशस्त करैत अछि।

शिक्षाविद् रूपमे गजेन्द्र ठाकुर नव लेखक आ शोधार्थी सभकें

मार्गदर्शन दैत छथि। ओ केवल अपन लेखन तक सीमित नहि, बल्कि दोसराक प्रतिभाकें सेहो प्रोत्साहित करैत छथि। अनेक युवा रचनाकार हुनकर प्रेरणा सँ लेखन-क्षेत्रमे आएल छथि। एहि प्रकार ओ गुरु-परंपराक आधुनिक रूप प्रस्तुत करैत छथि।

रचनात्मक लेखनक क्षेत्रमे हुनकर दृष्टि लोकजीवन सँ गहीर रूपें जुड़ल अछि। हुनकर समग्र काजमे मिथिलाक माटि, गंध, ऋतु-चक्र, लोकरीति आ जन-मनक संवेदना सहज रूपे उपस्थित रहैत अछि। ओ अलंकारिकता सँ अधिक सार्थकता पर बल दैत छथि। शब्द हुनका लेल केवल सजावट नहि, बल्कि अर्थक वाहक अछि। एहि कारण हुनकर भाषा सरल, स्वाभाविक आ प्रभावपूर्ण बनि जाइत अछि। हुनकर गद्य लेखनमे सेहो जीवनक यथार्थ, सामाजिक अंतर्विरोध आ सांस्कृतिक प्रश्न स्पष्ट रूपें उभरैत अछि।

नाटक आ कथा-लेखनमे ओ मिथिलाक बदलैत समाजक छवि प्रस्तुत करैत छथि। परंपरा आ आधुनिकता बीच जे संघर्ष चलि रहल अछि, ओकर चित्रण करब हुनकर लेखनक प्रमुख विषय अछि। ओ अपन रचनामे अतीतकें स्मरण करैत छथि, मुदा केवल गौरव-गान नहि करैत; बल्कि वर्तमानक प्रश्न सभ सेहो उठबैत छथि। एहि संतुलित दृष्टि हुनका समकालीन लेखक सभ सँ अलग पहचान दैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक साहित्यिक आलोचना विशेष उल्लेखनीय अछि। आलोचना हुनका लेल कोनो व्यक्तिगत प्रतिक्रिया नहि, बल्कि बौद्धिक अनुशासन अछि। ओ कृतिकें इतिहास, समाज आ भाषा—तीनू दृष्टि सँ परखैत छथि। हुनकर लेखनमे तथ्य, तर्क आ संदर्भक भरपूर उपयोग देखल जा सकैत अछि। एहि कारण हुनकर आलोचना संतुलित, प्रामाणिक आ विश्वसनीय प्रतीत होइत अछि।

ओ मैथिली साहित्यक प्रवृत्तिक विश्लेषण करैत ओकर दिशा-निर्देशन करैत छथि।

हुनकर उल्लेखनीय कृति "सहस्रबाढ़नि" सेहो साहित्यिक जगत मे विशेष ध्यान आकर्षित करैत अछि। एहि कृतिमे भाषा, विचार आ सांस्कृतिक चेतनाक गहराइ देखल जा सकैत अछि। ई रचना हुनकर मौलिक चिंतन आ रचनात्मक सामर्थ्यक प्रमाण अछि। ओ पारंपरिक विषयकें नव दृष्टि सँ देखैत छथि आ अपन अलग पहचान बनबैत छथि।

गजेन्द्र ठाकुर केवल मैथिली तक सीमित नहि छथि। ओ भाषिक आदान-प्रदानकें साहित्यिक समृद्धिक आधार मानैत छथि। ओ मैथिली सँ अंग्रेजीमे अनुवाद कऽ मैथिली साहित्यकें व्यापक पाठक वर्ग धरि पहुँचौनलनि अछि। संगहि ओ अन्य भारतीय भाषासँ सेहो मैथिलीमे अनुवाद कयलनि अछि। कन्नड़, तेलुगु, उड़िया आ गुजराती भाषाक कवि आ लेखक सभक रचनाक अंग्रेजी माध्यम सँ मैथिलीमे अनुवाद करब हुनकर बहुभाषिक दृष्टिक प्रमाण थिक। अशोक हेगड़े, एन. अरुणा, शेख मुहम्मद शरीफ, अन्नवरन देवेंदर, बासुदेव सुनानी, भरत माझी, बाबू सुथार, अजय सरवैया, राजेंद्र पटेल, हेमांग अश्विन कुमार देसाई आदि रचनाकार सभक कृति सभ मैथिली पाठक धरि पहुँचाएब हुनकर सेतु-निर्माणक प्रयास अछि। एहि अनुवाद-कार्य सँ मैथिली साहित्य भारतीय भाषाक व्यापक परिदृश्य सँ जुड़ल। पाठक सभ अन्य संस्कृतिक अनुभव सँ परिचित भेलाह, आ मैथिली साहित्यमे नयापन आयल।

विशेष उल्लेखनीय अछि हुनकर बाल आ किशोर साहित्य प्रति समर्पण। ओ बुझैत छथि जे भाषाक भविष्य बाल-पीढ़ी पर निर्भर रहैत अछि। जँ बच्चा अपन मातृभाषामे पढ़त-लिखत नहि, तँ भाषा

कमजोर पड़ि जाएत। एहि लेल ओ बाल साहित्य, सरल सामग्री आ रोचक पाठ उपलब्ध कराबय पर बल देलनि।
हुनकर भाषा-शैली संतुलित आ परिष्कृत अछि। ओ नहि त' अनावश्यक क्लिष्टता अपनबैत छथि, आ नहि त' अत्यधिक सरलता। हुनकर लेखनमे विद्वत्ता आ सहजता दुनू संग-संग चलैत अछि। तथ्यपरकता, तार्किकता आ सांस्कृतिक संवेदनशीलता हुनकर शैलीक प्रमुख गुण अछि। ओ भावुकता सँ अधिक विवेक पर बल दैत छथि।
समकालीन परिदृश्यमे जखन मैथिली भाषा अनेक चुनौतिसँ जूझि रहल अछि—शहरीकरण, पलायन, अंग्रेजी-हिंदीक वर्चस्व, नव पीढ़ीमे घटैत भाषिक लगाव—एहन समयमे गजेन्द्र ठाकुर जकाँ व्यक्तित्व आशा जगबैत अछि। हुनकर काज केवल साहित्य सृजन नहि, बल्कि भाषा-संरक्षणक आंदोलन अछि। ओ मैथिलीकें अतीत सँ जोड़ैत, वर्तमानमे सक्रिय रखैत आ भविष्य लेल सुरक्षित करैत छथि।
वस्तुतः गजेन्द्र ठाकुरक समूचा जीवन एकटा समर्पणक कथा अछि—मातृभाषा प्रति समर्पण, संस्कृति प्रति समर्पण आ ज्ञान-साधना प्रति समर्पण। हुनकर कार्य बतबैत अछि जे एक व्यक्ति सेहो दृढ़ संकल्प सँ भाषा-साहित्यक इतिहास बदलि सकैत अछि। ओ सृजन आ संगठन, शोध आ संपादन, परंपरा आ तकनीक—सभक सुंदर समन्वय प्रस्तुत करैत छथि।
हिनक उपलब्धि देखि ई सहजहि कहल जा सकैत अछि जे गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषा-साहित्यक नवजागरणक सेतु-पुरुष छथि। हुनकर योगदान बहुआयामी, स्थायी आ ऐतिहासिक महत्वक अछि। ओ केवल आजुक लेखक नहि, बल्कि आगिला पीढ़ी लेल प्रेरणा-

स्रोत छथि। मैथिली भाषा-संस्कृतिक जखन भविष्य लिखल जाएत, तखन गजेन्द्र ठाकुरक नाम सम्मानपूर्वक अग्रिम पंक्तिमे अंकित रहत। हुनकर कृतित्व एहि बातक प्रमाण अछि जे जँ समर्पण शुद्ध हो, तँ भाषा आ संस्कृतिकें नव जीवन देल जा सकैत अछि।

मिथिला-मैथिलीक मंच सँ गजेंद्र ठाकुरक अनुपस्थितिः कारण एवं प्रभाव

मुकेश आनंद

गजेंद्र ठाकुरक मैथिली भाषाक उत्थान आ संरक्षण हेतु कैल गेल काजक जानकारी हमरा 'प्रीति कारण सेतु बान्हल' नामक `पोथी, जे कि आशीष अनचिन्हार जीक द्वारा संपादित अछि, सँ भेटल। ई आलेख हम आशीष अनचिन्हारे जीक प्रेरणा सँ लिखल। हम लिखयमे बड़ आस्कती लोक छी। संगहि हमरा लिखयमे डर सेहो होइत अछि, कारण हम मैथिलीमे शिक्षा प्राप्त नहि केने छी आ मैथिली साहित्याकाशमे एक दोसर साहित्यकारक प्रति जे उदासीनता व्याप्त छै ओ हमरा भयाक्रांत करैत अछि। दिल्लीमे रहलाक कारण हमरा ईहो भान होइत रहेत अछि जे अहि ठाम साहित्यकारक मुख्य लक्ष्य, साहित्य अकादमी आ मैथिली-भोजपुरी अकादमी संग अन्य संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम सभमे, मंच पर पहुँचबाक रहैत अछि। एहि मनोभाव सँ हमहूँ अपनाकेँ विलग नहि बुझैत छी, हालाँकि हम एहिमे सफल नहि भऽ सकल छी। मैथिलीक साहित्य जगतमे जान-पहिचान आ आर्थिक सहयोग मंच पर सम्मान आ माइक हेतु गारंटी अछि। एहिठाम बहुत संस्था सभ एहनो छथि जे अपन कार्यक्रम सभमे सत्तरि सँ नब्बे प्रतिशत अपनहि संस्थाक सदस्य रहैत छथि। आ जान-पहिचानक

साहित्यकारकेँ महिमामंडन आ पुरस्कृत करैत छथि। एहिमे कोनो बहुत हर्ज नहि छैक, मुदा समस्या ई छै जे अहि सभमे कोनो गंभीर काज होइत नहि अभरैत अछि। एहि परिप्रेक्ष्य मे गजेंद्र ठाकुरक चर्चा करब हमरा समीचीन बुझाएल।

गजेंद्र ठाकुरक मैथिली भाषा हेतु योगदान बहुत रास छनि। आइ-काल्हि कोनो भाषाक महत्त्व बढ़ाबयमे इंटरनेटक बहुत पैघ भूमिका छै। अहि सँ पाठक लग भाषा दूर-दूर धरि पहुँचि जाइत अछि। भूतकाल मे जाहि तरहक पलायन मिथिला सँ भेल अछि ताहि स्थितिमेमे अपन जड़िसँ सटबाक, ओकरा जनबाक लेल इंटरनेट आ सोशल मीडियाक बहुत पैघ योगदान अछि। ई प्रवृति कोरोना कालमे बेसी देखाएल। सोशल मीडियामे एकर उपस्थिति सँ सरकारी आँकड़ा प्रभावित होइत अछि आ ताहि द्वारे सरकारमे बैसल लोक संग राजनीतिक व्यक्ति सभ सेहो। ताहि हेतु गजेंद्रजीक सभसँ बेसी पैघ योगदान यैह मानबाक चाही जे ओ मैथिलीकेँ बर्ख 2000 मे इंटरनेट पर आनि ओकरा स्थापित केलनि।

एकर अतिरिक्त गजेंद्रजीक अलग-अलग रूप छैन। गजेंद्र ठाकुर मैथिलीकेँ इंटरनेट पर आनए ओ स्थापित करए बला तऽ छथिए संगहि भाषाक विकास लेल सतत कार्यरत छथि। ठाकुर जी पञ्जी केँ सामान्य पाठक लेल सुलभ बनाबए बला छथि, तिरहुता संग कुल ॥ टा भाषामे पत्रिकके पाठक लग पहुँचाबए बला छथि, शब्दकोश केर निर्माता छथि, संपादक छथि, अनुसंधानकर्ता छथि आ साहित्यकार छथि। मुदा सभसँ बेसी उल्लेखनीय गप ई जे ओ चुपचाप काज करए बला छथि। हुनक ई व्यवहार मैथिली साहित्यमे व्याप्त मंच लोलुपता सँ एकदम उलट अछि। परंच एहू सँ बेसी आश्चर्यजनक अछि जे मैथिली साहित्यमे काज करय संस्था सभ

हुनक कैल आज आ कृति पर चर्च केनाइ आवश्यक नहि बुझैत छैक। यदि हम विदेह अथवा आशीष अनचिन्हारक संपर्कमे नहि अबितहुँ तऽ ई गप हमरो नहि बूझल होइत।

अनुपस्थितिक अनुमानित कारण

कोनो भाषाक सम्मानमे तखनहि वृद्धि होइत छैक जखनि ओहि भाषामे उच्च स्तरक कालजयी आ समसामयिक काज होइक। संगहि ओहि भाषाक बजनाहर लोक सभ अपन भाषाके योगदान करय बलाकेँ चिन्हथि, हुनक सम्मान करथि आ हुनक चर्च घर-घरमे हुअय। मैथिलीमे अहि भावनाक बहुत खगता अछि। आन ठामक तऽ विशेष हम नहि कहि सकैत छी, परंच दिल्ली एन.सी.आरमे गुटबाजी चरम पर अछि। एहि तरहक माहौलमे गजेंद्र ठाकुर सन मंच सँ दूर रहय वला लोकक चर्च होयब मुश्किल अछि। विडंबना ई जे गजेंद्र ठाकुर दिल्लीमे रहैत छथि आ हमहूँ मुदा अपना नजरिमे हुनका कोनो मंचपर नै देखलियनि। देखब तऽ छोड़ू हमरा ई धरि नै मोन पड़ैए जे कोनो सभा-गोष्ठीमे हुनक चर्चो केने हो, ई दुर्भाग्यपूर्ण अछि। एहि ठामक लोक मैथिली साहित्य पढ़य सँ बेसी मैथिलीमे लिखय लय धड़फड़ाएल रहैत छथि। पढ़ला सँ मात्र भाषा आ लेखनमे सुधारे टा नहि होइत अछि, संगहि मैथिमे शब्द विन्यास आ शब्दकोषक अभिवृद्धि होइत अछि। परंच एहू सभसँ बेसी पाठक ई बुझि पबैत अछि जे मैथिलीमे पहिले कतेक रास काज भऽ चुकल अछि। एहि सँ साहित्यकार दैन्य भाव सँ निकलि आत्मविश्वास संग नव सृजन दिस मजबूती सँ उन्मुख भऽ सकैत छथि। अपना सँ पहिने कयल काजक प्रति अनभिज्ञ रहलाक कारण बहुत साहित्यकारक रचनामे हिन्दीक शब्दक बहुलता रहैत छनि आ हुनक साहित्य बहुत हल्लुक आ रस विहीन भऽ जाइत छनि। हम

बहुत एहनो लोकक‍ैं जनैत छी जे अपन रचना एक शति पहिने वा मेट्रोक रस्तामे लिखैं छथि। हम व्यक्तिगत अनुभव सँ कहि सकैत छी जे दिल्लीक साहित्य क्षेत्रमे एहेन लोकक भरमार अछि। एहन गप नहि छै जे सभ एहने छथि मुदा बाहुल्यता हुनके सभहक छनि। मंच आ पुरस्कार, एहने लोक सभ लोक पबैत छथि। एहेन परिस्थितिमे कालजयी रचनाक बाट ताकब अनर्गल होयत।

अपना सँ पूर्वक कैल गेल साहित्यिक काजक अध्ययनक अभाव सँ एकट आर समस्या उत्पन्न भेल अछि। ओ अछि नीक समीक्षकक अभाव। मैथिलीमे बुझाइत अछि जेना खराब रचना होइते नहि अछि। औसत वा खराब रचनाके कहयमे समीक्षक घबड़ाइ छथि। ई भाव प्रबल रहैत अछि जे मैथिलीमे किछु तऽ भऽ रहल छै। परंच हमर विचार जे सार्वजनिक रूपेन नहि त' व्यक्तिगत रूपे सेहो ई बात कहबाक चाही। गप एतहि नहि रुकय, आगू भऽ कऽ की ठीक छै सेहो कहबाक चाही। गुरु-शिष्य परंपराक अभाव अछि। ओहू सँ पैघ समस्या अछि जे कियो साहित्यकार मानिते नहि अछि जे ओकर रचनामे सुधारक गुंजाइश छैक। मैथिलीक नव सक्रिय कार्यकर्ता सभ लेल मंच आ माला सभसँ महत्वपूर्ण अछि। बेसी तर प्रवासी मैथिल सब हेतु मंच आ पुरस्कार प्राथमिकता अछि। सक्रिय साहित्यकार सभ हेतु साहित्य अकादमी आ मैथिली-भोजपुरी सन सरकारी संस्था द्वारा भेटल आमंत्रण पत्र विद्वताक प्रमाण पत्र अछि। आ एहि सभहक चक्करमे कोनो ढंगक काज मैथिली मे नहि भ' पबैत छै। जखन कि गजेंद्र ठाकुर मंचसँ अलग भऽ कम्मे समयमे बहुत बेसी काज मैथिली लेल कऽ देलाह अछि। मैथिलीमे पुस्कार देबाक एकटा अजीबे तरीका छै। जँ अहाँ कतबो विद्वान एवं योग्य छी मुदा जँ कोनो संस्थाक मंचपर नहि एबै ता धरि ओ किनको

पुरस्कार लेल चयने नहि करैत छथि। भ' सकैए जे संस्था सभ अहू कारण सँ गजेंद्र ठाकुर वा कि पूरा विदेह टीम कैं सम्मान योग्य नहि बुझैत हो। एकर दोसर कारण ईहो भऽ सकैए जे गजेंद्र ठाकुर अपन सभ काज बिना मंचक करैत छथि। मुदा मैथिल मानस उत्सवधर्मी अछि, ओकरा काज नहि उत्सव चाही। आ उत्सवक पहिल शर्त छै लेन-देन। तँइ संस्थाक जे लेन-देन पद्धति छै ताहिमे गजेंद्र ठाकुर वा विदेहक काज छँटा गेल हएत, से हमरा लगैए। जखन कि हेबाक त' चाही जे संस्था सभ अपन घोषणा योग्य आ काज कर' बला लेल करथि चाहे ओ हुनकर मंचपर आबथि कि नहि आबथि। या अहाँक सम्मानक बदलामे विदेह कि गजेंद्र ठाकुर किछु आपस करथि कि नै करथि।

मैथिली भाषाक संरक्षण आ संवर्द्धन हेतु दूरगामी डेग उठाबय वला दृढ़ संकल्पित लोकक खगता अछि। एहिठाम ईहो कहब महत्वपूर्ण अछि जे गजेंद्र ठाकुर ई काज एसकर नहि केलनि। हुनक काज वा इच्छाकैं पूरा करबा लेल एहन दू व्यक्ति आगू एलखिन जिनक सहायता सँ पूरा मैथिली साहित्य केर इतिहास बदलि गेल। गजेंद्र ठाकुर नव-नव आइडिया आनैत रहलाह आ ई दूनू व्यक्ति आइडिया कोना पूरा होयत तेकर सरंजाममे लागल रहलाह। ओहिमे सँ एक छथि नागेन्द्र कुमार झा आ दोसर छथि पञ्जीकार विद्यानन्द झा। गजेंद्र ठाकुरक पत्नी श्रीमती प्रीति ठाकुर सेहो मैथिली हेतु काफी सक्रिय छथि। अहिमे आशीष अनचिन्हारक सेहो महत्वपूर्ण भूमिका छनि। जहाँ तक हमरा ज्ञात भेल अछि हुनका मंच आ माला सँ दूरी बनवय हेतु आ आन-आन आइडिया देबामे आशीष अनचिन्हारक सेहो महत्वपूर्ण योगदान छनि। संगहि पाठक लेल ईहो जानब उचित जे गजेंद्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा, पञ्जीकार

विद्यानन्द झा एवं आशीष अनचिन्हार ई चारू मंच सँ अनुपस्थित छथि। दोसर शब्दमे कही तं पूरा विदेहे टीम मंचसँ अनुपस्थित अछि। मैथिली साहित्यकार आ पाठक सभके गजेंद्र ठाकुरक संग अपन सभ पूर्वज साहित्यकार सबहक मैथिली साहित्यमे अवदान कें सतत अपन हृदयांगनमे रखबाक चाही, ओकर चर्च समाजक समाने मे करैत रहबाक चाही आ ई काज मैथिली हेतु नव बाट खोलबाक हेतु आवश्यक अछि। ओना हमर ई मानब अछि जे जँ गजेंद्र ठाकुर वा कि विदेहक टीम मंच सँ अनुपस्थित छथि तं हुनक काज करबाक स्पीड बढ़लै आ पूरा विदेहक ऊर्जा सार्थक काज लेल बचल रहि गेलै। एहन स्थितिमे यदि गजेंद्र ठाकुर मंच सँ अनुपस्थित छथि तं ई मैथिलीक लेल नव घटना आ सौभाग्य छै, कम सँ कम कियो वीर तऽ छथि मैथिली मे। एहि ठाम ईहो कहब बेजाए नहि जे जाहि कोनो कारण सँ गजेंद्र ठाकुर वा विदेह टीम मंच सँ अनुपस्थित भेला से अलग बात भेल मुदा समाजक की काज छै? यदि आजुक समाज काज करऽ बलाक चर्च नहि करत तऽ भविष्य मे एखनुक समाजक आकलन कोन तरहें हेतै?

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो
नमो व्रतेभ्यो व्रतपतिभ्यश्च वो नमो
नमो गृतसेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो
नमो नमो विरुपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च
वो नमः।

सहयोगी लेखक परिचय

हम भने 'अनचिन्हार' होइ मुदा एहि पोथीमे सहयोग देनिहार लेखक सभ पाठक लेल अनचिन्हार नहि छथि तँइ हुनक विशेष परिचय नहि देल गेल अछि। ई नाम सभ स्वयं अपनामे परिचय अछि।

1. मुन्नी कामत (युवा लेखिका)

2. इरा मल्लिक (युवा लेखिका)

3. कैलाश कुमार ठाकुर (युवा लेखक, नेपाल)

4. विकास वत्सनाभ (युवा लेखक)

5. भैरव लाल दास (महात्मा गाँधी विशेषज्ञ, गाँधी जीपर अनेक पोथी प्रकाशित, शोधकर्ता। संपर्क-9430606724)

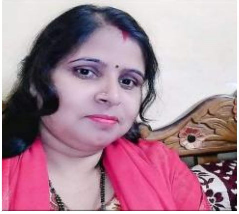

6. पूनम झा 'सुधा' (युवा लेखिका)

7. डा. शिव कुमार प्रसाद

(अनुवादक, समीक्षक एवं कवि)

8. कल्पना झा (उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' साहित्य अध्येता, आलोचक एवं कथाकार

9. मुन्ना जी (मैथिली बीहनि कथा केर अगुआ
एवं लेखक)

10. डॉ. धनाकर ठाकुर

(मिथिला राज्य आन्दोलनकारी एवं साहित्यकार)

11. हितनाथ झा (मैथिलीमे ग्रामगाथा विधाकेँ नव जीवन देनिहार, पाठकीय विधाक अगुआ)

12. प्रवीण कुमार झा (युवा लेखक)

13. कुन्दन कर्ण (युवा बीहनिकथाकार)

14. जगदानंद झा 'मनु' (युवा लेखक)

15. उज्ज्वल कुमार झा (युवा लेखक)

16. मुकेश आनंद (युवा लेखक)

संपादक परिचय

आशीष अनचिन्हार

मैथिली गजल एवं शेरो-शाइरीपर केंद्रित इंटरनेट पत्रिका (ब्लाग रूपमे) "अनचिन्हार आखर" केर संस्थापक ओ संपादक। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास एवं मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास सहित कुल 11 टा पोथीक लेखक आ 5 टा पोथीक संपादक। विशेष परिचय लेल https://mai.wikipedia.org/s/5i लिंकपर जा सकैत छी। ई-मेल ashish.anchinhar@gmail.com

मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो
मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्.
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो
अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम

समस्त पाठक लेल

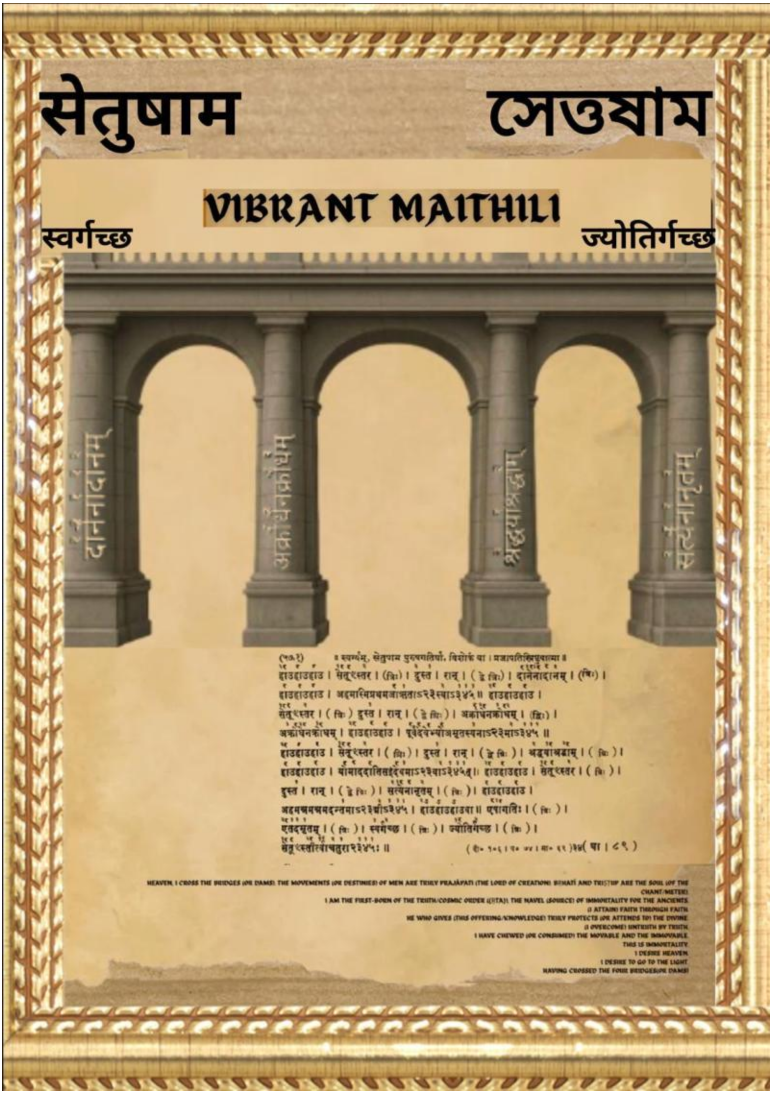
सेतुषाम
সেতুষাম
VIBRANT MAITHILI
स्वर्गच्छ
ज्योतिर्गच्छ
दानेनादानम्
अक्रोधेनक्रोधम्
श्रद्धयाश्रद्धाम्
सत्येनानृतम्
हाउहाउहाउ । सेतूंस्तर । (त्रिः) । दुस्त । रान् । (द्वे त्रिः) । दानेनादानम् । (त्रिः) ।
हाउहाउहाउ । अहमस्मिप्रथमजाऋताऽ२३स्याऽ३४५ ॥ हाउहाउहाउ ।
सेतूंस्तर । (त्रिः) दुस्त । रान् । (द्वे त्रिः) । अक्रोधेनक्रोधम् । (त्रिः) ।
अक्रोधेनक्रोधम् । हाउहाउहाउ । पूर्वंदेवेभ्योअमृतस्यनाऽ२३माऽ३४५ ॥
हाउहाउहाउ । सेतूंस्तर । (त्रिः) । दुस्त । रान् । (द्वे त्रिः) । श्रद्धयाश्रद्धाम् । (त्रिः) ।
हाउहाउहाउ । योमाददातिसइदेवमाऽ२३वाऽ३४५त् ॥ हाउहाउहाउ । सेतूंस्तर । (त्रिः) ।
दुस्त । रान् । (द्वे त्रिः) । सत्येनानृतम् । (त्रिः) । हाउहाउहाउ ।
अहमन्नमन्नमदन्तमाऽ२३ग्नीऽ३४५ । हाउहाउहाउवा ॥ एषागतिः । (त्रिः) ।
एतदमृतम् । (त्रिः) । स्वर्गच्छ । (त्रिः) । ज्योतिर्गच्छ । (त्रिः) ।
सेतूंस्तीर्त्वाचतुराऽ२३४५ः ॥
HEAVEN, I CROSS THE BRIDGES (OR DAMS) THE MOVEMENTS (OR DESTINIES) OF MEN ARE TRULY PRAJĀPATI (THE LORD OF CREATION) BṚHATĪ AND TRIṢṬUP ARE THE SOUL (OF THE CHANT/METER)
I AM THE FIRST-BORN OF THE TRUTH/COSMIC ORDER (ṚTA), THE NAVEL (SOURCE) OF IMMORTALITY FOR THE ANCIENTS
(I ATTAIN) FAITH THROUGH FAITH
HE WHO GIVES (THIS OFFERING/KNOWLEDGE) TRULY PROTECTS (OR ATTENDS TO) THE DIVINE
(I OVERCOME) UNTRUTH BY TRUTH
I HAVE CHEWED (OR CONSUMED) THE MOVABLE AND THE IMMOVABLE
THIS IS IMMORTALITY
I DESIRE HEAVEN
I DESIRE TO GO TO THE LIGHT
HAVING CROSSED THE FOUR BRIDGES(OR DAMS)

सेतुषाम সেতুষাম

VIBRANT MAITHILI

स्वर्गच्छ ज्योतिर्गच्छ

दानेनादानम्

अक्रोधेनक्रोधम्

सत्येनानृतम्

श्रद्धयाश्रद्धाम्

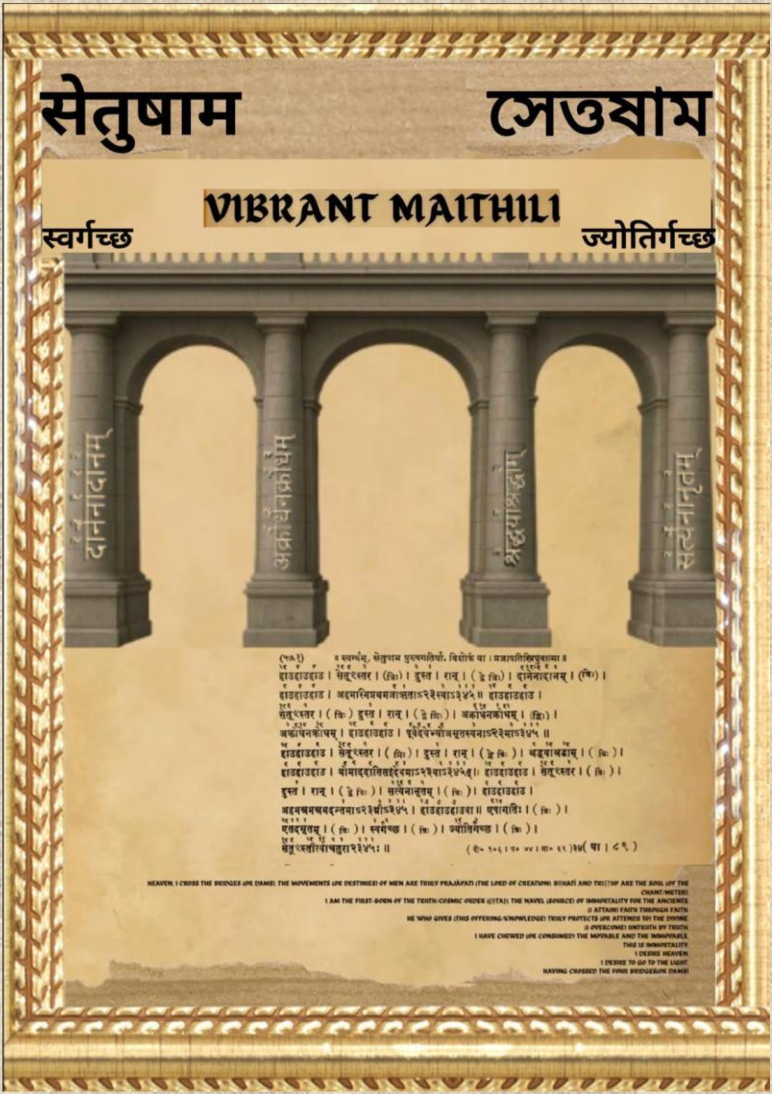
सेतुषाम
সেতুষাম
VIBRANT MAITHILI
स्वर्गच्छ
ज्योतिर्गच्छ
दानेनादानम्
अक्रोधेनक्रोधम्
श्रद्धयाश्रद्धाम्
सत्येनानृतम्
HEAVEN, I CROSS THE BRIDGES (OR DAMS). THE MOVEMENTS (OR DESTINIES) OF MEN ARE TRULY PRAJĀPATI (THE LORD OF CREATION). BṚHATĪ AND TRIṢṬUP ARE THE SOUL (OF THE CHANT/METER)
I AM THE FIRST-BORN OF THE TRUTH/COSMIC ORDER ((ṚTA)), THE NAVEL (SOURCE) OF IMMORTALITY FOR THE ANCIENTS
(I ATTAIN) FAITH THROUGH FAITH
HE WHO GIVES (THIS OFFERING/KNOWLEDGE) TRULY PROTECTS (OR ATTENDS TO) THE DIVINE
(I OVERCOME) UNTRUTH BY TRUTH
I HAVE CHEWED (OR CONSUMED) THE MOVABLE AND THE IMMOVABLE
THIS IS IMMORTALITY
I DESIRE HEAVEN
I DESIRE TO GO TO THE LIGHT
HAVING CROSSED THE FOUR BRIDGES(OR DAMS)